

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्॥ ऋ० १/८६/२



Impact Factor  
7.523



ISSN : 2395-7115  
October 2023  
Vol.-18, Issue-4(3)

# Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY  
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

विशेषांक सम्पादक :

डॉ. सीमा जैन

विशेषांक सह-सम्पादक :

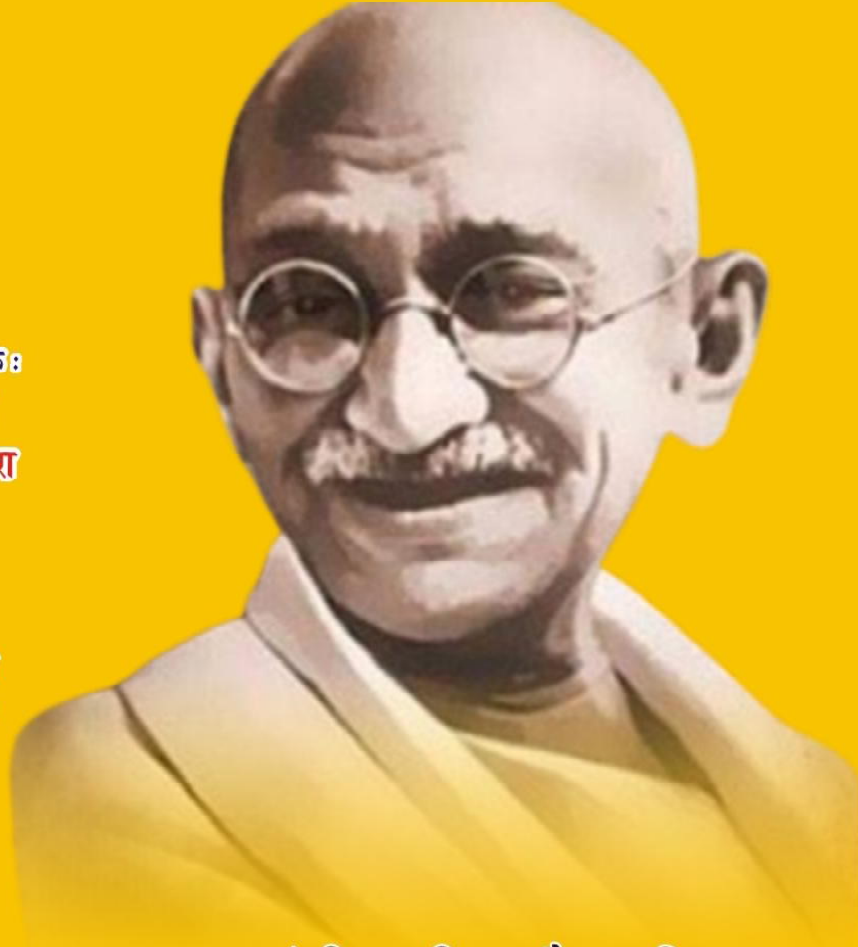
डॉ. कप्तान चंद

डॉ. सतपाल मेहरा

सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग

एडवोकेट



गांधी अतीत और भविष्य

Publisher :

**Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)**

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

# बोहल शोध मञ्जूषा

## Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED  
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. 18

ISSUE-4(3)

(अक्टूबर 2023)

ISSN : 2395-7115

प्रेरणा :

चौ. एम. सिहाग

विशेषांक सम्पादक :

डॉ. सीमा जैन

सम्पादक मण्डल :

डॉ. राजेन्द्र चौधरी, डॉ. सुशील कुमार दैया, डॉ. भारती सांखला,  
डॉ. दुर्गा चौधरी, डॉ. राजेश कुमार कस्वां, श्री राहुल यादव

सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल', एडवोकेट

एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता),

एम.फिल (समाजशास्त्र, हिन्दी) एम. लिब., एल-एल.बी. (ऑनर्स),

डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता), पी.एच.डी. (हिन्दी)

डी.लिट् (मानद उपाधि), काठमांडू, नेपाल

विभागाध्यक्ष हिन्दी एवं शोध निर्देशक

टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर-335001 (राज.)

प्रकाशक :

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वेलफेयर सोसायटी (रजि.)

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)



# Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL REFEREED/REVIEWED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY  
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

ISSN 2395-7115

सम्पादकीय सम्पर्क :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,

भिवानी-127021 (हरियाणा)

Email : nksihag202@gmail.com

मो. 09466532152

*Published by :*

Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

202, Old Housing Board,

Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA

Email : grsbohal@gmail.com

Facebook.com/bohalshodhmanjusha

Website : www.bohalsm.blogspot.com

WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1100/-

- Disclaimer :*
1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
  2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
  3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
  4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdiction only.

*Printed by :* Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

# बोहल शोध मंजूषा परिवार\*

## मानद संरक्षक

प्रो. राधेमोहन राय  
पूर्व उप प्राचार्य,  
राजकीय स्नातकोत्तर महा.,  
अलवर, राजस्थान।

डॉ. राजेन्द्र गोदारा  
परीक्षा नियंत्रक,  
टांटिया विश्वविद्यालय,  
श्रीगंगानगर, राजस्थान।

डॉ. विनोद तनेजा  
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग  
गुरुनानक वि.वि. अमृतसर  
पंजाब।

## सम्पादक मण्डल

सह सम्पादिका :  
डॉ. रेखा सोनी  
उप प्राचार्या, शिक्षा विभाग  
टांटिया वि.वि. श्रीगंगानगर।

सह सम्पादिका :  
डॉ. सुशीला आर्या  
हिन्दी विभाग, चौ. बंसीलाल  
विश्वविद्यालय, भिवानी।

प्रबंध सम्पादक :  
समुन्द्र सिंह  
भिवानी, हरियाणा।

## विधि विशेषज्ञ

डॉ. रामफल दलाल, एडवोकेट  
जिला न्यायालय  
भिवानी, हरियाणा।

अजीत सिहाग, एडवोकेट  
पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट,  
चंडीगढ़।

चरणवीर सिंह, एडवोकेट  
जिला न्यायालय  
पटियाला, पंजाब।

## विषय विशेषज्ञ/परामर्शदात्री/शोधपत्र निरीक्षण समिति

माई मनीषा महंत  
किन्नर अधिकार ट्रस्ट  
भूना, जिला कैथल, हरियाणा

डॉ. विश्वबंधु शर्मा  
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग  
बाबा मस्तनाथ वि.वि. रोहतक

डॉ. संजय एल. मादार  
विभागाध्यक्ष, पी.जी. केन्द्र  
द.भा.हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद।

डॉ. गीता दहिया, प्राचार्या,  
नैशनल टीटी कॉलेज फॉर गर्ल्स  
अलवर, राजस्थान

डॉ. विनोद कुमार  
हिन्दी विभाग, लवली प्रोफेशनल  
यूनिवर्सिटी, पंजाब

डॉ. मो. रियाज़ खान  
बीएमएस वूमैन कॉलेज आटोनोमेस  
बेगलूरु

डॉ. वनिता कुमारी  
च. दादरी (हरियाणा)

श्री सहदेव समर्पित  
सम्पादक, शान्तिधर्मी, जीन्द

डॉ. अंजली उपाध्याय  
उत्तर प्रदेश

डॉ. लता एस. पाटिल  
राजीव गांधी बीएड कालेज  
धारवाड़, कर्नाटक

प्रो. अमनप्रीत कौर  
गुरु तेग बहादुर खालसा कॉलेज  
फॉर वूमैन, दसूहा, पंजाब

डॉ. वर्षा रानी  
संस्कृत विभाग, डॉ. भीमराम  
अम्बेडकर, वि.वि., आगरा

प्रो. कमलेश चौधरी  
राजकीय रणबीर महाविद्यालय  
संगरूर, पंजाब

डॉ. परमजीत कौर  
बरेली कॉलेज बरेली,  
उत्तर प्रदेश।

डॉ. बी. संतोषी कुमारी  
पी.जी.विभाग, दक्षिण भारत हिन्दी  
प्रचार सभा, मद्रास

डॉ. पायल लिल्हारे  
अमरशहीद चंद्रशेखर आजाद  
शा.स्ना.महा. निवाड़ी, मध्यप्रदेश

डॉ. मनमीत कौर  
राधा गोविन्द वि.वि.,  
रामगढ़, झारखण्ड।

डॉ. शबाना हबीब  
त्रिवन्तपुरम, केरल

डॉ. मानसिंह दहिया  
हरियाणा

प्रो. नरेन्द्र सोनी  
डी.एन. कॉलेज, हिसार।

डॉ. इस्पाक अली  
प्राचार्य, लाल बहादुर शास्त्री  
शिक्षा महाविद्यालय, बेंगलूरु

डॉ. संजीव कुमार विश्वकर्मा  
शासकीय महाविद्यालय,  
लवकुश नगर, मध्य प्रदेश

डॉ. किरण गिल  
दीनदयाल टी.टी. महाविद्यालय  
बारी, जिला सीकर, राज.

डॉ. राजकुमारी शर्मा  
नेपाल

श्री राकेश ग्रेवाल  
सन जॉस,  
कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.

श्री राकेश शंकर भारती  
यूक्रेन।

डॉ. रीना उन्नीयाल तिवारी  
शिक्षा संकाय, डी.ए.वी. पीजी  
कालेज, देहरादून

डॉ. शिवकरण निमल  
राजस्थान

डॉ. नीलम आर्या  
उत्तर प्रदेश

प्रो. रोहतास  
डी.एन. कॉलेज, हिसार।

प्रो. रेखा रानी  
गवर्नमेंट कॉलेज  
संगरूर, पंजाब

डॉ. परमानन्द त्रिपाठी  
एचओडी एजुकेशन, एल.एन.डी.  
कालेज, मोतिहारी, बिहार

डॉ. सविता घुड़केवार  
पीजी विभाग, दक्षिण भारत  
हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

डॉ. श्रीविद्या एन.टी.  
श्री शंकराचार्य संस्कृत वि.वि.  
केरल।

डॉ. पंडित बन्ने  
भारत महाविद्यालय,  
सोलापुर (महाराष्ट्र)

डॉ. उमा सैनी  
आई.ए.एस.ई. विश्वविद्यालय  
सरदारशहर, राजस्थान

डॉ. सुरजीत सिंह कस्वां  
डीन फिजिकल एजुकेशन  
टांटिया वि.वि., श्रीगंगानगर,

डॉ. राधाकृष्णन गणेशन  
वाराणसी

डॉ. रवि सुण्डयाल  
जम्मू कश्मीर

प्रो. सत्यबीर कालोहिया  
पूर्व प्राचार्य, कैलिफोर्निया।

डॉ. के.के. मल्हौत्रा  
पूर्व विभागाध्यक्ष  
गवर्नमेंट कॉलेज, गुरदासपुर

डॉ. करमजीत कौर  
प्राचार्या, दशमेश गर्ल्स कॉलेज  
चक आला, मुकेरिया, पंजाब

\*सम्पूर्ण बोहल शोध मञ्जूषा परिवार/सम्पादक मण्डल अवैतनिक है।

## शोध-पत्र प्रकाशन के लिए निर्देश मंजूषा

गुगनराम सोसायटी (पंजीकृत) द्वारा शोधार्थियों व अध्येताओं के शोध/अनुसंधान की गतिविधियों को प्रोत्साहित करने हेतु बोहल शोध मंजूषा ISSN 2395-7115 नामक बहुभाषिक अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। कला, संस्कृति, विज्ञान, वाणिज्य, मानविकी, प्रबंध, प्रौद्योगिकी, विधि, भूगोल, शिक्षा, पत्रकारिता पर केन्द्रीत इस शोध पत्रिका को विषय विशेषज्ञों तथा मनीषी विद्वानों की सक्रिय सहभागिता प्राप्त है। पत्रिका का वार्षिक शुल्क 1100 रु. है।

आप अपना शोध पत्र कम्प्यूटर से मुद्रित फोन्ट साईज 14, कृतिदेव-10, कृतिदेव-21 में व अंग्रेजी के Arial, Times New Roman में पेज मेकर या माइक्रोसोफ्ट वर्ल्ड में हमारी Email ID : grsbohal@gmail.com पर भेजें। शोध पत्र प्रेषित करने से पूर्व दिये गये सन्दर्भ, मात्रा आदि की पूर्णतया जाँच कर लें।

**नोट :-** उर्दू, पंजाबी आदि भाषा के शोध पत्र पेपर साईज 7x9.5 पर टाईप कराकर JPG या PDF फाईल हमारी ईमेल आई.डी. पर भेज सकते हैं।

हमारी पत्रिका में शोध पत्र लेखक के फोटो सहित प्रकाशित किये जाते हैं। इसलिए आप अपने शोध पत्र के साथ पासपोर्ट साईज फोटोग्राफ, सम्पर्क सूत्र : टेलीफोन, मोबाईल नं., ई-मेल तथा पिनकोड सहित पत्र व्यवहार का पूरा पता (हिन्दी व अंग्रेजी) कम्प्यूटर द्वारा टाईप करवाकर भेजें।

★ शोध पत्र 2000-2500 शब्दों (4-6 पेज) से अधिक नहीं होनी चाहिए, यदि शब्द सीमा अधिक होती है तो सम्पादक को अधिकार होगा यथा स्थान संक्षिप्तीकरण कर दें। अस्वीकृत शोध पत्र की वापसी संभव नहीं है।

★ पत्रिका में प्रकाशित श्रेष्ठ शोध पत्र को हमारी सोसायटी/पत्रिका की ओर से बहुउपयोगी श्रीमती गिना देवी शोधश्री सम्मान प्रदान किया जायेगा।

★ शोध पत्र में व्यक्त विचार लेखकों के स्वयं के विचार हैं। उनसे सम्पादक, प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है। शोध पत्र में प्रयुक्त किए गए तथ्यों के प्रति संबंधित लेखक उत्तरदायी होगा। पत्रिका में शोध आलेख प्रकाशन के लिए भेजने से पहले सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करना लेखक का दायित्व है। प्रत्येक विवाद का न्यायक्षेत्र भिवानी (हरियाणा) होगा।

★ सम्पादकीय पद अव्यावसायिक और अवैतनिक हैं। पत्रिका में केवल शोध पत्र ही प्रकाशनार्थ भेजें। शोध पत्र का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय व प्रकाशित समस्त शोध पत्रों का सर्वाधिकार समिति/सम्पादक के पास सुरक्षित होगा।

**नोट :**

सहयोग/सदस्यता राशि 1100/- रु. का ड्राफ्ट/चैक/आई.पी.ओ. 'गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी' के नाम भेजें तथा ऑनलाईन बैंक में सहयोग जमा राशि की रसीद की फोटोप्रति अपने आलेख के साथ हमें मेल कर सूचित करने का कष्ट करें ताकि समय पर रसीद भेजी जा सके। ऑनलाईन सहयोग राशि के साथ 50/- रु. अतिरिक्त अवश्य जमा करवायें। प्रकाशन सहयोग शुल्क वापिस देय नहीं।

बैंक का नाम	:	पंजाब नैशनल बैंक, हालु बाजार, भिवानी (हरियाणा)
खाता धारक का नाम	:	गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी
बैंक खाता संख्या	:	1182000109078119
IFSC Code	:	PUNB0118200
MICR CODE	:	127024003



देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्॥ ऋ० १/८६/२

ISSN : 2395-7115



# बोहल शोध मञ्जूषा Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED  
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Publisher : Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

[ भाग III-खण्ड 4 ]

भारत का राजपत्र : असाधारण

105

**Table 2**

**Methodology for University and College Teachers for calculating Academic/Research Score**

(Assessment must be based on evidence produced by the teacher such as: copy of publications, project sanction letter, utilization and completion certificates issued by the University and acknowledgements for patent filing and approval letters, students' Ph.D. award letter, etc.,)

S.N.	Academic/Research Activity	Faculty of Sciences /Engineering / Agriculture / Medical /Veterinary Sciences	Faculty of Languages / Humanities / Arts / Social Sciences / Library /Education / Physical Education / Commerce / Management & other related disciplines
1.	Research Papers in Peer-Reviewed or UGC listed Journals	08 per paper	10 per paper
2.	Publications (other than Research papers)		
	(a) Books authored which are published by ;		
	International publishers	12	12
	National Publishers	10	10
	Chapter in Edited Book	05	05
	Editor of Book by International Publisher	10	10
	Editor of Book by National Publisher	08	08
	(b) Translation works in Indian and Foreign Languages by qualified faculties		
	Chapter or Research paper	03	03
	Book	08	08
3.	Creation of ICT mediated Teaching Learning pedagogy and content and development of new and innovative courses and curricula		
	(a) Development of Innovative pedagogy	05	05
	(b) Design of new curricula and courses	02 per curricula/course	02 per curricula/course

📍 202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

🌐 [www.bohalsm.blogspot.com](http://www.bohalsm.blogspot.com)

✉ [grsbohal@gmail.com](mailto:grsbohal@gmail.com)

☎ 8708822674

📞 9466532152

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	डॉ. सीमा जैन	08-08
2.	गांधी और जन-प्रतिरोध :- सयुक्त किसान मोर्चा आंदोलन में राह दिखाते गांधी	पवन बैनीवाल	11-15
3.	मानवाधिकार और पर्यावरण के बीच अंतरसंबंध	डॉ. मल्लिका परवीन, रेखा आचार्य	16-30
4.	गांधीवादी सिद्धांतों के अनुसार पर्यावरण-अनुकूल कृषि	कविता	31-35
5.	गांधी एक विचार	डॉ. कप्तान चन्द	36-41
6.	गांधी जी की बुनियादी शिक्षा की वर्तमान में प्रासंगिकता	डॉ. राजेश कुमार रांकावत	42-44
7.	वर्तमान में महात्मा गांधी के आर्थिक विचारों की भारतीय अर्थव्यवस्था में प्रासंगिकता (ग्राम स्वराज के विशेष संदर्भ में)	डॉ. सुनील पूनिया	45-49
8.	ग्रामीण विकास में महात्मा गाँधी जी के विचारों की महत्ती भूमिका	डॉ. महबूब खान मुगल	50-54
9.	मानवाधिकार के प्रति गांधी का दृष्टिकोण : एक गहन अध्ययन	मोहन लाल दायमा	55-59
10.	गाँधीवादी दर्शन का मूल आधार : धर्म (सत्य और अहिंसा) अथवा राजनीति का आध्यात्मिकरण की सार्थकता	फरसा राम चौधरी	60-64
11.	मलिनता एवं गरीबी पर गांधी जी के विचार	डॉ. राजेश कुमार कस्वां	65-68
12.	गांधी जी की धार्मिक एवं सामाजिक विचारधारा	डॉ. वन्दना तिवारी	69-72
13.	गाँधी दर्शन की उपयोगिता- कल और आज	गायत्री व्यास	73-76
14.	Hind Swaraj : Changes and Challenges of Gandhi's India Then and Now	Rakshetsa	77-81
15.	महात्मा गांधी और भीमराव अम्बेडकर की समसामयिक परिदृश्य में समाज सुधारक के रूप में प्रासंगिकता	डॉ. दुर्गा चौधरी	82-86
16.	Mahatma Gandhi and the Rashtriya Swayamsevak Sangh (RSS) : A Study of their Ideological Differences and Interactions	Alpana Sharma, Prof. Dr. Babitajain	87-93

17. SIGNIFICANT ASPECTS OF THE GREAT MAHATAMA AND RELEVANCY OF HIS IDEOLOGIES IN THE MODERN WORLD	Minakashi Kumawat	94-98
18. Satyagraha and Gandhiji	Dr. Bharti Sankhla	99-102
19. Role and Vision of Mahatma Gandhi in the Development of Higher Education	Dr. Sushil Kumar Daiya	103-109
20. A study on revolutionary management of Mahatma Gandhi	Mrs. Radhika Sharma	110-114
21. Research Paper on Mahatma Gandhi and Basic Education	Dr. Sarika Ranga	115-119
22. गांधी : शिक्षा दर्शन व बुनियादी शिक्षा	डॉ. मुकेश हर्ष	120-124
23. महात्मा गांधी के राजनीतिक विचारों का आध्यात्मिकरण	पिंकी भाटी	125-128
24. Gandhi's Views on Caste and Social Equality : A Complex Legacy	Pawan Kumar Rankawat	129-134

## विशेषांक सम्पादक की कलम से.....



महात्मा गांधी आज पूरी दुनिया सामने एक विचार के रूप में जिंदा है जिनका पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी है जिन्हें राष्ट्रपिता के दर्जे के साथ ही बापू नाम से भी पुकारा जाता है जिसका बड़ा कारण यह भी है कि बापू ने भारतीय सभ्यता और श्रेष्ठता को संपूर्णता के रूप में पेश किया। इसी कारण से महात्मा गांधी के विचारों ने दुनिया भर के लोगों को न सिर्फ प्रेरित किया बल्कि शांति, करुणा, दया आदि के दृष्टिकोण से भारत व दुनिया को बदलने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका मानना था कि पश्चिमी सभ्यता जहां भोग विलास और शारीरिक सुख को ही अंतिम उद्देश्य मानकर चलती है वहीं भारतीय सभ्यता आध्यात्मिक उन्नयन की बात करती है गांधी कहते थे कि सुख की आकांक्षा का विस्तार अनंत है तथा इसके मूल में 'नाश' छिपा है। अतः मानवता के सहज विकास के लिए आवश्यक है कि मनुष्य इस छलावे वाली प्रगति से उभरकर स्वाभाविक विकास को अपनाए लेकिन वर्तमान समय में झूठ, फरेब, छलावा बढ़ता ही जा रहा है लगभग हर व्यक्ति अपने चेहरे पर एक से अधिक मुखौटे लगाए हुए हैं। फिर चाहे वह 'सामान्य इंसान हो या फिर देश का प्रधान' हो झूठ के सहारे छोटी-छोटी बातों पर सांप्रदायिक दंगे एवम हत्याएं की जा रही है।

आज नफरत की राजनीति के दौर में महात्मा गांधी की मूर्ति की पूजा तो की जा रही है लेकिन महात्मा गांधी के विचारों की हत्या भी हर रोज की जाती है। सादगी, अहिंसा और सत्याग्रह जैसे विचारों को दरकिनार करते हुए सत्ताशाही तंत्र द्वारा पूंजीवाद, मनुवाद और संप्रदायवाद को बढ़ावा दिया जा रहा है। जिसका सीधा उदाहरण हम देख सकते हैं कि महात्मा गांधी देश में आम जन के पास कपड़े की कमी के कारण खुद आधा तन ढकते थे और ज्यादा से ज्यादा खुद चरखा चलाकर खादी के उत्पादन को बढ़ावा देते थे ताकि आम जनता अपने शरीर को ढक सके। वहीं आज हम अगर इसी देश के प्रधान सेवा की बात करें तो उनके एक सूट की कीमत कम से कम 10 लाख रुपए के साथ ही महंगे मेकअप आर्टिस्ट, महंगी सुरक्षा व्यवस्था, करोड़ों रुपए के निजी विमान देश में एक तरफ तो पूंजीपतियों की संख्या में भयंकर इजाफा हो रहा है तो वहीं दूसरी और भुखमरी में भी हमारा देश विश्व के उच्चतम शिखर पर पहुंच रहा है।

हमारे देश का इतिहास सादगी, सरलता, सत्यता और अहिंसा तथा कुर्बानियों का इतिहास रहा है लेकिन आज पूंजीवादी व्यवस्था ने आम जन की कमर तोड़ दी है। ऐसे दौर में यह पत्रिका केवल मात्र एक छोटा सा प्रयास है कि आज लोगों को गांधी जी के विचारों के करीब लाया जाए। गांधी जी के सत्य, अहिंसा के विचारों के कारण है देश का ऐतिहासिक किसान आंदोलन बिना किसी हिंसा के सफल हुआ।

- डॉ. सीमा जैन



# गांधी और जन-प्रतिरोध :- सयुक्त किसान मोर्चा आंदोलन में राह दिखाते गांधी

पवन बैनीवाल

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर।

## परिचय :-

18-19वीं सदी विश्व में शासन और जनता के अधिकारों, शासन और जनता में संवाद, सहयोग के तौर-तरीके निर्धारण के सवालों से उलझती रही थी। भांप इंजन, आवागमन के साधन, घातक हथियारों के आविष्कार से युरोप और अन्य देश एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका के देशों को गुलाम बनाकर शोषण कर रहे थे। ऐसे में गुलाम देशों में आजादी, आत्म निर्णय का सवाल उठा तो स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंसक और अहिंसक आंदोलनों को पैदा किया। इसी समय में पोरबंदर (गुजरात) में जन्मा व्यक्ति मोहनदास कर्मचंद गांधी वकालत के लिए दक्षिणी अफ्रीका पहुंचता था। रेलवे का उच्च दर्जे का टिकट होने के बाद भी रंगभेद के चलते, उच्च दर्जे वाले में नहीं चढ़ने दिया जाता है। इस घटना से आहत होकर आंदोलनकारी बन जाता है। आगे चलकर अफ्रीका में रंगभेद के शिकार भारतीय को एकजुट कर, आत्मसम्मान का आंदोलन छेड़ देता हैं। गांधी की चर्चा दक्षिणी अफ्रीका से भारत भी पहुंचती है तो कुछ समय बाद भारत आकर सक्रिय आंदोलनकारी बनते हैं। एक वर्ष भारत भ्रमण कर, चंपारण, खेड़ा में किसानों, अहमदाबाद में मजदूरों के आंदोलन से अर्जित अनुभव से अपना प्रतिरोध का दर्शन अपनाते हैं। गांधी कांग्रेस में शामिल होकर, कांग्रेस को सालाना जलसे और कुछ लोगों के संगठन से लोगों का संगठन बना देते हैं। कांग्रेस के सदस्यों के लिए शर्तें तय करते हैं तो गांधी के समानांतर अन्य आंदोलन जैसे क्रांतिकारी, धार्मिक गोलबंदी, किसान आंदोलन, आदिवासी आंदोलन, दलित आंदोलन, सामाजिक आंदोलन भी चलते रहे हैं। देश के स्वतंत्रता आंदोलन का धीरे-धीरे गांधी प्रमुख चेहरा बनकर, आम जनता और अंग्रेजी शासन में चर्चा का प्रमुख केंद्र बन गये। आजादी के आंदोलन ने स्वतंत्र भारत के भविष्य की नींव तय कर दी थी। 30 जनवरी 1948 को गोली मारकर गांधी को शरीर से खत्म देने वाले गोड़से और गोड़सेवादी संगठनों को भी एहसास नहीं रहा होगा कि जब भी कोई व्यक्ति शासन के खिलाफ लड़ रहा होगा तो वहां गांधी मिलेगे।

## स्वतंत्र भारत में गांधी :-

भारत के संविधान में गांधीवादी मूल्य शामिल किये तो स्वतंत्र भारत की प्रत्येक सरकार ने गांधी का भारत बनाने का दावा किया। दूसरी तरफ भारत में सरकार की नीतियों के खिलाफ सड़क पर उतरने वाले व्यक्तियों, संगठनों ने भी गांधी का हवाला देकर सरकारों को ललकारा है। 1990 के बाद नव उदारवादी नीतियों ने न केवल

शासन की नीतियों को बल्कि राजनीति में भी नैतिकता को कमजोर किया है। विकास बनाम लोकतंत्र की बहस के बीच सरकारें शासन से असहमत लोगों की आवाज सुनने की बजाय राजकीय तंत्र से दमन और उनका हित समझाने लगी है। ऐसे में अनेक बार सरकार और आंदोलनकारियों में टकराव के हालात पैदा होते हैं। पिछले 30 वर्षों में पहली बार 2014 में, पुनः 2019 में भाजपा-एनडीए सरकार स्पष्ट बहुमत के साथ सत्ता में आई। देश में कोरोनाकाल के पहले नागरीकता संशोधन कानून के बड़ा आंदोलन चल रहा था, लेकिन कोरोनाकाल में बिना किसी परिणाम के खत्म हो गया। यह कानून आज तक लागू नहीं हो पाया है, यह आंदोलन का प्रभाव है। कोरोनाकाल में 5 जून 2020 को केंद्र सरकार ने तीन कृषि अध्यादेशों को मंजूरी दी, जो भारत की बहुमत आबादी से जुड़े हुए थे।

### **सयुक्त किसान मोर्चा का आंदोलन का उदय :-**

किसान संगठनों ने अध्यादेशों का विरोध करते हुए, सरकार की नीयत पर सवाल उठाये तो सरकार ने किसानों के लिए क्रांतिकारी बदलाव बताया। छोटे-छोटे स्तर आंदोलन कर सरकार को अपनी आपत्ति और मांगपत्र बताया। किसानों का असंतोष बढ़ने के साथ ही सरकार ने संवाद की बजाय 17 सितंबर 2020 को लोकसभा, 20 सितंबर 2020 को राज्यसभा से तीनों कृषि अध्यादेशों :- (1) कृषक उपज व्यापार एवं वाणिज्य (संवर्धन एवं सुविधा) अधिनियम 2020 (2) कृषि (सशक्तिकरण और संरक्षण) कीमत आश्वासन और कृषि अधिनियम 2020 (3) आवश्यक वस्तु संशोधन अधिनियम 2020 पास कर संसद ने अंतिम मंजूरी के लिए, राष्ट्रपति को भेज दिये गये। किसान संगठनों व विपक्षी दलों ने अपनी राष्ट्रपति को दर्ज करवाई किंतु राष्ट्रपति ने 27 सितंबर 2020 को हस्ताक्षर कर मंजूरी दे दी।

गजट नोटिफिकेट के साथ ही तीनों कृषि अधिनियम भारत में लागू हो गये। देशभर के 500 किसान संगठनों के प्रतिनिधियों ने केंद्र सरकार से दो दौर की वार्ता विफल रहने पर, 5 नवंबर 2020 को दिल्ली में बैठक कर सयुक्त किसान मोर्चा का गठन किया तथा सरकार को अपना मांगपत्र भेजकर मांग न मानने पर 25-26 नवंबर 2020 को दिल्ली कुच का ऐलान किया। 26 नवंबर 2020 को पंजाब-हरियाणा के किसान अनेक प्रकार के राजकीय दमनकारी कारवाई से टकराते हुए, दिल्ली पहुंच गये। आजाद भारत में सबसे लंबा 380 दिन किसान आंदोलन चला जिसमें 726 किसान मौत के शिकार हुए। 11 दिसंबर 2020 को तीन कृषि कानून रद्द होने व अन्य मांगों पर सरकार से सहमति बनने पर समाप्त हुआ।

### **सयुक्त किसान मोर्चा के आंदोलन में गांधी :-**

गांधी ने भारत में गांवों का महत्व समझ कर कहा था कि भारत गांवों में बसता है। गांधी ने कृषि आधारित लघु एवं कुटीर उद्योगों की वकालत करते हुए स्वतंत्र भारत के बारे में कहा था कि- “मुझे इसमें संदेह नहीं है कि लोकतांत्रिक स्वराज्य में किसानों के पास राजनीतिक सत्ता के साथ हर किस्म की सत्ता होनी चाहिए। किसानों को उनकी योग्य स्थिति मिलनी ही चाहिए और देश में उनकी आवाज ही सबसे ऊपर होनी चाहिए।”

किसान गांधी जी की तरह शस्त्रविहीन और सरकार के पास अंग्रेजों की तरह तमाम साधन थे। गांधी के समय अंग्रेजों का शासन, सयुक्त किसान मोर्चा आंदोलन के समय अपने नागरिकों की निर्वाचित सरकार थी। अंग्रेजों की सरकार गैर संवैधानिक शक्तियों का जबकि केंद्र सरकार भारत के संविधान से मिली शक्तियों का प्रयोग कर रही थी। अंग्रेजों ने भारतीयों सभ्य बनाने का जबकि, केंद्र सरकार किसानों के जीवन में क्रांतिकारी बदलाव

के दावा कर रहीं थी। ऐसे में दिल्ली के सिंधु, टीकरी, गाजीपुर बॉर्डर तथा देशभर में अन्य आंदोलन स्थलों पर किसान गांधी, भगतसिंह, नेहरु, पटेल, अंबेडकर, गुरु गोविंद सिंह से लेकर तमाम प्रेरक महापुरुषों को अपने आंदोलन का आधार बता रहे थे, जो शासन से प्रतिरोध के प्रतिक थे। गांधी की तरह 100 प्रतिशत किसान आंदोलन चला हो, ऐसा मानना भी ठीक नहीं होगा, किंतु किसान गांधीवादी मूल्यों को अनेक अवसरों पर आत्मसात करते नजर आये। अंत तक गांधी की तरह किसान डटे रहे। **सयुक्त किसान मोर्चा के आंदोलन की गांधीवादी रणनीति को निम्न बिंदुओं से समझ सकते हैं :-**

(1) **साध्य और साधन की पवित्रता :-** गांधी ने साध्य और साधन दोनों की पवित्रता पर बल दिया। किसानों ने साध्य की पवित्रता के साधन की पवित्रता पर पुरा बल दिया। किंतु कुछ रणनितियों जैसे चक्काजाम, रेल रोकों में उग्रता भी दिखी। गांधी की शराब और विदेशी वस्त्रों की दुकान का घेराव की तरह, रिलायंस, अडाणी समूह के शोरूम, पेट्रोल पंप पर धरने भी दिये गये।

(2) **पहले अनुरोध, फिर अवज्ञा :-** गांधी का स्पष्ट मत था कि आपके द्वारा अपनाये जाने वाले रास्ते और मांग पुरी तरह स्पष्ट, विरोधी पक्षधर को पता होनी चाहिए। जैसे गांधी आंदोलन, सत्याग्रह अन्य तरीके से प्रतिरोध से पहले अपने प्रतिपक्षी से संवाद कर उसका हृदय परिवर्तन करने की कोशिश करते जे, वैसे ही किसान आंदोलन ने खुले दिल से केंद्र सरकार से लगातार संवाद द्वारा बदलाव का रास्ता खुला रखा। सरकार द्वारा अपनी तरफ से संवाद खत्म करने पर भी कई बार किसानों ने अपनी तरफ से संवाद का प्रयास किया। मीडिया, जनप्रतिनिधियों या सरकार द्वारा के माध्यम से संवाद करने में कभी पीछे नहीं रहे। सरकार द्वारा चेतावनी की समय सीमा निकलने पर किसानों ने सरकार की अवज्ञा की। साथ ही किसानों ने कोई भी मांग या रणनीति को कभी छुपाया नहीं। खुलकर सरकार, मीडिया को बताया।

(3) **बहिष्कार :-** गांधी के सामने अंग्रेजी शासन था, इसलिए ब्रिटिश उत्पादन का बहिष्कार किया। किसानों के सामने सरकार और सरकार के समर्थक थे, इसलिए किसानों ने सरकारी कार्यक्रमों के साथ-साथ सरकार के समर्थक मीडिया, औद्योगिक घरानों का बहिष्कार किया। इसके चलते सरकार किसानों के इलाकों में गतिविधियां नहीं कर पाई तो दूसरी तरफ किसानों ने सरकार समर्थक मीडिया समूह को तख्तीयां दिखाकर बताया कि वे किसान हैं, आंतकवादी नहीं। सरकार के समर्थक औद्योगिक घरानों अडाणी, अंबानी के उत्पादों :- रिलायंस के शोरूम, पेट्रोल पंप पर धरना दिया गया तो जिओ मोबाइल कंपनी की सेवाओं का त्याग किया गया। राजनीतिक रूप से भाजपा का बहिष्कार किया गया, चुनाव में बंगाल सहित अन्य चुनावों में भाजपा को वोट नहीं देने की अपील की गई।

(4) **महिलाओं की भागीदारी :-** गांधी जी ने भारत में अपने अनुभव से समझ लिया था कि आदि आबादी यानी महिलाओं की भागीदारी के बिना कोई आंदोलन सफल नहीं हो सकता। गांधी जी ने महिलाओं को घर से बाहर निकाल कर शराबबंदी सत्याग्रह आंदोलन में भूमिका दी। गांधी की तरह किसान आंदोलन में नए केवल महिलाओं ने भाग लिया बल्कि मत संचालन, हिसाब किताब, निर्णय प्रक्रिया से लेकर खाना बनाने तक सभी कामों में भागीदारी रही। सयुक्त किसान मोर्चा में पंजाब, हरियाणा, पश्चिम बंगाल, कर्नाटक, राजस्थान सहित देशभर में महिलाओं की भागीदारी हुई। संसद से थोड़ी दूर जंतर मंतर पर तीन दिवसीय किसान संसद में एक दिन यानी 22 जुलाई 2021 को महिला किसान संसद आयोजित की गई। मृतक किसानों में भी पुरुषों के साथ महिलाएं

शामिल थी। किसान आंदोलन से महिला किसानों को किसान होने का दर्जा प्राप्त हुआ।

(5) **अहिंसा** :- महात्मा गांधी ने अपने आंदोलन में हिंसा को कभी जगह नहीं दी। गांधी ने आंख के बदले आंख सिद्धांत की आलोचना करते हो कहा कि यह न्याय का सिद्धांत दुनिया को अंधा कर देगा। सयुक्त किसान मोर्चा ने आंदोलन में शामिल किसानों व नेतृत्वकारी लोगों ने कभी हिंसक गतिविधियों का आह्वान नहीं किया। कुछ अवसरों पर हिंसक झड़पे हुईं लेकिन ज्यादातर आंदोलन अहिंसक रहा। गांधी की तरह अहिंसा की धारणा का सत प्रतिशत पालन नहीं हो पाया, लेकिन आंदोलन ने अपनी तरफ से कभी हिंसा का प्रयास नहीं किया गया।

(6) **सामाजिक सुधार और सांप्रदायिक सद्भाव** :- गांधी ने अपने आंदोलनात्मक कार्यों में दलितोद्धार, सांप्रदायिक सौहार्द को भी प्रमुख स्थान दिया। गांधी जानते थे कि धर्म की अनदेखी पर नहीं कर सकते किंतु पूर्णतया धर्म का रास्ता भी ठीक नहीं हैं। इसके चलते गांधी ने दलित उद्धार, सफाई अभियान, दंगा ग्रस्त इलाकों में जाना, आंदोलन में हिंदू मुस्लिम एकता पर बल दिया। इसी तरह सयुक्त किसान मोर्चा आंदोलन ने भी 380 दिन लोगों के बीच आंदोलन स्थल पर कोई भेदभाव नहीं हुआ। सभी जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्र के लोगों ने साथ बैठकर खाना खाया। सभी महापुरुषों की जयंतियों पर आयोजन किया गया। आंदोलन में हिंदू, मुस्लिम, सिख, इसाई सभी लोग शामिल हुए। 2013 में मुफ्फरनगर, बागपत, मेरठ, शामली सहित पश्चिमी उत्तर प्रदेश में दंगों से टूटा हुआ भाईचारा किसान आंदोलन ने पुनः कायम किया। किसान नेताओं ने भाईचारा सम्मेलन आयोजित किया।

(7) **सत्याग्रह** :- महात्मा गांधी ने सत्याग्रह की अवधारणा को देखकर बताया कि यदि आपका आग्रह सत्य है तो आपको अपने आग्रह पर अंत तक कायम रहना चाहिए। किसान आंदोलन में सरकार का सत्य बनाम किसानों का सत्य का प्रश्न था। किसानों ने हमेशा अपने सत्य को तथ्यों के साथ रखा, अंत तक डटे रहे। सरकार से ज्यादा किसानों ने अपनी बातों से देश-दुनिया को बताया कि यह कानून क्यों उसके लिए गलत कैसे है। सरकार के पास मीडिया, सरकारी संसाधन सब कुछ था, फिर भी लोगों में यह विश्वास पैदा करने में विफल रही की सरकार सही हैं, किसान गलत है। अंत में किसानों के सत्याग्रह की जीत हुई।

(8) **जनता की भाषा में संवाद, रणनीति** :- महात्मा गांधी ने हमेशा जनवाणी यानी जनता की भाषा को चुना। गांधी का संवाद से लेकर आंदोलन तक जनता की भाषा और तौर-तरीकों में होता था। जैसे महिलाओं से शराब की दुकानों पर धरना दिलवाना, विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार, सुत कातना, नमक के लिए दांडी मार्च, सामाजिक सुधार आदि। सयुक्त किसान मोर्चा आंदोलन ने किसानों के मुद्दों पर बात कर उनकी समस्याओं को उठाया देश भर से किसानों का समर्थन मिला। कोई किसान अगर आंदोलन में नहीं गया था, तो भी उसकी नैतिक समर्थन किसान आंदोलन को था।

(9) **करो या मरो दो** :- गांधी ने 8 अगस्त 1942 में मुंबई में करो या मरो का नारा देकर यह बता दिया कि उनका फैसला जनता की इच्छा व उचित अवसर का तालमेल होता है। इसी तरह से किसान मोर्चा ने भी आंदोलन के प्रारंभ में सरकार को निश्चित समय दिया, तय समय के बाद दिल्ली कुच का आह्वान, गांधी की क्यों या मरो के नारे की तरह था। जिसमें गांधी जी की तरफ से किसानों ने भी यह कहा कि अब और सहन नहीं होगा। किसानों ने एक बार दिल्ली आने के बाद वापसी अपनी मांगे मनवा कर ही लौटे।

(10) **प्रायश्चित तथा स्वकष्ट** :- गांधी जी अपनी गलतियों के लिए प्रायश्चित तथा विरोधी पक्ष को प्रभावित

अपने शरीर को कष्ट देने की धारणा गांधी जी की तरह किसानों ने भी अपने द्वारा चुनी हुई सरकार का प्रायश्चित्त किया। किसान सदी, गर्मी, कोरोना की लहर, बदबूदार नालियों के साथ, खुली सड़क पर बैठे रहे। 726 किसानों ने अपने जीवन की कुर्बानी दी।

**निष्कर्ष :-** स्वतंत्र भारत में जन आंदोलन को हमेशा गांधी की रणनीति और विचारों ने ताकत दी है। सरकार से अपना प्रतिरोध जताने की हिम्मत दी है। भारत के किसान आंदोलन को दुनिया भर से समर्थन के साथ, भारत में गैर किसान नागरिक डॉक्टर, लेखक, पत्रकार, कलाकार, छात्र, मजदुर, महिला संगठन, गैर सरकारी संगठनों को भी अपनी तरफ खींचा। किसान आंदोलन से पहले नागरिकता संशोधन कानून के खिलाफ चले आंदोलन का आधार भी गांधी था जिसमें लोगों ने सरकार के कानून को स्वीकृति देने से इनकार कर दिया। किसान आंदोलन करने वाले लोगों में भले ही किताबों में गांधी पढ़ा हो या नहीं लेकिन जीवन में अपनाया है। आज भी जब कोई नागरिक सरकार को चुनौती देता है तो गांधी को याद करता है। भारत में सत्ता के खिलाफ होने वाले आंदोलन, प्रदर्शन करने वाले लोगों के हाथ में गांधी की फोटो या जुबान में गांधी की भाषा व विचार मिलते हैं। सयुक्त किसान मोर्चा आंदोलन को लोगों का व्यापक समर्थन मिला तो उसकी वजह भी गांधीवादी आंदोलन की राह थी। किसानों के धैर्य, त्याग, तपस्या और हिम्मत से स्पष्ट बहुमत वाली सरकार को अपने बनाए कानून वापस लेने पर मजबूर कर दिया। गांधी आज भी भारत के लोगों को प्रतिरोध और सरकार की नीतियों से असहमति रखने की नैतिक ताकत देते हैं।

### संदर्भ सूची :-

1. चौधरी, अनिता (2022) ऐतिहासिक आंदोलन : कुछ अनछुए पहलू संकट में खेती, आंदोलन पर किसान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 142-154
2. त्रिपाठी अरुण कुमार (2022) सरकारी पक्ष : पहले और बाद में, संकट में खेती, आंदोलन पर किसान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 91-99
3. आशुतोष (2022) सत्ता को बेनकाब करते किसान, संकट में खेती, आंदोलन पर किसान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 100-108
4. सिंह, प्रेम (2022) मौजूदा आंदोलन की दशा, संकट में खेती, आंदोलन पर किसान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 109-113
5. अरुण, ए.के. (2022) कॉरपोरेट बनाम किसान, संकट में खेती, आंदोलन पर किसान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 120-130
6. सिंह भाषा (2022) शाहीन बाग लोकतंत्र की नई करवट, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
7. आर्या, डॉ. मंजु, विष्ट डॉ. सुनीता (2020) भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और महात्मा गांधी, साहित्य संचय, दिल्ली, 30-36
8. पाठक, डॉ. मुन्नी, मथेला, प्रतीक (2020), महात्मा गांधी का राजनैतिक दर्शन एवं उसकी प्रासंगिकता, साहित्य संचय, दिल्ली, 47-61
9. बिनिता (2020), बदलते परिवेश में गांधी और प्रासंगिक होते गांधी, साहित्य संचय, दिल्ली, 127-134
10. शर्मा, सियाराम (2021), यह किसानों के अस्तित्व का संघर्ष है, उद्विग्न प्रकाशन, नई दिल्ली।



# मानवाधिकार और पर्यावरण के बीच अंतरसंबंध

डॉ. मल्लिका परवीन, रेखा आचार्य

सहायक आचार्य, राजकीय विधि स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बीकानेर।

## प्रस्तावना :-

वैश्वीकरण, औद्योगीकरण और जलवायु परिवर्तन की अनवरत प्रगति से चिह्नित निरंतर बदलती दुनिया में, मानव अधिकारों और पर्यावरण के बीच परस्पर क्रिया ने सर्वोपरि महत्व प्राप्त कर लिया है। दोनों के बीच संबंध निर्विवाद है, क्योंकि व्यक्तियों की भलाई और हमारे ग्रह का स्वास्थ्य आंतरिक रूप से एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। हम मानव अधिकारों और पर्यावरण के बीच के जटिल संबंधों की गहराई से पड़ताल करते हैं, उन संबंधों के जाल को उजागर करते हैं जो उनके सहजीवी अस्तित्व को रेखांकित करते हैं।

इस संबंध की गंभीरता को बढ़ा-चढ़ाकर नहीं बताया जा सकता। यह एक ऐसा रिश्ता है जो राष्ट्रीय सीमाओं से परे है और पृथ्वी पर प्रत्येक व्यक्ति, समुदाय और राष्ट्र को प्रभावित करता है। जैसे-जैसे हम मानवाधिकारों और पर्यावरण संबंधी चिंताओं के अंतर्संबंध में गहराई से उतरते हैं, यह लेख मानवाधिकारों के दार्शनिक आधारों से लेकर अंतरराष्ट्रीय संधियों और स्थानीय मामले के अध्ययन तक विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण करेगा, जो पर्यावरणीय अधिकारों की उपेक्षा के परिणामों को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं इस अन्वेषण के माध्यम से, हम न केवल चुनौतियों पर प्रकाश डालना चाहते हैं, बल्कि मानवाधिकारों के सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व और एक संपन्न पर्यावरण की क्षमता को भी उजागर करना चाहते हैं। मानवाधिकारों और पर्यावरण की आपस में जुड़ी नियति हमारे सामूहिक ध्यान, करुणा और कार्रवाई की मांग करती है। जैसे-जैसे हम इस यात्रा पर आगे बढ़ते हैं, हमें पता चलता है कि व्यक्तियों के मौलिक अधिकारों की रक्षा करना हमारे साझा ग्रह के नाजुक संतुलन को बनाए रखने के साथ-साथ चलता है। साथ मिलकर, वे उस आधारशिला का निर्माण करते हैं जिस पर एक अधिक न्यायसंगत और टिकाऊ दुनिया का निर्माण किया जा सकता है।

## मानवाधिकारों को परिभाषित करना और उनका ऐतिहासिक संदर्भ :-

मानवाधिकार, अपने मूल में, मौलिक, अंतर्निहित अधिकार और स्वतंत्रता हैं जिनका प्रत्येक व्यक्ति केवल मानव होने के आधार पर हकदार है। ये अधिकार नागरिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्वतंत्रताओं की एक विस्तृत श्रृंखला को शामिल करते हैं, जो उस आधार के रूप में कार्य करते हैं जिस पर न्यायपूर्ण और निष्पक्ष समाज का निर्माण होता है।

मानवाधिकारों का ऐतिहासिक संदर्भ एक आकर्षक विकास को प्रकट करता है, जो युगों-युगों की सभ्यताओं की दार्शनिक और नैतिक नींव में निहित है। प्राचीन बेबीलोन में हम्मुराबी की संहिता से लेकर

मैग्नाकार्टा और प्रबुद्धता युग की मनुष्य और नागरिक के अधिकारों की घोषणा तक, इन अधिकारों को पहचानने और उनकी रक्षा करने की दिशा में मानवता की यात्रा लंबी और कठिन रही है। हालाँकि, मानवाधिकार के इतिहास में सबसे निर्णायक क्षण द्वितीय विश्व युद्ध के बाद आया जब नरसंहार और अन्य अत्याचारों की भयावहता ने 1948 में मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा की स्थापना को प्रेरित किया। यह ऐतिहासिक दस्तावेज, संयुक्त राष्ट्र द्वारा समर्थित, प्रत्येक व्यक्ति की गरिमा और मूल्य की सुरक्षा के लिए एक व्यापक रूपरेखा तैयार करते हुए, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मानवाधिकारों की अवधारणा को स्थापित किया।

### **मानवाधिकारों की सार्वभौमिकता और अविभाज्यता :-**

मानवाधिकारों की एक परिभाषित विशेषता उनकी सार्वभौमिकता है। वे राष्ट्रीयता, नस्ल, लिंग, धर्म या किसी अन्य विशिष्ट कारक पर निर्भर नहीं हैं। मानवाधिकार प्रत्येक व्यक्ति का है, चाहे उनकी पृष्ठभूमि या परिस्थिति कुछ भी हो। यह सार्वभौमिकता सुनिश्चित करती है कि ये अधिकार सभी मनुष्यों पर लागू होते हैं, चाहे वे कहीं भी पैदा हुए हों, रहते हों या यात्रा करते हों। संक्षेप में, मानवाधिकार मानवता की विरासत है, एक साझा विरासत है जो सीमाओं और सीमाओं से परे है।

दूसरा मूलभूत पहलू मानवाधिकारों की अविभाज्यता है। इसका मतलब यह है कि ये अधिकार किसी व्यक्ति के लिए अंतर्निहित हैं और इन्हें जबरदस्ती या सहमति की स्थिति में भी आत्मसमर्पण, स्थानांतरित या रद्द नहीं किया जा सकता है। कोई भी स्वेच्छा से अपने जीवन का अधिकार, यातना से मुक्ति, या विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं छोड़ सकता। सत्ता के दुरुपयोग और मानवीय गरिमा के उल्लंघन के खिलाफ अविभाज्य अधिकार एक अभेद्य बाधा के रूप में खड़े हैं।

सार्वभौमिकता और अविभाज्यता की अवधारणा, जब संयुक्त होती है, तो इस धारणा को रेखांकित करती है कि मानवाधिकार सरकारों या अधिकारियों के विवेक पर दिए जाने वाले या रोके जाने वाले विशेषाधिकार नहीं हैं। बल्कि, वे अपरिवर्तनीय अधिकार हैं, जो मानवीय गरिमा और न्यायसंगत, मानवीय और न्यायसंगत समाज के निर्माण के लिए आवश्यक हैं। यह इस संदर्भ में है कि मानवाधिकार पर्यावरणीय अधिकारों से संबंधित बातचीत का एक अभिन्न अंग है, क्योंकि पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण सभी व्यक्तियों और भावी पीढ़ियों की भलाई से अटूट रूप से जुड़ा हुआ है, इस प्रकार दोनों के बीच गहरा संबंध स्थापित होता है।

### **पर्यावरणीय अधिकारों के उद्भव और महत्व की खोज :-**

पर्यावरणीय अधिकारों का उद्भव मानवता और प्राकृतिक दुनिया के बीच जटिल संबंधों के बारे में बढ़ती जागरूकता को दर्शाता है। पर्यावरणीय अधिकारों में सिद्धांतों और कानूनी प्रावधानों का एक समूह शामिल है जो पर्यावरण के आंतरिक मूल्य को पहचानते हैं और व्यक्तियों और समुदायों के स्वस्थ और टिकाऊ वातावरण में रहने के अधिकार की पुष्टि करते हैं।

पर्यावरणीय अधिकारों का महत्व हाल के दशकों में उभरी गंभीर पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने की उनकी क्षमता में निहित है। ये अधिकार स्वीकार करते हैं कि पर्यावरणीय कल्याण मानव कल्याण से अलग नहीं है। प्राकृतिक संसाधनों का क्षरण, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता के नुकसान का मानव स्वास्थ्य, सुरक्षा और जीवन की गुणवत्ता पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार पर्यावरणीय अधिकार ग्रह के पारिस्थितिक संतुलन की सुरक्षा के साथ-साथ वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के अधिकारों और कल्याण की

रक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण प्रतिक्रिया के रूप में खड़े हैं।

**पर्यावरण अधिकार एक सतत और न्यायसंगत भविष्य में कैसे योगदान करते हैं :-**

**पर्यावरणीय अधिकार कई मायनों में टिकाऊ और न्यायसंगत भविष्य को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं :**

बुनियादी मानवीय आवश्यकताओं की सुरक्षारू पर्यावरण अधिकारों में स्वच्छ हवा, सुरक्षित पानी और स्वस्थ वातावरण का अधिकार शामिल है। ये मौलिक अधिकार मानव अस्तित्व और कल्याण के लिए आवश्यक हैं। इन आवश्यकताओं तक पहुंच सुनिश्चित करना एक न्यायपूर्ण समाज की आधारशिला है।

**सांस्कृतिक और स्वदेशी अधिकारों का संरक्षण :-** कई स्वदेशी और हाशिए पर रहने वाले समुदायों का अपने पर्यावरण से गहरा सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संबंध है। पर्यावरणीय अधिकारों को मान्यता देने और उनका समर्थन करने से इन सांस्कृतिक विरासतों और इन समुदायों के अपनी भूमि और संसाधनों के अधिकारों की रक्षा करने में मदद मिलती है।

**पर्यावरणीय अन्याय का शमन :-** पर्यावरणीय क्षरण अक्सर असुरक्षित समुदायों को प्रभावित करता है, जिससे पर्यावरणीय अन्याय होता है। पर्यावरणीय अधिकार पर्यावरणीय बोझ और लाभों के वितरण में निष्पक्षता की वकालत करते हैं, जिससे प्रणालीगत असमानताओं को सुधारने में मदद मिलती है।

**सतत विकास को बढ़ावा देना :-** पर्यावरण अधिकार विकास के एक मॉडल को प्रोत्साहित करते हैं जो पारिस्थितिक सीमाओं का सम्मान करता है और भावी पीढ़ियों के लिए प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा करता है। यह दृष्टिकोण अल्पकालिक लाभ की तुलना में दीर्घकालिक स्थिरता को बढ़ावा देता है।

**अंतरराष्ट्रीय सहयोग :-** मानव अधिकारों की तरह पर्यावरणीय अधिकार भी राष्ट्रीय सीमाओं से परे हैं। उन्हें जलवायु परिवर्तन और सीमा पार प्रदूषण जैसी वैश्विक पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग और कूटनीति की आवश्यकता है।

**कानूनी जवाबदेही :-** पर्यावरणीय अधिकारों को मान्यता देकर, कानूनी प्रणालियाँ पर्यावरणीय क्षति के लिए सरकारों और निगमों को जिम्मेदार ठहराने का अवसर प्रदान करती हैं। पर्यावरणीय अखंडता बनाए रखने के लिए यह जवाबदेही आवश्यक है।

**अधिकारों का अंतर्संबंध :-** पर्यावरण वह पृष्ठभूमि है जिसके विरुद्ध जीवन, स्वास्थ्य और संपत्ति के अधिकार सहित अन्य मानवाधिकारों का प्रयोग किया जाता है। पर्यावरणीय अधिकार इन अधिकारों की परस्पर निर्भरता को सुदृढ़ करते हैं, यह दर्शाते हुए कि मानव गरिमा को बनाए रखने के लिए पर्यावरण की रक्षा करना आवश्यक है।

पर्यावरणीय अधिकार एक स्थायी और न्यायसंगत भविष्य की तलाश में एक महत्वपूर्ण कड़ी हैं। वे पर्यावरणीय चुनौतियों को कम करने, मानव कल्याण की रक्षा करने और मानवता और ग्रह के बीच सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व का पोषण करने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में कार्य करते हैं। मानवाधिकारों और पर्यावरण के बीच इस परस्पर क्रिया की खोज एक अधिक संतुलित और समृद्ध दुनिया के लिए सहक्रियात्मक क्षमता पर प्रकाश डालती है।

**अंतरराष्ट्रीय समझौते और संधियाँ :-**

**मानवाधिकार और पर्यावरण से संबंधित अंतरराष्ट्रीय समझौतों और सम्मेलनों की खोज :**

अंतर्राष्ट्रीय समझौते और सम्मेलन मानव अधिकारों और पर्यावरण के बीच परस्पर जुड़े संबंधों की रीढ़ के रूप में कार्य करते हैं। वे महत्वपूर्ण उपकरण हैं जो व्यक्तियों के अधिकारों और ग्रह की अखंडता दोनों की सुरक्षा के प्रति वैश्विक समुदाय के सिद्धांतों और प्रतिबद्धताओं को स्पष्ट करते हैं। इस परस्पर क्रिया का उदाहरण देने वाले दो सबसे प्रमुख समझौते हैं मानव अधिकारों की सार्वभौम घोषणा और जलवायु परिवर्तन पर पेरिस समझौता।

### **मानव अधिकारों का सार्वजनिक घोषणा पत्र :-**

1948 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा अपनाया गया, मानव अधिकारों की सार्वभौम घोषणा (यूडीएचआर) एक मौलिक दस्तावेज है जो मानव अधिकारों की आधुनिक अवधारणा को रेखांकित करता है।

मुख्य प्रावधानों में व्यक्ति के जीवन, स्वतंत्रता और सुरक्षा का अधिकार (अनुच्छेद 3), पर्याप्त जीवन स्तर का अधिकार (अनुच्छेद 25), और सरकार में भाग लेने का अधिकार (अनुच्छेद 21) शामिल हैं।

पर्यावरण के लिए यूडीएचआर का निहितार्थ गहरा है। जीवन का अधिकार (अनुच्छेद 3) सीधे तौर पर पर्यावरणीय गुणवत्ता से जुड़ा है, क्योंकि प्रदूषण और पर्यावरणीय गिरावट जीवन को ही खतरे में डाल सकती है। इसके अतिरिक्त, पर्याप्त जीवन स्तर के अधिकार में स्वच्छ पानी, भोजन और आवास तक पहुंच शामिल है, जो एक स्वस्थ वातावरण पर निर्भर है।

### **पेरिस समझौता :-**

जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्ककन्वेंशन (यूएनएफसीसीसी) के तहत 2015 में अपनाया गया पेरिस समझौता, जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण और मानवाधिकारों पर इसके प्रभाव को संबोधित करता है।

मुख्य प्रावधानों में ग्लोबलवार्मिंग को पूर्व-औद्योगिक स्तर से 2 डिग्री सेल्सियस से नीचे सीमित करने की प्रतिबद्धता, इसे 1.5 डिग्री तक सीमित करने की आकांक्षा शामिल है। यह जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों के प्रति अनुकूलन की आवश्यकता पर भी जोर देता है।

मानवाधिकारों के लिए पेरिस समझौते के निहितार्थ बहुआयामी हैं। यदि जलवायु परिवर्तन को कम नहीं किया गया तो यह जीवन, स्वास्थ्य और जीवन के पर्याप्त मानक सहित मानव अधिकारों के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा पैदा करता है। कमजोर आबादी विशेष रूप से प्रभावित होती है, जो पर्यावरण और मानव अधिकारों के मुद्दों के प्रतिच्छेदन को प्रदर्शित करती है।

ये समझौते इस मान्यता का उदाहरण देते हैं कि मानवाधिकार और पर्यावरण संरक्षण आपस में जुड़े हुए हैं और इन्हें अंतरराष्ट्रीय मंच पर सामूहिक रूप से संबोधित किया जाना चाहिए। वे वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए राष्ट्रों के बीच सहयोग की आवश्यकता पर बल देते हुए, मानव अधिकारों और पर्यावरण की एक साथ रक्षा के लिए एक कानूनी ढांचा प्रदान करते हैं।

इसके अलावा, विभिन्न क्षेत्रीय और राष्ट्रीय समझौते इन अंतरराष्ट्रीय संधियों के पूरक हैं, कानूनी उपकरणों का एक जाल बनाते हैं जो सामूहिक रूप से व्यक्तियों की गरिमा और पर्यावरण के संरक्षण को सुनिश्चित करने का प्रयास करते हैं। यह परस्पर जुड़ा ढांचा एक ऐसी दुनिया को बढ़ावा देने की साझा प्रतिबद्धता के प्रमाण के रूप में खड़ा है जहां मानव अधिकार और पर्यावरण संरक्षण परस्पर विरोधी उद्देश्यों के बजाय परस्पर मजबूत हैं।

वी. केस स्टडीज वास्तविक दुनिया के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं जो मानव अधिकारों और पर्यावरणीय मुद्दों

(उदाहरण के लिए, स्वदेशी भूमि अधिकार, स्वच्छ पानी तक पहुंच, जलवायु-प्रेरित विस्थापन) के अंतर्संबंध को दर्शाते हैं। इन मामलों के कानूनी और नैतिक आयामों का विश्लेषण करें।

### **स्वदेशी भूमि अधिकार - स्टैंडिंगरॉकसिओक्स जनजाति (संयुक्त राज्य अमेरिका) :-**

डकोटाएक्सेस पाइपलाइन के खिलाफ स्टैंडिंगरॉकसिओक्स जनजाति का विरोध पर्यावरणीय चिंताओं के साथ स्वदेशी भूमि अधिकारों का एक शक्तिशाली उदाहरण है। पाइपलाइन के प्रस्तावित मार्ग से जनजाति की पवित्र भूमि और उनके प्राथमिक जल स्रोत, मिसौरी नदी को खतरा है। जनजाति ने तर्क दिया कि इससे उनके आत्मनिर्णय, सांस्कृतिक संरक्षण और स्वच्छ जल के अधिकार का उल्लंघन हुआ।

**कानूनी और नैतिक विश्लेषण :-** मामले ने अंतरराष्ट्रीय कानून में उल्लिखित, अपने क्षेत्रों को प्रभावित करने वाली परियोजनाओं पर स्वदेशी समुदायों के साथ परामर्श करने के कानूनी दायित्व पर प्रकाश डाला। इसने स्वदेशी अधिकारों और पर्यावरण संरक्षण का सम्मान करने के लिए सरकारों और निगमों की नैतिक जिम्मेदारी पर सवाल उठाए।

### **स्वच्छ जल तक पहुंच - पिलंट जल संकट (संयुक्त राज्य अमेरिका) :-**

पिलंट जल संकट ने उजागर किया कि कैसे पर्यावरणीय लापरवाही साफ पानी के मानव अधिकार का उल्लंघन कर सकती है। पिलंट, मिशिगन में सीसा-दूषित पेयजल ने शहर की कम आय और अल्पसंख्यक आबादी को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया। निवासियों को बच्चों में विकास संबंधी समस्याओं सहित स्वास्थ्य जोखिमों का सामना करना पड़ा।

**कानूनी और नैतिक विश्लेषण :-** मामले से शासन और जवाबदेही में विफलताओं का पता चला। इसने सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराने के लिए सरकारों की कानूनी जिम्मेदारी और हाशिए पर रहने वाले समुदायों की भेद्यता के संबंध में नैतिक विचारों के बारे में चर्चा को प्रेरित किया।

### **जलवायु-प्रेरित विस्थापन - किरिबाती और तुवालु (प्रशांत द्वीप समूह) :-**

जलवायु परिवर्तन के कारण समुद्र के बढ़ते स्तर के कारण किरिबाती और तुवालु के निचले देशों को अस्तित्व के खतरे का सामना करना पड़ रहा है। उनके नागरिकों को जलवायु शरणार्थी बनने और अपनी मातृभूमि से विस्थापन का सामना करने का खतरा है।

**कानूनी और नैतिक विश्लेषण :-** ये मामले जलवायु-प्रेरित विस्थापन की चुनौती और प्रभावित लोगों के अधिकारों की रक्षा के लिए स्पष्ट कानूनी ढांचे की कमी को उजागर करते हैं। नैतिक आयाम ऐसे विस्थापन को रोकने के लिए जलवायु शमन के लिए वैश्विक जिम्मेदारी पर जोर देता है।

### **वनों की कटाई और स्वदेशी अधिकार - अमेजनवर्षावन (दक्षिण अमेरिका) :-**

अमेजनवर्षावन के वनों की कटाई न केवल वैश्विक जलवायु को प्रभावित करती है बल्कि उन स्वदेशी लोगों के अधिकारों को भी प्रभावित करती है जो अपनी आजीविका और सांस्कृतिक विरासत के लिए जंगल पर निर्भर हैं। संघर्ष तब उत्पन्न होते हैं जब निगम और सरकारें संसाधन निष्कर्षण के लिए स्वदेशी क्षेत्रों पर अतिक्रमण करते हैं।

**कानूनी और नैतिक विश्लेषण :-** ये मामले आर्थिक विकास और स्वदेशी भूमि अधिकारों के बीच तनाव पर प्रकाश डालते हैं। वे अंतरराष्ट्रीय कानून में मान्यता प्राप्त स्वदेशी अधिकारों के सम्मान के महत्व और जैव

विविधता को संरक्षित करने और जलवायु परिवर्तन को कम करने के नैतिक दायित्व पर जोर देते हैं।

### **स्वच्छता तक पहुंच - स्वच्छता सुविधाओं का अभाव (वैश्विक) :-**

दुनिया के कई हिस्सों में, शौचालयों सहित उचित स्वच्छता सुविधाओं की कमी, महिलाओं और लड़कियों पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। पहुंच की यह कमी उनके स्वास्थ्य, सुरक्षा और सम्मान के अधिकारों का उल्लंघन करती है।

**कानूनी और नैतिक विश्लेषण :-** हालांकि यह मुद्दा किसी विशिष्ट स्थान तक सीमित नहीं है, लेकिन बुनियादी मानव अधिकार के रूप में स्वच्छता तक पहुंच सुनिश्चित करने के लिए कानूनी और नैतिक दायित्वों को रेखांकित करता है। यह पर्यावरण न्याय और मानवाधिकारों के लिंग-विशिष्ट आयामों पर सवाल उठाता है। ये केस अध्ययन मानव अधिकारों और पर्यावरणीय मुद्दों के बीच अंतर्संबंध की बहुआयामी प्रकृति को प्रदर्शित करते हैं। वे मानव कल्याण और पर्यावरण संरक्षण की परस्पर निर्भरता पर जोर देते हुए, कानूनी ढांचे, नैतिक विचारों के महत्व और इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए सक्रिय उपायों की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हैं।

### **पर्यावरणीय क्षरण और मानवाधिकारों का उल्लंघन :-**

#### **पर्यावरणीय गिरावट किस प्रकार मानव अधिकारों के उल्लंघन की ओर ले जाती है :**

पर्यावरणीय गिरावट, प्राकृतिक पर्यावरण की गिरावट, जीवन, स्वास्थ्य और स्वच्छ पर्यावरण के अधिकार सहित मानव अधिकारों पर गंभीर परिणाम हो सकती है। यह गिरावट प्रदूषण, वनों की कटाई, जलवायु परिवर्तन और संसाधन शोषण जैसे कारकों के परिणामस्वरूप होती है, और यह प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से मानवाधिकारों के उल्लंघन का कारण बन सकती है।

#### **1. जीवन का अधिकार :-**

**उदाहरण - वायु प्रदूषण और श्वसन रोग :** वायु प्रदूषण का उच्च स्तर, जो अक्सर औद्योगिक उत्सर्जन और परिवहन के कारण होता है, श्वसन रोगों और समय से पहले होने वाली मौतों में योगदान देता है। खराब वायु गुणवत्ता वाले क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को स्वास्थ्य समस्याओं का खतरा अधिक होता है, जो सीधे तौर पर उनके जीवन के अधिकार का उल्लंघन है।

#### **2. स्वास्थ्य का अधिकार :-**

**उदाहरण - जल संदूषण और स्वास्थ्य पर प्रभाव :** फिल्टर जल संकट की तरह, जल स्रोतों के संदूषण से सीसा विषाक्तता सहित गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं पैदा हो सकती हैं। यह सीधे तौर पर स्वास्थ्य के अधिकार का उल्लंघन करता है, क्योंकि व्यक्ति पर्यावरण के माध्यम से हानिकारक पदार्थों के संपर्क में आते हैं।

#### **3. स्वच्छ पर्यावरण का अधिकार :-**

**उदाहरण - वनों की कटाई और जैव विविधता की हानि :** वनों की कटाई पारिस्थितिक तंत्र को बाधित करती है, जिससे जैव विविधता का नुकसान होता है और, कुछ मामलों में, स्वदेशी समुदायों की आजीविका को खतरा होता है। यह स्वच्छ पर्यावरण के अधिकार को नुकसान पहुंचाता है, क्योंकि यह संसाधनों और सांस्कृतिक विरासत की उपलब्धता को प्रभावित करता है।

#### **4. जलवायु परिवर्तन और इसका व्यापक प्रभाव :-**

**उदाहरण - जलवायु-प्रेरित विस्थापन :** समुद्र के बढ़ते स्तर, सूखा और चरम मौसम की घटनाएं, जो

मुख्य रूप से जलवायु परिवर्तन से प्रेरित हैं, समुदायों को विस्थापित कर सकती हैं और प्रवासन को जन्म दे सकती हैं। यह न केवल विस्थापित लोगों के जीवन, स्वास्थ्य और स्वच्छ वातावरण के अधिकार को प्रभावित करता है, बल्कि मेजबान समुदायों में संसाधनों और अधिकारों पर भी दबाव डालता है।

#### 5. मृदा एवं भूमि क्षरण :-

**उदाहरण - मृदा क्षरण और खाद्य सुरक्षा :** मृदा क्षरण और भूमि क्षरण कृषि उत्पादकता और खाद्य सुरक्षा को कम कर सकते हैं, जिससे भोजन के अधिकार का उल्लंघन होता है। यह आर्थिक असमानताओं में भी योगदान देता है, जिससे पर्याप्त जीवन स्तर का अधिकार प्रभावित होता है।

#### 6. संसाधन दोहन और स्वदेशी अधिकार :-

**उदाहरण - स्वदेशी भूमि पर संसाधन निष्कर्षण :** स्वदेशी भूमि पर संसाधनों का निष्कर्षण, अक्सर उनकी सहमति के बिना, न केवल पारिस्थितिकी तंत्र को बाधित करता है बल्कि स्वदेशी समुदायों के अधिकारों का भी उल्लंघन करता है, जिसमें उनके आत्मनिर्णय और सांस्कृतिक संरक्षण का अधिकार भी शामिल है।

ये उदाहरण पर्यावरणीय गिरावट और मानवाधिकारों के उल्लंघन के बीच सीधे संबंध को दर्शाते हैं। पर्यावरणीय क्षति के परिणाम पारिस्थितिक प्रणालियों तक ही सीमित नहीं हैं इनका व्यक्तियों और समुदायों की भलाई और गरिमा पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इन संबंधों की पहचान सरकारों, निगमों और अंतरराष्ट्रीय निकायों के लिए पर्यावरण के संरक्षण और मानव अधिकारों की रक्षा के लिए एक साथ सक्रिय कदम उठाने के लिए आवश्यक है।

#### पर्यावरणीय न्याय और कमजोर आबादी :-

**पर्यावरणीय अन्याय कैसे हाशिए पर रहने वाले समुदायों को असंगत रूप से प्रभावित करते हैं :**

पर्यावरणीय न्याय मानव अधिकारों और पर्यावरण के बीच अंतर्संबंध को समझने का एक महत्वपूर्ण पहलू है। यह हाशिए पर रहने वाले और कमजोर समुदायों द्वारा वहन किए जाने वाले पर्यावरणीय नुकसान के अनुपातहीन बोझ को संदर्भित करता है। ये समुदाय अक्सर प्रतिकूल पर्यावरणीय प्रभावों, जैसे प्रदूषण, दूषित पानी, या हरे स्थानों तक पहुंच की कमी, को दूसरों की तुलना में अधिक तीव्रता से अनुभव करते हैं।

#### 1. प्रदूषणकारी सुविधाओं से निकटता :-

हाशिए पर रहने वाले समुदाय, अक्सर कम आय वाले और रंगीन समुदाय, औद्योगिक और अपशिष्ट सुविधाओं के पास स्थित होने की अधिक संभावना रखते हैं। वे वायु और जल प्रदूषण का खामियाजा भुगतते हैं, जिससे स्वास्थ्य समस्याएं और जीवन की गुणवत्ता में कमी आती है।

#### 2. स्वच्छ जल तक पहुँच का अभाव :-

विकसित और विकासशील दोनों देशों में कई हाशिए पर रहने वाले समुदायों के पास सुरक्षित और स्वच्छ पेयजल तक पहुंच का अभाव है। यह स्थिति जीवन और स्वास्थ्य के लिए आवश्यक स्वच्छ और सुरक्षित पानी के उनके अधिकार को सीधे प्रभावित करती है।

#### 3. खाद्य रेगिस्तान और सीमित पोषण विकल्प :-

कुछ हाशिये पर पड़े शहरी क्षेत्रों को भोजन रेगिस्तान का सामना करना पड़ता है, जहां ताजा और स्वस्थ भोजन तक पहुंच सीमित है। यह पर्याप्त जीवन स्तर के अधिकार को प्रभावित करता है और स्वास्थ्य संबंधी

असमानताओं को बढ़ाता है।

#### 4. पर्यावरणीय नस्लवाद :-

पर्यावरणीय नस्लवाद की अवधारणा उन नीतियों और प्रथाओं को संदर्भित करती है जो रंग के समुदायों में पर्यावरणीय खतरों को असंगत रूप से रखती हैं। इसके परिणामस्वरूप प्रणालीगत भेदभाव और बुनियादी मानवाधिकारों का उल्लंघन होता है।

#### पर्यावरण न्याय की अवधारणा की परीक्षा :-

पर्यावरणीय न्याय की अवधारणा इन अन्यायों की प्रतिक्रिया के रूप में उभरी। यह मानता है कि सभी व्यक्तियों को, उनकी जाति, आय या स्थान की परवाह किए बिना, स्वच्छ और सुरक्षित वातावरण में रहने का अधिकार है। पर्यावरणीय न्याय पर्यावरणीय लाभों तक समान पहुँच और पर्यावरणीय बोझों के उचित वितरण की वकालत करता है। यह समानता, निष्पक्षता और गैर-भेदभाव के सिद्धांतों पर आधारित है।

#### पर्यावरणीय न्याय की मांग :-

निष्पक्ष और समावेशी निर्णय लेने की प्रक्रियाएँ जिनमें प्रभावित समुदाय शामिल होते हैं।

पिछले पर्यावरणीय अन्यायों का निवारण।

नीतियाँ और नियम जो सीमांत क्षेत्रों में पर्यावरणीय खतरों के असंगत प्लेसमेंट को रोकते हैं।

संक्षेप में, पर्यावरणीय न्याय इस बात पर जोर देता है कि कमजोर आबादी के अधिकारों की रक्षा की जानी चाहिए, न केवल सिद्धांत में बल्कि व्यवहार में भी। यह उन प्रणालीगत असमानताओं को चुनौती देता है जो पर्यावरणीय भेदभाव को कायम रखती हैं और एक अधिक न्यायसंगत और टिकाऊ भविष्य की वकालत करती हैं जहाँ सभी व्यक्ति अपनी पृष्ठभूमि या परिस्थितियों की परवाह किए बिना अपने मानवाधिकारों का पूरी तरह से आनंद ले सकें।

#### व्यक्ति और समुदाय पर्यावरणीय क्षति के लिए कानूनी उपाय तलाश सकते हैं :-

पर्यावरणीय क्षति से निपटने के लिए व्यक्तियों और समुदायों के पास विभिन्न कानूनी तंत्र और उपाय हैं। ये तंत्र अक्सर अलग-अलग देशों की कानूनी प्रणालियों पर निर्भर करते हैं, लेकिन अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन और संधियाँ भी पर्यावरणीय उल्लंघनों के लिए सहारा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यहाँ कुछ सामान्य कानूनी रास्तों का अवलोकन दिया गया है :

**राष्ट्रीय पर्यावरण कानून :-** कई देशों ने पर्यावरण कानून और नियम स्थापित किए हैं जो व्यक्तियों और समुदायों को पर्यावरणीय नुकसान के लिए कानूनी उपाय खोजने की अनुमति देते हैं। ये कानून प्रदूषण नियंत्रण से लेकर भूमि उपयोग योजना तक कई मुद्दों को कवर करते हैं।

**प्रशासनिक उपाय :-** व्यक्ति और समुदाय अक्सर पर्यावरण संरक्षण के लिए जिम्मेदार सरकारी एजेंसियों के पास शिकायत दर्ज कर सकते हैं। ये एजेंसियाँ प्रदूषण फैलाने वालों या पर्यावरण नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ जांच और प्रवर्तन कार्रवाई कर सकती हैं।

**सिविल मुकदमों :-** पर्यावरणीय क्षति के मामलों में, प्रभावित पक्ष नुकसान के लिए जिम्मेदार लोगों के खिलाफ सिविल मुकदमा दायर कर सकते हैं। ये मुकदमे नुकसान के लिए मुआवजे, हानिकारक गतिविधियों को रोकने के लिए निषेधाज्ञा राहत या अन्य कानूनी उपायों की मांग कर सकते हैं।

**जनहित याचिका :-** जनहित याचिका व्यक्तियों या समूहों को जनता या पर्यावरण की ओर से मुकदमा दायर करने की अनुमति देती है। यह कानूनी तंत्र उन मामलों में विशेष रूप से प्रभावी है जहां पर्यावरणीय क्षति व्यापक समुदाय को प्रभावित करती है।

**वर्ग कार्रवाई :-** कुछ न्यायक्षेत्रों में, वर्ग-कार्रवाई मुकदमें उन व्यक्तियों के समूहों को एक साथ जुड़ने और सामूहिक रूप से कानूनी कार्रवाई करने में सक्षम बनाते हैं, जिन्होंने समान पर्यावरणीय क्षति का सामना किया है।

**अंतर्राष्ट्रीय संधियाँ और सम्मेलन :-** सीमा पार पर्यावरणीय प्रभावों वाले मामलों में, अंतर्राष्ट्रीय समझौते और सम्मेलन, जैसे कि सूचना तक पहुंच पर आरहूस कन्वेंशन, निर्णय लेने में सार्वजनिक भागीदारी और पर्यावरणीय मामलों में न्याय तक पहुंच, प्रभावित व्यक्तियों और समुदायों को पहुंच के लिए तंत्र प्रदान करते हैं। जानकारी प्राप्त करें, निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में भाग लें और न्याय प्राप्त करें।

**राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय न्यायालयों की भूमिका :-**

राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय अदालतें पर्यावरणीय मुद्दों को संबोधित करने और पर्यावरण कानूनों और अंतर्राष्ट्रीय समझौतों का अनुपालन सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

**राष्ट्रीय न्यायालय :-** राष्ट्रीय न्यायालयों का अपने संबंधित देशों के भीतर पर्यावरण संबंधी मामलों पर अधिकार क्षेत्र होता है। वे घरेलू पर्यावरण कानूनों को लागू कर सकते हैं, नागरिक और सार्वजनिक हित के मामलों की सुनवाई कर सकते हैं और पर्यावरणीय विवादों पर निर्णय जारी कर सकते हैं। किसी विशिष्ट देश में होने वाले पर्यावरणीय नुकसान को संबोधित करने के लिए राष्ट्रीय अदालतें अक्सर रक्षा की पहली पंक्ति होती हैं।

**अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय और न्यायाधिकरण :-** अंतर्राष्ट्रीय निहितार्थ वाले मामलों में, व्यक्ति, समुदाय या राज्य अंतरराष्ट्रीय न्यायालयों और न्यायाधिकरणों के समक्ष विवाद ला सकते हैं। उदाहरण के लिए, अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय (ICJ) सीमा पार पर्यावरणीय क्षति और राज्यों के बीच विवादों से संबंधित मामलों की सुनवाई कर सकता है। विशिष्ट न्यायाधिकरण, जैसे कि समुद्री कानून के लिए अंतर्राष्ट्रीय न्यायाधिकरण (आईटीएलओएस), समुद्री पर्यावरण संबंधी मुद्दों से संबंधित मामलों को संभालते हैं।

**अंतर्राष्ट्रीय समझौतों में अनुपालन तंत्र :-** कई अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण समझौतों में अनुपालन तंत्र होते हैं जो पार्टियों को समझौते के प्रावधानों के गैर-अनुपालन को संबोधित करने की अनुमति देते हैं। ये तंत्र देशों के बीच विवादों को सुलझाने और अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण प्रतिबद्धताओं के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए एक मंच प्रदान कर सकते हैं।

ये कानूनी तंत्र और संस्थाएं पर्यावरणीय क्षति के लिए पार्टियों को जिम्मेदार ठहराने और यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं कि व्यक्तियों और समुदायों को पर्यावरणीय उल्लंघन के मामलों में न्याय तक पहुंच मिले। वे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर मानवाधिकारों और पर्यावरण की सुरक्षा में योगदान देते हैं।

**पर्यावरण कार्यकर्ताओं और संगठनों के कार्यों पर प्रकाश डालना :-**

पर्यावरण कार्यकर्ता और संगठन पर्यावरणीय अधिकारों और न्याय की वकालत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे जागरूकता बढ़ाने, सरकारों और निगमों को जवाबदेह बनाने और सकारात्मक बदलाव लाने के लिए अथक प्रयास करते हैं। यहां उनके काम के कुछ उदाहरण दिए गए हैं :

**ग्रेटाथनबर्ग और फ्राईडेजफॉरफ्यूचर :-** स्वीडिश किशोरी ग्रेटाथनबर्ग को जलवायु कार्रवाई के लिए

अपनी स्कूल हड़ताल से वैश्विक पहचान मिली। उन्होंने और फ्राइडेज फॉर फ्यूचर आंदोलन ने दुनिया भर के लाखों युवाओं को जलवायु परिवर्तन पर तत्काल कार्रवाई की मांग करने के लिए प्रेरित किया।

**ग्रीनपीस :-** ग्रीनपीस एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण संगठन है जो वनों की कटाई, जलवायु परिवर्तन और समुद्री संरक्षण जैसे मुद्दों पर अपने प्रत्यक्ष कार्यों, वकालत और अभियानों के लिए जाना जाता है। वे पर्यावरणीय मुद्दों पर ध्यान आकर्षित करने के लिए रचनात्मक और हाई-प्रोफाइल विरोध प्रदर्शन का उपयोग करते हैं।

**सिएराक्लब :-** सिएराक्लब, संयुक्त राज्य अमेरिका के सबसे पुराने और सबसे बड़े पर्यावरण संगठनों में से एक, संरक्षण और वकालत पर केंद्रित है। वे सार्वजनिक भूमि की सुरक्षा से लेकर स्वच्छ ऊर्जा में परिवर्तन तक के मुद्दों पर काम करते हैं।

**स्वदेशी पर्यावरण कार्यकर्ता :-** दुनिया भर के स्वदेशी समुदाय अक्सर अपनी भूमि और संस्कृतियों की रक्षा करते हुए पर्यावरणीय न्याय प्रयासों का नेतृत्व करते हैं। उदाहरणों में डकोटाएक्सेसपाइपलाइन और स्वदेशी पर्यावरण नेटवर्क के काम के खिलाफ स्वदेशी नेतृत्व वाले विरोध शामिल हैं।

**पर्यावरणीय न्याय को बढ़ावा देने में नागरिक समाज की भूमिका :-**

नागरिक समाज, जिसमें व्यक्ति, गैर-सरकारी संगठन (एनजीओ) और सामुदायिक समूह शामिल हैं, पर्यावरणीय न्याय को बढ़ावा देने के लिए एक शक्तिशाली शक्ति है। यहां बताया गया है कि नागरिक समाज कैसे योगदान देता है :-

**वकालत और शिक्षा :-** नागरिक समाज संगठन और कार्यकर्ता पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाते हैं, नीतिगत बदलावों की वकालत करते हैं, और मानवाधिकारों और पर्यावरण के अंतर्संबंध पर शिक्षा प्रदान करते हैं।

**सामुदायिक सशक्तिकरण :-** स्थानीय समुदाय समूह अक्सर अपने पड़ोस को प्रभावित करने वाले पर्यावरणीय अन्याय को दूर करने के लिए काम करते हैं। वे प्रभावित समुदायों को अपनी चिंताओं को व्यक्त करने और कार्रवाई की मांग करने के लिए सशक्त बनाते हैं।

**निगरानी और जवाबदेही :-** नागरिक समाज सरकार और कॉर्पोरेट कार्यों की निगरानी करता है, उन्हें पर्यावरणीय वादों के लिए जवाबदेह बनाता है और पर्यावरण कानूनों और समझौतों का अनुपालन सुनिश्चित करता है।

**कानूनी कार्रवाइयां :-** नागरिक समाज संगठन सरकार और कॉर्पोरेट व्यवहार पर नियंत्रण के रूप में कार्य करते हुए, पर्यावरणीय उल्लंघनों को चुनौती देने के लिए कानूनी तंत्र का उपयोग कर सकते हैं।

**सार्वजनिक सहभागिता :-** सार्वजनिक विरोध प्रदर्शनों, अभियानों और सोशल मीडिया के माध्यम से, नागरिक समाज जनता की राय जुटाता है, और निर्णय निर्माताओं पर पर्यावरणीय न्याय को गंभीरता से लेने के लिए दबाव डालता है।

**हाशिए पर रहने वाले समुदायों का समर्थन करना :-** नागरिक समाज संगठन अक्सर हाशिए पर रहने वाले समुदायों के साथ सीधे काम करते हैं, इन समुदायों को उनके पर्यावरणीय अधिकारों की वकालत करने में मदद करने के लिए सहायता और संसाधन प्रदान करते हैं।

यह सुनिश्चित करने में नागरिक समाज की भूमिका महत्वपूर्ण है कि पर्यावरणीय न्याय केवल एक सैद्धांतिक अवधारणा नहीं बल्कि एक व्यावहारिक वास्तविकता है। यह नीति और कार्यान्वयन के बीच अंतर को पाटने में मदद करता है, यह सुनिश्चित करता है कि पर्यावरणीय अधिकारों को बरकरार रखा जाए और संरक्षित किया जाए, खासकर उन लोगों के लिए जो पर्यावरणीय क्षति के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील हैं।

### **सरकारों की भूमिका और कॉर्पोरेट जिम्मेदारी :-**

#### **मानवाधिकारों और पर्यावरण की रक्षा में सरकारों और निगमों की जिम्मेदारियों का विश्लेषण :**

मानवाधिकारों और पर्यावरण दोनों की सुरक्षा में सरकारों और निगमों की अलग-अलग लेकिन परस्पर संबंधित भूमिकाएँ हैं। इन दो डोमेन के प्रतिच्छेदन पर जटिल चुनौतियों का समाधान करने के लिए उनकी संबंधित जिम्मेदारियों को समझना महत्वपूर्ण है।

#### **1. सरकारी जिम्मेदारियाँ :-**

**विधान और विनियमन :** पर्यावरण और मानवाधिकारों की रक्षा करने वाले कानूनों और विनियमों को बनाना और लागू करना सरकारों का प्राथमिक कर्तव्य है। इन कानूनों में पर्यावरण नियम, श्रम कानून और मानवाधिकार सुरक्षा शामिल हैं। सरकारों को एक कानूनी ढाँचा बनाना चाहिए जो जिम्मेदार व्यवहार के लिए मानक निर्धारित करे।

**प्रवर्तन और अनुपालन :** सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार है कि कानूनों और विनियमों का पालन किया जाए। इसमें पर्यावरण मानकों, श्रम अधिकारों और मानवाधिकार सुरक्षा की निगरानी और अनुपालन लागू करना शामिल है। सरकारों के पास उल्लंघनों की जांच करने और अनुपालन न करने पर जुर्माना लगाने की क्षमता होनी चाहिए।

**सार्वजनिक हित की सुरक्षा :** सरकारें सार्वजनिक हित की संरक्षक होती हैं। उन्हें समाज की जरूरतों, पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक विकास के बीच संतुलन बनाना होगा। इसके लिए ऐसे निर्णय लेने की आवश्यकता है जो नागरिकों और पर्यावरण की भलाई को सर्वोपरि माने।

**न्याय तक पहुंच :** सरकारों को व्यक्तियों और समुदायों को उनके अधिकारों का उल्लंघन होने पर कानूनी निवारण पाने के लिए रास्ते उपलब्ध कराने चाहिए। न्याय तक पहुंच यह सुनिश्चित करती है कि प्रभावित लोग पर्यावरण और मानवाधिकारों के दुरुपयोग के लिए निगमों और राज्य को जिम्मेदार ठहरा सकते हैं।

#### **2. कॉर्पोरेट जिम्मेदारियाँ :-**

**कानूनों और विनियमों का अनुपालन :** निगमों को सरकारों द्वारा स्थापित कानूनी ढाँचे के भीतर काम करना चाहिए। इसमें पर्यावरण नियमों, श्रम कानूनों और मानवाधिकार मानकों का पालन करना शामिल है। अनुपालन एक मौलिक जिम्मेदारी है।

**कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) :** कानूनी अनुपालन से परे, सीएसआर के अभ्यास में निगमों की भूमिका होती है। इसमें पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने, मानवाधिकारों का सम्मान करने और समाज में सकारात्मक योगदान देने के लिए स्वेच्छा से कदम उठाना शामिल है। सीएसआर पहल में स्थिरता प्रथाएं, सामुदायिक जुड़ाव और नैतिक आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन शामिल हो सकते हैं।

**पर्यावरणीय प्रबंधन :** निगमों से अपने पारिस्थितिक पदचिह्न को कम करने की अपेक्षा की जा रही है।

इसमें स्थायी संसाधन प्रबंधन, उत्सर्जन को कम करना और पर्यावरण की दृष्टि से जिम्मेदार प्रथाओं को अपनाना शामिल है।

**मानवाधिकारों का सम्मान :** निगमों की जिम्मेदारी है कि वे अपने संचालन के सभी पहलुओं में मानवाधिकारों का सम्मान करें। इसमें श्रम अधिकार, गैर-भेदभाव, उचित वेतन और सुरक्षित कार्य परिस्थितियाँ शामिल हैं।

**पारदर्शिता और जवाबदेही :** निगमों को अपने पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभावों के बारे में पारदर्शी होना चाहिए, जिससे हितधारकों को उनके प्रदर्शन का आकलन करने की अनुमति मिल सके। जवाबदेही तंत्र, जैसे रिपोर्टिंग और तृतीय-पक्ष ऑडिट, अनुपालन सुनिश्चित करने में मदद करते हैं।

### **विनियामक ढाँचे और कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व :-**

विनियामक ढाँचे वह आधार हैं जिस पर सरकारें कॉर्पोरेट व्यवहार के लिए अपेक्षाएँ और मानक निर्धारित करती हैं। वे कानूनी संरचना प्रदान करते हैं जिसके अंतर्गत निगम संचालित होते हैं। नियामक ढाँचे देश के अनुसार अलग-अलग होते हैं और इसमें पर्यावरण संरक्षण कानून, श्रम कानून और मानवाधिकार कानून शामिल हो सकते हैं।

कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) इन विनियमों का पूरक है। यह नैतिक प्रथाओं के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतिनिधित्व करता है जो कानूनी दायित्वों से परे हैं। सीएसआर को अक्सर निगमों के लिए पर्यावरण और मानवाधिकार संबंधी चिंताओं को सक्रिय रूप से संबोधित करने के एक तरीके के रूप में देखा जाता है। हालांकि यह स्वैच्छिक है, यह कंपनी की प्रतिष्ठा और सामाजिक प्रभाव को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ा सकता है।

एक आदर्श परिदृश्य में, सरकारी नियम न्यूनतम मानक निर्धारित करते हैं, और सीएसआर पहल मानक बढ़ाती है, जिससे निगमों को समाज और पर्यावरण में सकारात्मक योगदान देने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इन जिम्मेदारियों को संतुलित करने से यह सुनिश्चित होता है कि सरकारें और निगम दोनों आर्थिक विकास और सतत विकास को बढ़ावा देते हुए मानव अधिकारों और पर्यावरण की रक्षा के लिए मिलकर काम करते हैं।

### **चुनौतियाँ और आलोचनाएँ :-**

**मानवाधिकारों और पर्यावरण के अंतर्संबंध से संबंधित सामान्य चुनौतियों और आलोचनाओं को संबोधित करना :**

मानवाधिकारों और पर्यावरण का अंतर्संबंध चुनौतियों और आलोचनाओं से रहित नहीं है। इन दो डोमेन के बीच जटिल संबंधों की व्यापक समझ के लिए इन मुद्दों को स्वीकार करना आवश्यक है।

#### **1. आर्थिक चिंताएँ :-**

**चुनौती :** प्राथमिक आलोचनाओं में से एक यह है कि पर्यावरण संरक्षण उपाय आर्थिक हितों के साथ टकराव कर सकते हैं। कुछ लोगों का तर्क है कि कड़े पर्यावरण नियम आर्थिक विकास और रोजगार सृजन में बाधा बन सकते हैं, खासकर उच्च पर्यावरणीय प्रभाव वाले उद्योगों में।

**हितों में संतुलन :** पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक विकास के बीच संतुलन बनाना चुनौतीपूर्ण लेकिन आवश्यक है। सतत विकास मॉडल का लक्ष्य पर्यावरणीय क्षति को कम करते हुए आर्थिक विकास को बढ़ावा देकर इन हितों में सामंजस्य स्थापित करना है।

## 2. नियामक प्रभावशीलता :-

**चुनौती** : आलोचक अक्सर पर्यावरण नियमों की प्रभावशीलता और उनके कार्यान्वयन पर सवाल उठाते हैं। कमजोर या असंगत नियम, ढीला प्रवर्तन, और शक्तिशाली उद्योगों द्वारा नियामक कब्जा पर्यावरण सुरक्षा को कमजोर कर सकता है।

**पारदर्शिता और जवाबदेही** : नियामक ढांचे को मजबूत करना, पारदर्शिता बढ़ाना और अनुपालन के लिए सरकारों और निगमों को जवाबदेह बनाना इस चुनौती से निपटने के लिए आवश्यक कदम हैं।

## 3. न्याय तक पहुंच :-

**चुनौती** : कई क्षेत्रों में, विशेष रूप से ग्लोबल साउथ में, हाशिए पर रहने वाले समुदायों को न्याय तक पहुंचने में बाधाओं का सामना करना पड़ता है, जब शक्तिशाली संस्थाओं द्वारा उनके अधिकारों का उल्लंघन किया जाता है। कानूनी प्रणालियाँ जटिल, महंगी और वंचितों के प्रति पक्षपाती हो सकती हैं।

**कमजोर समुदायों को सशक्त बनाना** : इस चुनौती से निपटने के लिए कमजोर समुदायों को सशक्त बनाने, कानूनी सहायता प्रदान करने और न्याय प्रणालियों तक पहुंच में सुधार करने के प्रयासों की आवश्यकता है। इसमें प्रणालीगत असमानताओं को पहचानना और सुधारना भी शामिल है।

## 4. नैतिक विचार :-

**चुनौती** : पर्यावरण और मानवाधिकार संबंधी चिंताओं को संतुलित करने का नैतिक आयाम जटिल है। उदाहरण के लिए, सवाल उठते हैं कि क्या विकासशील देशों में ऊर्जा तक पहुंच की तुलना में विकसित देशों में कार्बन उत्सर्जन में कटौती को प्राथमिकता देना नैतिक है।

**समानता और न्याय** : नैतिक विचार समानता और न्याय के सिद्धांतों के इर्द-गिर्द घूमना चाहिए। जलवायु परिवर्तन जैसी वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग महत्वपूर्ण है, जिसमें राष्ट्रों की विभिन्न परिस्थितियों और जिम्मेदारियों पर विचार किया जाता है।

## 5. राजनीतिक इच्छाशक्ति और अल्पकालिक रूचियाँ :-

**चुनौती** : राजनीतिक इच्छाशक्ति अक्सर अल्पकालिक चुनावी चक्रों और आर्थिक हितों से प्रभावित हो सकती है, जिससे पर्यावरण और मानवाधिकार मुद्दों पर अपर्याप्त या असंगत कार्रवाई हो सकती है।

**सार्वजनिक दबाव और वकालत** : नागरिक समाज, पर्यावरण कार्यकर्ता और जागरूक नागरिक अल्पकालिक लाभ पर दीर्घकालिक हितों को प्राथमिकता देने के लिए सरकारों और निगमों पर दबाव डाल सकते हैं। परिवर्तन के लिए सार्वजनिक भागीदारी एक शक्तिशाली शक्ति है।

## 6. तकनीकी और वैज्ञानिक अनिश्चितता :-

**चुनौती** : कुछ मामलों में, पर्यावरणीय मुद्दों और उनके परिणामों के बारे में वैज्ञानिक अनिश्चितता का उपयोग कार्रवाई में देरी के लिए किया जा सकता है। एहतियाती सिद्धांत की कभी-कभी अत्यधिक सावधानी के रूप में आलोचना की जाती है।

**सावधानी और नवाचार** : एहतियाती सिद्धांत संभावित नुकसान होने पर जोखिम न लेने के विचार में निहित है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए इसे नवाचार और आगे के वैज्ञानिक अनुसंधान के साथ संतुलित किया जाना चाहिए।

इन चुनौतियों और आलोचनाओं को संबोधित करने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है जिसमें सरकारों, नागरिक समाज, निगमों और जनता के हितधारक शामिल हों। एक सहयोगी और सूचित संवाद को बढ़ावा देना आवश्यक है जो वैध चिंताओं और आलोचनाओं को संबोधित करते हुए मानवाधिकारों और पर्यावरण की रक्षा की जटिलताओं को दूर करता है।

**निष्कर्ष :-**

हमने मानव अधिकारों और पर्यावरण के बीच जटिल संबंधों का पता लगाया है, इन दो महत्वपूर्ण डोमेन के बीच गहन अंतरसंबंध को पहचानते हुए। कई प्रमुख बिंदु सामने आए हैं :

**मानवाधिकार और पर्यावरण की परस्पर निर्भरता :** मानवाधिकार और पर्यावरण अलग-अलग चिंताएँ नहीं हैं बल्कि गहराई से अन्योन्याश्रित हैं। पर्यावरण के क्षरण से मौलिक मानव अधिकारों का उल्लंघन हो सकता है, जिसमें जीवन, स्वास्थ्य और स्वच्छ पर्यावरण का अधिकार भी शामिल है।

**ऐतिहासिक विकास :** मानव अधिकार सदियों से विकसित हुए हैं, जो समानता, गरिमा और न्याय के बुनियादी सिद्धांतों में निहित हैं। 1948 में मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा उनकी वैश्विक मान्यता में एक महत्वपूर्ण क्षण था। हाल के दशकों में, प्राकृतिक दुनिया की रक्षा के महत्व को स्वीकार करते हुए, पर्यावरण आंदोलन ने इसी तरह गति पकड़ी है।

**पर्यावरणीय अधिकार :** पर्यावरणीय अधिकारों का उद्भव पर्यावरण के आंतरिक मूल्य और स्वस्थ और टिकाऊ पर्यावरण के लिए व्यक्तियों और समुदायों के अधिकारों की विकसित होती समझ को दर्शाता है। इन अधिकारों में स्वच्छ हवा, पानी तक पहुंच और प्रदूषण रहित वातावरण में रहने का अधिकार शामिल है।

**अंतर्राष्ट्रीय समझौते :** अंतर्राष्ट्रीय समझौते और संधियाँ, जैसे कि मानव अधिकारों की सार्वभौम घोषणा और पेरिस समझौता, मानव अधिकारों और पर्यावरण के प्रतिच्छेदन पर वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करते हैं। वे अंतरराष्ट्रीय सहयोग और साझा जिम्मेदारी की आवश्यकता पर जोर देते हैं।

**वास्तविक दुनिया के उदाहरण :** केस अध्ययन इस बात का उदाहरण देते हैं कि स्वदेशी भूमि अधिकारों और स्वच्छ पानी तक पहुंच से लेकर जलवायु-प्रेरित विस्थापन तक पर्यावरण और मानवाधिकार के मुद्दे कैसे एक दूसरे से जुड़ते हैं। ये उदाहरण इन चुनौतियों के जटिल कानूनी और नैतिक आयामों को उजागर करते हैं।

**पर्यावरणीय न्याय :** कमजोर आबादी अक्सर पर्यावरणीय अन्याय का खामियाजा भुगतती है, असंगत नुकसान का अनुभव करती है। पर्यावरण कार्यकर्ताओं और संगठनों सहित नागरिक समाज, इन अन्यायों को दूर करने और हाशिए पर रहने वाले समुदायों के अधिकारों की वकालत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

**सरकार और कॉर्पोरेट जिम्मेदारियाँ :** सरकारों की जिम्मेदारी है कि वे ऐसे कानून बनाएं और लागू करें जो मानव अधिकारों और पर्यावरण दोनों की रक्षा करते हैं। निगमों को इन नियमों का पालन करना चाहिए और अपने पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभाव को कम करने के लिए कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी का पालन करना चाहिए।

**चुनौतियाँ और आलोचनाएँ :** चुनौतियाँ और आलोचनाएँ, जैसे आर्थिक चिंताएँ और नियामक प्रभावशीलता, मानव अधिकारों और पर्यावरण के प्रतिच्छेदन पर मुद्दों की जटिलता को रेखांकित करती हैं। प्रतिस्पर्धी हितों को

संतुलित करने और इन चुनौतियों से निपटने के लिए एक सूक्ष्म दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

निष्कर्षतः, मानवाधिकारों और पर्यावरण की सुरक्षा के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो उनकी परस्पर निर्भरता को पहचाने। चुनौतियों और आलोचनाओं को कानूनी और नियामक ढांचे, कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी, सार्वजनिक भागीदारी और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के संयोजन के माध्यम से संबोधित किया जाना चाहिए। मानवता और ग्रह के बीच सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व न केवल संभव है बल्कि वर्तमान और भावी पीढ़ियों की भलाई के लिए आवश्यक भी है। अधिक न्यायसंगत, न्यायसंगत और टिकाऊ दुनिया की खोज के लिए सरकारों, निगमों, नागरिक समाज और व्यक्तियों की सामूहिक प्रतिबद्धता की आवश्यकता है।

#### संदर्भ :-

1. मानव अधिकारों की सार्वभौम घोषणा (1948)
2. पेरिस समझौता (2015) – जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन।
3. जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन, 2015
4. सिविल एवं राजनीतिक अधिकारों की प्रसंविदा, 1966
5. आर्थिक सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकारों की प्रसंविदा, 1966



# गांधीवादी सिद्धांतों के अनुसार पर्यावरण-अनुकूल कृषि

कविता

सहायक आचार्य, डॉ. तनवीर मालावत महाविद्यालय, बीकानेर।

## शोध-सार :-

महात्मा गांधी ने पीढ़ियों को दुनिया में शांति और सद्भाव बनाए रखने के लिए प्रेरित किया है। कृषि और ग्रामीण विकास के बारे में उनका दृष्टिकोण समावेशी विकास और सामूहिक शासन की रणनीति के रूप में विश्व स्तर पर प्रशंसित है। गांवों में कृषि-उद्योगों का विकास, ग्रामीण नवाचारों को बढ़ाना और कौशल विकास और शिक्षा के माध्यम से लोगों का सशक्तिकरण ग्रामीण क्षेत्रों की समृद्धि और गरीबी में कमी के केंद्र में थे। वैश्विक अनुभव से पता चला है कि विकेंद्रीकरण और ग्रामीण औद्योगीकरण के मार्ग पर चलने वाले देशों ने तेजी से आर्थिक विकास और गरीबी में कमी हासिल की है। भारत में, पंचायती राज संस्थाओं के विकास ने लोकतंत्र के तीसरे स्तर की मजबूती, सहभागी विकास और महिलाओं के सशक्तिकरण पर अपना प्रभाव दिखाया है।

प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाकर कृषि का विकास, संसाधनों का सतत उपयोग और बाजार जनित भेद्यता से सुरक्षा सतत विकास के मुख्य स्तंभ रहे हैं। कृषि के ये बुनियादी सिद्धांत तब भी प्रासंगिक हैं जब अस्थिर बाजारों से इतना जोखिम उत्पन्न हो रहा है। तकनीकी प्रगति कृषि उत्पादकता में सतत वृद्धि और जोखिम को कम करने में उपयोगी रही है। देश की शीर्ष संस्था भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) ने गांधीवादी सिद्धांतों का पालन करते हुए नवाचार आधारित कृषि विकास में योगदान दिया है। अनुकूल उत्पादन वातावरण का विकास, संसाधन-गरीब किसानों की जरूरतों को संबोधित करना, ग्रामीण आजीविका को बढ़ावा देना, महिलाओं सहित किसानों का कौशल विकास, कुछ महत्वपूर्ण लाभ रहे हैं।

महात्मा गांधी का दृढ़ विश्वास था कि कृषि और किसानों की समृद्धि से देश की आर्थिक समृद्धि का मार्ग प्रशस्त होना चाहिए। भारत और अन्य विकासशील देशों में अपनाई जाने वाली कृषि विकास प्रक्रिया में इस विश्वास की पुष्टि की गई है। अब साक्ष्य उपलब्ध हैं जो दर्शाते हैं कि कृषि विकास का गरीबी में कमी और सामाजिक और आर्थिक समानता को बढ़ावा देने पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। कोविड-19 की महामारी ने यह स्थापित कर दिया है कि कृषि आर्थिक झटकों को सहने और आर्थिक विकास के लिए लचीलापन बनाने का एक मजबूत स्तंभ है।

## परिचय :-

मनुष्यों ने उच्च क्षमताओं वाली परिष्कृत वैज्ञानिक और तकनीकी सफलताओं से दुनिया की नियति को आकार दिया है। अब वे रोबोट-नियंत्रित संयंत्रों, अंतरिक्ष कॉलोनियों, मानव बुद्धि से मेल खाने वाले कंप्यूटरों

आदि की प्रतीक्षा कर रहे हैं। भोजन की खपत और उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि ने विश्व स्तर पर पर्यावरणीय तनाव (जलवायु परिवर्तन, ओजोन परत की कमी, अम्लीय वर्षा, महासागरों का अम्लीकरण) को जन्म दिया है; साथ ही स्थानीय स्तर पर (वायु, जल और मिट्टी का प्रदूषण और मरुस्थलीकरण)। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) वैश्विक पर्यावरण की अनिश्चित स्थिति के लिए आगाह करता है। सवाल उठ रहे हैं कि क्या पर्यावरण और उसके गैर-नवीकरणीय संसाधनों की कीमत पर विकास टिकाऊ है और वैज्ञानिक एवं अन्य तकनीकी क्षेत्रों में प्रगति ऐसी स्थिति पर आधारित है जहां मनुष्य और मशीन का सहयोग एक-दूसरे के साथ मौजूद है या मशीन मानव पर हावी हो गई है?

विकास, पर्यावरण और गरीबी के बीच अंतर-संबंध को पर्यावरण और विकास पर विश्व आयोग द्वारा भी पहचाना गया है, और माना गया है कि 'गरीबी वैश्विक पर्यावरणीय समस्या के संकेतकों में से एक है'। दुनिया और विशेष रूप से भारत आज पर्यावरणीय गिरावट के हानिकारक प्रभावों का सामना कर रहा है जिसकी कल्पना गांधीजी ने 1900 के दशक की शुरुआत में की थी। उस समय पर्यावरण की स्थिति स्वच्छ एवं शुद्ध थी। बापू ने देखा कि आने वाली आपदा के रूप में दुनिया अधिक गर्म हो जाएगी (हिंद स्वराज 1909)। उन्होंने यह भी कहा कि उस दौरान प्रचलित प्रवृत्ति के जारी रहने से दुनिया भीड़-भाड़ वाली, प्रदूषित, पारिस्थितिक रूप से कम स्थिर और व्यवधान के प्रति अधिक संवेदनशील हो सकती है।

वायु प्रदूषण के प्रभाव के बारे में भी बापू को जानकारी थी, उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि प्रकृति ने ताज़ी हवा मुफ्त में प्रदान की है लेकिन वर्तमान सभ्यता ने इसकी कीमत बढ़ा दी है। 1 जनवरी, 1918 को अहमदाबाद की बैठक में उन्होंने हवा, पानी और भोजन की शुद्धता की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा, 'हम आम तौर पर हवा, पानी, भोजन और स्वच्छता के बारे में लापरवाह हैं' और गंगा नदी के बारे में राय दी कि 'गंगा नदी में कपड़े धोने और शौच करने की प्रकृति लापरवाही का दर्शाती है और इससे हवा और पानी का प्रदूषण होता है साथ ही यह धर्म को नष्ट कर देगा'।

इस शोध-पत्र में पर्यावरण पर महात्मा गांधी जी के दृष्टिकोण पर दोबारा गौर किया, पर्यावरण संरक्षण पर गांधीजी के प्रयासों की प्रशंसा की, पर्यावरण-अनुकूल कृषि को बढ़ावा देने के लिए आईसीएआर के योगदान का आकलन करने के साथ ही पर्यावरण और कृषि पर राष्ट्रीय नीतियों के प्रभाव का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

### **पर्यावरण पर महात्मा गांधी जी का दृष्टिकोण :-**

आधुनिक अर्थों में गांधीजी पर्यावरणविद् नहीं थे और वर्तमान के बड़े पर्यावरण संबंधी मुद्दे गांधी जी के बाद के काल में उभरे। जीवन की गुणवत्ता को खोए बिना भी, पर्यावरणीय दुष्प्रभावों को और अधिक बिगड़ने से रोकने के लिए उनके आदर्शों को लागू किया जा सकता है। वह गहन पारिस्थितिक संवेदनशीलता वाले विचारक थे। बापू ने दुनिया को व्यक्तियों की इच्छाओं के साथ प्रकृति के सामंजस्य की एक नई दृष्टि दी। बापू चार सिद्धांतों में विश्वास करते थे। सत्याग्रह (सत्य, अहिंसा पर कायम रहना, शांति से लड़ना), सर्वोदय (सार्वभौमिक उत्थान), स्वराज (स्व-शासन या स्व-शासन) और स्वदेशी (आत्मनिर्भरता)।

पर्यावरण के प्रति उनकी चिंता उनके भाषणों, लेखों और उनके संदेशों में स्पष्ट दिखती थी। उन्होंने एक बार कहा था, 'पृथ्वी, भूमि, जल और वायु जैसे प्राकृतिक संसाधन हमारे पूर्वजों से प्राप्त नहीं हैं, बल्कि यह हमारे

बच्चों से लिया गया ऋण है और हमें उन्हें वैसे ही सौंपना है जैसे हमने प्राप्त किया है।' वह संभवतः 'दृष्टि और व्यवहार में दुनिया के शुरुआती पर्यावरणविदों' में से एक थे। भारत में कई पर्यावरण आंदोलन गांधीजी से प्रेरित थे। भारत में पर्यावरण की रक्षा के लिए चिपको आंदोलन और नर्मदा बचाओ आंदोलन जैसे प्रमुख आंदोलनों ने महात्मा गांधी से प्रेरणा ली। आज जब दुनिया सतत् विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को प्राप्त करने की बात कर रही है, तो गांधीवादी विचार तेजी से प्रासंगिक हो गए हैं। गांधी जी ने हालांकि स्वराज या स्व-शासन पर एक यथार्थवादी टिकाऊ विकास दिखाया, जिसे जीवन की गुणवत्ता का त्याग किए बिना स्वीकार किया जा सकता है। उनका विचार था कि व्यक्तियों द्वारा बड़े पैमाने पर उत्पादन, जनता द्वारा किए जाने वाले उत्पादन से बेहतर नहीं है, जिससे पर्यावरण को कम नुकसान के साथ एक आर्थिक प्रणाली का विकास होता है, जो सतत् विकास की उपलब्धि में मदद करता है।

उन्होंने समग्र सतत् विकास के बारे में बात की और अपने अनुयायियों को पारिस्थितिकी, प्रदूषण और गैर-नवीकरणीय संसाधनों की कमी की समस्याओं के बारे में बताया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि मनुष्य को प्रकृति के साथ सहयोग करने की आवश्यकता को पहचानना चाहिए और मानव सभ्यता की निरंतरता के लिए पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना चाहिए। पशु जीवन और मानव जीवन पूरी तरह से परस्पर जुड़े हुए हैं और दोनों को लंबे समय तक जीवित रहने के लिए एक-दूसरे की आवश्यकता है क्योंकि विज्ञान और कृत्रिम तकनीक प्रकृति के तरीकों को प्रतिस्थापित करके मानव जीवन की निरंतरता प्रदान करने में असमर्थ हैं।

महात्मा गांधी प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने प्राकृतिक संसाधनों और इसके संरक्षण पर मानव और पर्यावरण संबंधों के महत्व पर जोर दिया। गांधी जी ने कहा था कि प्रकृति प्रेरणा के लिए सबसे अच्छा उदाहरण है और मुझे प्रकृति को स्वीकार करने के लिए किसी अन्य से प्रेरणा की आवश्यकता नहीं है, उसने मुझे अभी तक कभी निराश नहीं किया है, वह मुझे रहस्यमय बनाती है, मुझे भ्रमित करती है, मुझे परमानंद में भेजती है। वर्तमान काल में गांधीवादी दर्शन का महत्व भली-भांति महसूस किया जा रहा है, जिसमें मनुष्य की जीवनशैली उच्च उपभोक्तावाद और अपशिष्ट उत्पादन की दिशा में विकसित हो गई है।

सत्य (सत्य) और अहिंसा (अहिंसा) के विचार, गांधीजी द्वारा इतनी गहराई से प्रचारित किए गए कि उन्होंने सभी जीवित प्राणियों को शामिल कर लिया। एक बार अंग्रेज इतिहासकार एडवर्ड थॉमसन ने गांधीजी से कहा कि भारत में वन्य जीवन तेजी से कम हो रहा है। गांधीजी ने अपने विशिष्ट व्यंग्यात्मक अंदाज में उत्तर दिया, 'जंगलों में वन्य जीवन कम हो रहा है, लेकिन शहरों में बढ़ रहा है। सर्वोदय की उनकी अवधारणा, जिसे हम आज सतत् विकास कहते हैं, का तात्पर्य स्वस्थ विकास और पर्यावरण से है।

उन्होंने जो उपदेश दिया और उस पर अमल किया, वह उसी से मेल खाता है जिसे आज हम पर्यावरण-अनुकूल विकास कहते हैं। 'सादा जीवन' प्रसिद्ध गांधीवादी नुस्खा है जो मानव लालच और अतिरेक को रोकने और प्राकृतिक संसाधनों के दृष्टिहीन हेरफेर को रोकने में मदद करता है। गांधी जी वनों की कटाई और नवीकरणीय संसाधनों और रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग के विनाशकारी प्रभावों की भविष्यवाणी कर सकते थे, जिससे मिट्टी, पानी और वायु का प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग और मरुस्थलीकरण हो रहा था। अहिंसा में उनके दृढ़ विश्वास में असीमित पारिस्थितिक क्षमता है।

इस विश्वास के एक विशेष परिणाम के रूप में शाकाहार के साथ अहिंसा की उनकी विचारधारा में उन

सभी जीवित प्राणियों की सुरक्षा शामिल है जो जीवन की विविधता (जैव विविधता) में योगदान करते हैं। स्वदेशी गांधीवादी नीति है जिसने स्थानीय वस्तुओं के उपयोग के माध्यम से आत्मनिर्भरता को बढ़ावा दिया और भारत में अर्थव्यवस्था और रोजगार को आगे बढ़ाने का रास्ता दिखाया। जबकि भारत की जैव विविधता का विनाश बड़े पैमाने पर औद्योगीकरण के कारण हुआ था, स्वदेशी अवधारणा को सोच-समझकर और व्यवस्थित रूप से लागू करने से पर्यावरण के अनुकूल और टिकाऊ विकास मॉडल को बढ़ावा देने में काफी मदद मिली होगी। वह मानव स्वास्थ्य पर वायुमंडलीय प्रदूषण के प्रभाव के बारे में गहराई से चिंतित थे और वह विनिर्माण उद्योगों में अनिश्चित कामकाजी परिस्थितियों के बारे में चिंतित थे, जहां कर्मचारियों को दूषित और जहरीली हवा में सांस लेने के लिए मजबूर होना पड़ता था।

### **जैविक खेती में गांधीजी के सिद्धांतों की प्रासंगिकता और अनुप्रयोग :-**

स्वस्थ जीवन के लिए आवश्यक सभी बुनियादी बातों में ग्राम स्तर पर पूर्ण आत्मनिर्भरता 'ग्राम स्वराज' के तहत महात्मा का सपना था। प्रसिद्ध उद्धरणों के रूप में महात्मा के कुछ महत्वपूर्ण विचार जैसे 'जहाँ सोशन (या उत्पीड़न) है, वहाँ कोई पोषण नहीं हो सकता' जैविक खेती, कम बाहरी इनपुट आधारित कृषि का तात्पर्य और सीधे प्रासंगिक है। इनमें से कई वर्तमान संदर्भ में अधिक प्रासंगिक हैं क्योंकि उत्पादन के अलावा, स्थिरता और पर्यावरण अनुकूल कृषि संचालन और उत्पादन प्रणालियों जैसे अन्य मुद्दों पर न केवल भारत में बल्कि दुनिया भर में उचित जोर दिया जा रहा है।

गांधीजी ने कहा, 'पृथ्वी को कैसे खोदना है और मिट्टी की देखभाल कैसे करनी है यह भूलना खुद को भूल जाना है' और यह भूमि की तैयारी और जुताई के महत्व को बताता है, जो उष्णकटिबंधीय कंद फसलों में किसी भी अच्छे जैविक खेती कार्यक्रम में बुनियादी पहलू हैं क्योंकि आर्थिक उपज कम रहती है।

इन फसलों को 'छिपे हुए खजाने वाली भूमिगत फसलें' के रूप में नामित किया गया है, उच्च कंद उपज के लिए, मिट्टी के भौतिक गुणों में सुधार की आवश्यकता है, जो बड़े पैमाने पर जैविक कृषि में हासिल किया जाता है। इसके अलावा, जैविक खेती में, मिट्टी को पोषण दें, न कि फसलों को, जैसा कि उपरोक्त उद्धरण में अच्छी तरह से बताया गया है।

### **सतत कृषि पर राष्ट्रीय मिशन (एनएमएसए) :-**

जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना (एनएपीसीसी) एनएमएसए के तहत जलवायु परिवर्तन के लिए भारत की कृषि प्रणालियों के अनुकूलन और शमन दृष्टिकोण पर केंद्रित है। यह मिशन स्थायी कृषि चिंताओं को हल करना चाहता है और बेहतर आजीविका के अवसर, खाद्य सुरक्षा और आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए उपयुक्त अनुकूलन रणनीतियाँ स्थापित करने का प्रयास करता है। एनएमएसए ने 10 मुख्य क्षेत्रों की पहचान की है जहां उन्नत कृषि प्रथाओं, पोषक तत्व प्रबंधन, जल उपयोग दक्षता, एकीकृत कीट प्रबंधन के क्षेत्र में अनुकूलन लागू किया गया है; उन्नत फसल बीज, पशुधन और मछली पालन; ऋण समर्थन; बाजार; कृषि बीमा; सूचना तक पहुंच और आजीविका विविधीकरण।

### **वर्षा आधारित क्षेत्र विकास (आरएडी) :-**

आरएडी को वर्षा आधारित क्षेत्रों में कृषि विकास सुनिश्चित करने के लिए लॉन्च किया गया है, और एकीकृत कृषि प्रणाली (आईएफएस) पर ध्यान केंद्रित किया गया है। यह कृषि प्रणाली उत्पादकता बढ़ाने और

जलवायु परिवर्तनशीलता के जोखिमों को कम करने के लिए उपयोगी है। इसे कृषि वानिकी, मत्स्य पालन, पशुधन, बागवानी और मधुमक्खी पालन जैसी फसलों/फसल प्रणाली के साथ एकीकृत किया जा सकता है ताकि किसान की आजीविका में सुधार हो सके और बाहरी जलवायु जैसे बाढ़ और सूखे के नकारात्मक प्रभाव का समाधान भी हो सके।

### **प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (पीएमकेएसवाई) :-**

पीएमकेएसवाई का उद्देश्य न केवल सुनिश्चित सिंचाई स्रोतों की स्थापना करना है, बल्कि इसका उद्देश्य अपने घटकों 'जल संचय' और 'जल सिंचन' के माध्यम से सूक्ष्म स्तर पर वर्षा जल संचयन द्वारा सुरक्षात्मक सिंचाई बनाना भी है। योजना के तहत सूक्ष्म सिंचाई को लोकप्रिय बनाकर 'प्रति बूंद-अधिक फसल' सुनिश्चित की जाती है। पीएमकेएसवाई राज्यों को जिला और राज्य सिंचाई योजनाओं के आधार पर सिंचाई के विकास के लिए अपना ढांचा तैयार करने में सक्षम बनाता है।

### **पर्यावरण और कृषि पर राष्ट्रीय नीतियों पर गांधी जी का प्रभाव :-**

आजादी के बाद से हमारे देश ने जलवायु-लचीलापन से संबंधित कृषि और पर्यावरण के सतत विकास के साथ-साथ लघु और दीर्घकालिक खाद्य सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित किया है, बापू का मार्ग और रणनीतियां बेहद उपयोगी होंगी। सरकार की प्रमुख पहल पर्यावरण-अनुकूल और जलवायु-लचीली कृषि विकसित करने के लिए भारत में गांधीजी के अंतर्निहित सिद्धांत हैं। भारत में अधिकांश पर्यावरण आंदोलनों ने उनके आदर्शों और रणनीतियों से प्रेरणा ली। चिपको आंदोलन में वनों की कटाई के विरुद्ध इस्तेमाल किया गया वन सत्याग्रह इसका एक अच्छा उदाहरण है। प्रकृति को बचाने के लिए पदयात्राएं और अनशन किये गये। बाबा आमटे, चंडी प्रसाद भट्ट, सुंदरलाल बहुगुणा, मेधा पाटकर और अन्य पर्यावरण कार्यकर्ता अहिंसा और आत्म-बलिदान पर आधारित विवाद समाधान रणनीतियों का उपयोग कर रहे हैं।

### **निष्कर्ष :-**

गांधीवादी दृष्टिकोण का सार प्रकृति को मानवता का मित्र और हितैषी मानना था। एक सदी पहले के व्यक्ति के पास स्थिरता और पर्यावरण संबंधी चिंताओं का दृष्टिकोण था। भारतीय अर्थव्यवस्था की बुनियादी समस्याओं का विश्लेषण करने पर यह पाया गया है कि आय का असमान वितरण, बेरोजगारी, गरीबी, असमानता का स्वरूप अभी भी वैसा ही है जैसा तब था जब गांधीजी सभी समस्याओं के समाधान के रूप में चरखा चलाने की वकालत करते थे। इसलिए, खादी और ग्रामोद्योग पर उनका ध्यान एक अस्थायी उपाय नहीं था, बल्कि भारत की बेरोजगारी और गरीबी की मूल समस्याओं का एक स्थायी समाधान था। इसमें कोई संदेह नहीं है कि हमें स्थायी दृष्टिकोण अपनाकर अपने ग्रह को प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों से बचाने की जरूरत है। हमें बापू के सत्याग्रह, सर्वोदय, स्वराज और स्वदेशी के सिद्धांतों पर चलने की जरूरत है। आईसीएआर, अपने संस्थानों और विश्वविद्यालयों के साथ, ग्रामीण आजीविका और पर्यावरण पर पर्याप्त सकारात्मक प्रभावों के साथ अपनी स्थापना के बाद से प्राकृतिक संसाधन संरक्षण और पर्यावरण संरक्षण के अनुसंधान और विकास में लगा हुआ है।



# गांधी एक विचार

डॉ. कप्तान चन्द

सह-आचार्य (विधि), ४-अ-१८, पवनपुरी, बीकानेर।

वो गांधी ही था जिसने गरीबों को गले लगाया।  
वो गांधी ही था जिसने अहिंसा से स्वराज दिलाया।।  
वो गांधी ही था जिसने गुरबत में गुजारे दिन।  
वो गांधी ही था जिसने 'हे राम' कहली सांस अंतिम।।  
वो गांधी ही था जो आज विचार बना।  
वो गांधी ही था जिसने चरखे से देश बुना।।  
गांधी कटिंग का फैशन भी खूब देखा चला।  
गांधी का चश्मा ही आज स्वच्छता का प्रतीक बना।। (kcc)

गांधी एक व्यक्ति नहीं बल्कि विचार है। हमने देखा है भारत ही नहीं बल्कि विदेशों में भी गांधी जी का बहुत नाम है। उन्होंने नाम कमाया आज देश की आजादी के ७५ वर्षों बाद भी गांधी को जानने वालों की संख्या बढ़ती ही जा रही है क्योंकि गांधी एक शख्सियत है उन्होंने प्रत्येक मनुष्य को ईश्वर का प्रतिरूप माना जो मानवाधिकार के पक्षधर थे इसी वजह से गांधी जी को हर तबके का व्यक्ति याद करता है शायद ही कोई ऐसा हो जो गांधी जी के विचारों का विरोध करता हो। क्योंकि वे अपने पूरे जीवन काल में वंचितों की पैरवी करते रहे और उनके हक के लिए प्रयासरत भी रहे वे हमेशा हर वंचित वर्ग के उत्थान के लिए तात्कालिक सरकार से नियम बनाने का आग्रह करते थे।

## मानवाधिकारों के लिए गांधीवादी पहल :-

ऐसी कुछ घटनाएं हुईं जिनका गांधी जी पर गहरा प्रभाव पड़ा जैसे पहली घटना 1893 में दक्षिण अफ्रीका में, दूसरी 1956 में संयुक्त राज्य अमेरिका में – जिसने दुनिया में मानवाधिकारों के लिए नागरिक अधिकारों के आंदोलन के इतिहास को बदल दिया, (1) दक्षिण अफ्रीका में पीटर मैरिट्ज बर्ग में मोहनदास गांधी को ट्रेन से बेदखल करना एक प्रथम श्रेणी के डिब्बे में यात्रा करने की हिम्मत करने के लिए, और (2) श्रीमती रोजा पार्क्स द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका के अलबामा में मोंटगोमरी में एक सार्वजनिक बस में सीट खाली करने से इंकार करने और इस 'अपराध' के लिए जुर्माना लगाने की उनकी तत्परता के लिए' उसने प्रतिबद्ध किया था। आश्चर्यजनक

रूप से, कुछ मानवाधिकार कार्यकर्ताओं और नागरिक अधिकारों के समर्थकों ने नागरिकों को समान नागरिक अधिकार सुनिश्चित करने के लिए मानवता की यात्रा के दौरान इन दो समान घटनाओं के भारी प्रभाव का अध्ययन करने की परवाह की है और बुनियादी अधिकारों के विद्रोह में उठने के लिए मानव भावना की प्रबल इच्छा का अध्ययन किया है।

ट्रेन की घटना के अलावा, जिसने गांधी को दक्षिण भारत में उनकी प्रतीक्षा की जाने वाली चीजों का स्वाद दिया, ऐसी कई घटनाएं थीं, जिन्होंने अस्पृश्यता के अमानवीय चेहरे को उजागर किया, जैसा कि दक्षिण अफ्रीका में गोरे शासकों द्वारा किया जाता था। अदालत में पहला झटका तब लगा जब उनसे पगड़ी उतारने को कहा गया। कुछ ही समय बाद उन्हें एक पड़ोसी क्षेत्र, ट्रांसवाल में काम करने के लिए बाहर भेज दिया गया। 1893 में ट्रांसवाल में प्रथम श्रेणी में यात्रा करने वाला एक अश्वेत व्यक्ति एक अपराध था और युवा बैरिस्टर गांधी को निम्न वर्ग में जाने के लिए कहा गया था।

गांधी ने कहा, 'मुझे डरबन में इस डिब्बे में यात्रा करने की अनुमति दी गई थी, और मैं इसमें जाने का आग्रह करता हूँ।' रेलवे अधिकारी ने कहा 'नहीं, आप नहीं करेंगे। आपको इस डिब्बे को छोड़ना होगा, अन्यथा मुझे आप को बाहर धकेलने के लिए एक पुलिस कांस्टेबल को बुलाना होगा'।

गांधी अडिग रहे और बोले, 'हां, आप कर सकते हैं। मैं स्वेच्छा से बाहर निकलने से इनकार करता हूँ।'

गांधी को ट्रेन से उतार दिया गया और उनका सामान प्लेटफॉर्म पर फेंक दिया गया। रात ठंडी थी और गांधी का ओवरकोट उनके सामान में था, लेकिन उन्हें डर था कि कहीं उनका फिर से अपमान न हो जाए। उन्होंने विचार किया कि क्या उन्हें अपना काम छोड़कर भारत वापस जाना चाहिए। लेकिन उनके दिमाग में यह आया कि जो अपमान किया गया है वह केवल सतही चीज है, और उसके नीचे रंग के प्रति पूर्वाग्रह का गहरा रोग है; और उसने फैसला किया कि उसे न केवल अपना काम जारी रखना चाहिए, बल्कि खुद को कष्ट सहने के लिए भी तैयार रहना चाहिए ताकि बीमारी खुद-ब-खुद जड़ से खत्म हो जाए।

सुबह वहां के भारतीय व्यापारी उन्हें सांत्वना देने आए थे। उन्होंने उन्हें अपनी कठिनाई की कहानियों के साथ सांत्वना दी। शाम को गांधी ने फिर से ट्रेन पकड़ी और बिना किसी परेशानी के आगे बढ़ गए। लेकिन उन्हें काफी दूर तक स्टेज-कोच से जाना पड़ता था और कोच का कंडक्टर उन्हें अंदर नहीं बैठने देता था। गांधी शर्म और डर से कांपने लगे, लेकिन डिब्बे से नीचे नहीं उतरे। ऐसा कहा जाता है कि एक व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके द्वारा सामना किए जाने वाले विभिन्न अनुभवों की कुठाली में आकार लेता है। तमाम अपमानजनक अपमानों के बाद जब गांधी अंततः ट्रांसवाल पहुंचे तो वे वही गांधी थे, लेकिन फिर भी एक नए गांधी थे, क्योंकि उनके मन में दूसरों की सेवा करने का विचार आया था। अपने आगमन के कुछ ही समय बाद उन्होंने सभी धर्मों के भारतीयों – हिंदुओं, मुसलमानों, पारसियों और ईसाइयों की एक बैठक बुलाई—ताकि वे उन तरीकों पर चर्चा कर सकें जिनके द्वारा वे अपने भाग्य को बेहतर बना सकते हैं। उन्होंने तब देशवासियों की स्थितियों को और अधिक बारीकी से देखा था, और उनकी कठिनाईयों से प्रभावित हुए थे। उन्हें दक्षिण अफ्रीका

में यूरोपीय लोगों द्वारा एक अनुबंध प्रणाली के तहत लाया गया था, जिसके तहत उन्होंने बागानों और खानों में पांच साल गुलामी की और फिर मुक्त हो गए। लेकिन यूरोपीय लोगों ने भारतीयों को मुक्त करने पर आपत्ति जताई और कर लगाए और उनके खिलाफ कानून पारित किए।

नेटाल में भारतीयों पर यह आरोप लगाया गया कि वे अपनी आदतों के पक्के हैं और घर तथा अपने आस-पास सफाई नहीं रखते हैं। गांधी ने अपने देशवासियों को शिक्षित करने का प्रयास किया। डरबन में प्लेग की सूचना मिलने पर उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई। जिस प्रकार अछूतों को भारत में किसी कस्बे या गाँव के दूरस्थ क्वार्टरों में भेज दिया जाता है, उसी तरह भारतीयों को कुली स्थान या यहूदी बस्ती दी गई थी। नगरपालिका की अपराधी कला पर वाही थी। प्लेग सोने की खानों में से एक में फैला था, न कि कुली स्थानों में। गांधी राहत कार्य में लग गए। बाद में, नगरपालिका भारतीयों को बेदखल करना चाहती थी और यहूदी बस्तियों को जलाना चाहती थी। गांधी ने कानूनी मुकदमें लड़े और नगरपालिका से मुआवज़ा दिलवाया। इस प्रकार, उन्होंने अफ्रीका में 'अछूतों', भारतीयों और अन्य अश्वेतों दोनों के लिए लड़ाई लड़ी। गांधी का मानना था कि अछूत और बहिष्कृत हर समाज में होते हैं। इसलिए नागरिक स्वतंत्रता और मानवाधिकारों के लिए उनके अभियान के शुरुआती दिनों में अछूतों, या अछूतों, या बहिष्कृत लोगों को प्रभावित करने वाले अन्याय को हल करने के लिए एक स्पष्ट और प्रतिबद्ध इच्छा थी, जो भारतीय समाज में मौजूद थे और हैं। लेकिन वे भी हमारे साथ मौजूद हैं। हर बड़े शहर में राजनीतिक शरणार्थी, अल्पसंख्यक और अन्य गरीब और बेघर हैं। यहूदी बस्तियों में अश्वेत रहते हैं जबकि गोरे शहर के दूसरे हिस्से में एक अलग तरह की यहूदी बस्ती में रहते हैं। सामान्य तौर पर, हिस्पैनिक और अन्य अल्पसंख्यक आबादी की मुख्यधारा के साथ घुल मिल नहीं पाते हैं। कमजोर 'सीमांत' मानव की अन्य श्रेणियां हैं जिन्हें हममें से कई लोग मरणासन्न रूप से बीमार, मंदबुद्धि के रूप में अनदेखा या अस्वीकार करते हैं।

दूसरी घटना श्रीमती रोजा पार्क्स से संबंधित है, जिन्हें आज 'मानव अधिकारों की माँ' के रूप में जाना जाता है, एक नीग्रो महिला जो तीस के दशक में सिटी बस में सवार हुई और एक सीट पर बैठ गई और उसका अलगाव के कानून को तोड़ने का कोई इरादा नहीं था जो अलबामा राज्य में प्रचलन में था। उसे तुरंत सीट खाली करने और बस के पिछले हिस्से में जाने का आदेश दिया गया। बुनियादी मानवाधिकारों का उल्लंघन करने वाली विद्रोही प्रथा को नम्रता से प्रस्तुत करने के बजाय उसने अपनी अवज्ञा के लिए गिरफ्तार होना और उस पर जुर्माना लगाना पसंद किया। मारिट्जबर्ग शहर, सौ साल बाद 1994 में, मरणोपरांत गांधी को एक स्वर्ण पदक और मानव अधिकारों और स्वतंत्रता के लिए गांधी की लड़ाई की मान्यता में प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया और गांधी के पोते गोपालकृष्ण गांधी को यह सम्मान मिला, जिसे बाद में भारतीय प्रधानमंत्री को सौंप दिया गया। भारत में दक्षिण अफ्रीका के उच्चायुक्त, डॉ. मत्सिला ने बाद में गांधी स्मृति, नई दिल्ली में एक समर्पण समारोह में बोलते हुए कहा मानवता के 'न्यायपूर्ण और मानवीय सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था के प्रति सम्मान के आधार पर परिवर्तन' में गांधी जी का बहुत बड़ा योगदान रहा है। वो एक सच्चे संत और मानवाधिकारों की रक्षा के योद्धा

थे।

इस तरह की ओर बहुत सी घटनाएं हुईं जो गांधी जी को मानवाधिकार विषय की ओर अग्रसर करती गईं और गांधी जी ने मानवाधिकारों की लड़ाई में ही अपना जीवन लगा दिया।

2 अक्टूबर 1869 को पोरबन्दर (सुदामापुरी) गुजरात में कबा गांधी की दूसरी पत्नी ने चौथी संतान को जन्म दिया। कबागांधी की दूसरी पत्नी पुतली बाई ने चौथी व अन्तिम संतान के रूप में मोहनदास को जन्म दिया जो बचपन में बहुत शर्मिले स्वभाव के होने के कारण उम्रदराज होने पर जिस रूप में उभरकर दुनियां के सामने प्रस्तुत हुये उससे लगता है कि "गांधी ने गांधी को मारा" जैसा कि मोहनदास कर्मचन्द गांधी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' में दिये दृष्टान्तों में आभास होता है।

'महात्मा गांधी' को जिस रूप में दुनिया जानती है असल में वह रूप बहुत बाद में उभरकर सामने आया है। वास्तविकता तो इस रूप से बहुत भिन्न है। 'महात्मा गांधी' ने अपनी आत्मकथा में यह बहुत बार स्वीकार भी किया है जैसा उन्होंने लिखा 'मुझे सिर्फ इतना याद है कि मैंने उस समय दूसरे लड़कों के साथ अपने शिक्षकों को गाली देना सीखा था। जोकि सर्वथा गलत व स्वभाव के विपरीत था।

**दूसरा :-** संस्कृत सीखने के बजाय फारसी सीखने की चाह। लेकिन शिक्षक के बोल 'यह तो समझ कि तू किनका लड़का है। क्या तू अपने धर्म की भाषा नहीं सीखेगा? यह बात आत्मा पर वार कर गई और फिर संस्कृत सीखना पड़ी लेकिन इसका पूरा श्रेय 'कृष्ण शंकर मास्टर' जी को जाता है। गांधी जी ने लिखा है कि "मैं समझता हूँ कि मेरी विसंगतियों में भी एक संगति है।" यह एक विचारवान व्यक्ति ही समझ सकता है।

**तीसरा :-** मांसाहार करने को विवश मोहनदास के कुछ घनिष्ठ मित्र थे जो मांसाहारी थे और उनकी संगत में रहकर मोहनदास को भी मांसाहार करना पड़ा जो कि धर्म व उनके स्वयं के व्यवहार के विपरीत था। गांधी जी ने स्वयं स्वीकार किया कि वे मांसाहार को अच्छा मानने लगे थे यथा मैं यह मानने लगा कि मांसाहार अच्छी चीज है। गांधी जी को यह लगने लगा था कि उनकी शारीरिक कमजोरी को दूर करने का एकमात्र उपाय मांसाहार ही है और वे अपने शरीर को हृष्ट-पुष्ट बनाने को आतुर हुये और वे मांसाहार के सेवन को देश की आजादी से जोड़कर भी देखने लगे थे। उनके विचार से समूचा देश मांसाहार करे, तो अंग्रेजों को हराया जा सकता है। और इसी सोच को मूर्त रूप देने के लिए उन्होंने मांसाहार अपनाया। गांधी जी ने अपनी पुस्तक आत्मकथा में कहा है "मांस खाना आवश्यक है, उसका प्रचार करके हम हिन्दुस्तान को सुधारेंगे, पर माता-पिता को धोखा देना और झूठ बोलना तो मांस खाने से भी बुरा है। इसलिए माता-पिता के जीते-जी मांस नहीं खाना चाहिये। उनकी मृत्यु के बाद स्वतन्त्र होने पर खुले तौर से मांस खाना चाहिये और जब तक वह समय न आवे, तब तक मांसाहार का त्याग करना चाहिये।" यह प्रतीत होता है कि वे मांस खाना मनुष्य की अति आवश्यकता को महसूस कर रहे थे और धर्म के प्रति आदर भाव या यूँ कहे संस्कार उन्हें इसकी इजाजत नहीं दे रहे थे। अर्थात् अन्तर्मन से अन्तर्द्वन्द्व की स्थिति का भान होता है।

**चौथा :- व्यभिचार की और बढ़ना-** हांलाकि मोहनदास ने अपनी आत्मकथा में भी इसका जिक्र किया

है। और वह स्वीकार भी करते हैं कि वे व्यभिचार की और उन्मुख हुये परन्तु ईश्वरीय शक्ति ने उन्हें बचा लिया। गांधी जी ने स्वीकार किया माता-पिता को धोखा न देने के शुभ विचार से मैं नें मांसाहार छोड़ा, पर वह मित्रता नहीं छोड़ी। मैं मित्र को सुधारने चला था, पर खुद ही गिरा और गिरावट का मुझे होश तक न रहा। गांधी जी ने माना की उनकी सोहबत (संगत) अच्छी नहीं थी जिसका उन पर हमेशा विपरीत असर पड़ता रहा और वे धर्म विरुद्ध कार्यों की और आकर्षित हुये बिना नहीं रह सके। मसलन जो कार्य उन्हें धर्म या संस्कार करने से रोकते थे वे ही कार्य उनके द्वारा किये जाते रहे।

**पांचवा :- चोरी करना** - गांधी जी ने अपने अनुभव को सत्य के प्रयोग (आत्मकथा) में लिखा है कि मैं कभी समझ नहीं सका हूँ। रेलगाड़ी के जिस डिब्बे में बहुत बीड़ी पी जाती है, वहां बैठना मेरे लिए मुश्किल हो जाता है, उसके धुएं से मेरा दम घुटने लगता है। लेकिन कभी उन्होंने बीड़ी के टुकड़े उठाकर कश भी लगाये थे और इसी लत या यूँ कहें शौक पूरा करने के लिए चोरी भी की। औरतों और इन्ही वजहो से आत्महत्या का विचार भी आया जो सर्वथा कायराना था।

**छठा :-** विलायत जाने के लिए समुद्री यात्रा के कारण जाति से बेदखल किया गया लेकिन गांधी जी ने जाति के साथ न जाकर विलायत जाना स्वीकारा। यह एक विद्रोह ही था। स्वयं के साथ, संस्कारों के साथ और समाज के साथ। जब सरपंच ने आदेश दिया “ यह लड़का आज से जाति च्युत माना जायेगा जो कोई इसकी मदद करेगा अथवा इसे विदा करने जायेगा, पंच उसे जवाब तलब करेंगे और उससे सवा रूपया दण्ड का लिया जाए जायेगा” तब भी गांधी जी ने बिना जाति की परवाह किये अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए विलायत समुद्री यात्रा से जाना स्वीकार किया यह निर्णय भी गांधी जी को अंतर्द्वन्द में धकेलता है। उक्त विचार से गांधी जी को आत्ममरण का आभास हुआ किन्तु फिर भी उन्होंने अपना निर्णय नहीं बदला।

**सातवां :-** शादीशुदा वह भी हिन्दु धर्म के संस्कारी परिवार का होने के बावजूद विलायत में अन्य युवती को शादी का प्रस्ताव भेजा और उसे अपनी पहली शादी को बचपन में हुई कहकर नकारा और नये सिरे से जीवन की कल्पना के भंवर में फसते-फसते बचे। यह सभी बातें उनके संस्कारों के विपरीत व धर्म विरुद्ध थी।

**आठवां :-** संस्कारवान परिवार से होने वाले गांधी जी को धर्म के महान ग्रन्थ भगवद्गीता पढ़ने का प्रस्ताव मिला जिसे पूरा कर पाना उनके वश का न था क्योंकि उन्होंने कभी संस्कृत पढ़ी नहीं थी और भगवद्गीता जिसे पढ़ने का प्रस्ताव गांधी जी को मिला था वह संस्कृत भाषा में थी। हालांकि गांधी जी को संस्कृत भाषा में कोई दिलचस्पी नहीं थी और वे संस्कृत भाषा से बचने का ही प्रयास बचपन से करते आ रहे थे, लेकिन विलायत में उनके दो मित्रों ने जब भगवद्गीता की चर्चा की तो उन्हें लगा की यह ग्रन्थ हमारे धर्म का महान् ग्रन्थ है जिसकी चर्चा विलायत में भी है और मुझे संस्कृत पढ़ना आना ही चाहिये तबसे उन्होंने भगवद्गीता का पाठ करना शुरू किया और अंत में तो भगवद्गीता का नित्य पाठ करना आरम्भ कर दिया था।

महात्मा गांधी एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने धर्म के अर्थ और उसके मूल्य के विषय में हमारी धारणा को पुनर्जीवित किया और उसे स्फूर्ति प्रदान की। यद्यपि वे एक ऐसी सर्व समावेशी प्रज्ञा अथवा भावात्मक संपत्ति के

धनी नहीं थे कि इसी नये दर्शन या नये धर्म को जन्म दे पाते लेकिन उनकी नैतिक प्रवृत्ति की शक्ति और शुद्धता स्पष्ट रूप से उनकी गहरी धार्मिक भावनाओं से उत्पन्न हुई थी।

**निष्कर्ष :-** गांधी जी ने अपने पूरे जीवनकाल में जितनी दुविधाएं देखी व भोगी उतना ही वे अपने अन्तिम दिनों में चर्चित हुवे, जिसका उन्होने कभी किसी प्रकार का लाभ लेना उचित ना समझा चाहे वह राजनैतिक हो या आर्थिक। वे विषम परिस्थितियों में भी अहिंसा के उपासक बने रहे। गांधी जी ने अपने कटु अनुभवों से बहुत कुछ सीखा था। उन्होंने स्वयं भी अस्पृश्यता जैसे अमानवीय दंश को सहा था। (उन्हे ट्रेन के डिब्बे से उतारने का किस्सा जगजाहिर है) फिर भी उनकी अहिंसा में कोई कमी नहीं आई यह संस्कारों की ही देन थी, लेकिन उनके युवा काल के किस्से इसके विपरीत उनका स्वभाव दर्शाते है जिनसे पग-पग पर वे विरोधी स्वभाव से संस्कारवान से डोलते नजर आये। फिर भी “गांधी जी गौतम बुद्ध के बाद महानतम भारतीय थे और ईसामसीह के बाद महानतम व्यक्ति थे।” साथ ही विभिन्न विद्वानों ने गांधी जी को मानव इतिहास के महानतम पुरुषों की श्रेणी में सम्मिलित किया।

#### **संदर्भ :-**

1. यंग इण्डिया, 1930 फरवरी 13, पृष्ठ 52
2. महात्मा गांधी, सत्य के प्रयोग, पृष्ठ संख्या 43
3. महात्मा गांधी, सत्य के प्रयोग, पृष्ठ संख्या 43
4. महात्मा गांधी, सत्य के प्रयोग, पृष्ठ संख्या 40
5. मानचेस्टर गार्जियन, 1948 जनवरी 31
6. डॉ. जे. एच. होम।
7. भवानी दत्त पंडया (महात्मा गांधी के विचार) नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया।

mail : adv.kaptan@gmail.com

Mob. 9829179898



# गांधी जी की बुनियादी शिक्षा की वर्तमान में प्रासंगिकता

डॉ. राजेश कुमार रांकावत

सहायक आचार्य, लोक प्रशासन, श्री जैन पी. जी. कॉलेज, बीकानेर।

## प्रस्तावना :-

शिक्षा मानव का मूलभूत अधिकार है जिसके अभाव में व्यक्ति का आन्तरिक एवं बाह्य विकास असम्भव है। जीवन की गुणवत्ता एवं जीवन को सफल बनाने हेतु व्यक्ति का शिक्षित होना आवश्यक है। शिक्षा व्यक्तिगत जिम्मेदारी के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं धार्मिक उत्तरदायित्व भी है। इससे ही प्राणी का बौद्धिक विकास होता है। शिक्षा ही मनुष्य जीवन की आधारशिला है। विद्या के बिना व्यक्ति पशु के समान है। इसलिए मनुष्य जीवन में शिक्षा अति आवश्यक है।

वर्तमान समय में समाज में दया, प्रेम, सहानुभूति, परोपकार आदि गुणों का अभाव हो रहा है। शिक्षा से बालक का वयस्क जीवन तैयार होता है। बालक मनुष्य का पिता होता है। अर्थात् आज का बालक कल का नागरिक हैं। शिक्षित नागरिक से ही समाज का विकास होता है। शिक्षा द्वारा ही चरित्र का निर्माण होता है और अच्छे चरित्र के नागरिकों से ही राष्ट्र का निर्माण होता है।

## जीवन परिचय :-

महान् स्वतंत्रता सेनानी अहिंसा के पुजारी शिक्षा शास्त्री एवं दार्शनिक राष्ट्रपिता मोहनदास करमचंद गाँधी का जन्म गुजरात राज्य के पोरबंदर नामक स्थान पर 2 अक्टूबर 1869 को हुआ। उनके पिता राज्य के दीवान थे। उनकी माता का नाम पुतलीबाई था। जो एक अत्यंत धार्मिक महिला थी। 13 वर्ष की आयु में मोहनदास का विवाह कस्तूरबा से हुआ।

“महात्मा गाँधी के अनुसार— “शिक्षा से अभिप्राय उस प्रक्रिया से हैं, जो बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा का उत्कृष्ट एवं सर्वांगीण विकास करें।”

आधुनिक भारत के निर्माण में महात्मा गांधी का बहुआयामी योगदान रहा है। गांधी जी की शिक्षा संबंधी विचारधारा उनके नैतिकता तथा स्वावलंबन संबंधी सिद्धांतों पर आधारित थी। हरिजन पत्रिका तथा वर्धा शिक्षा योजना में निहित उनके विचारों के माध्यम से इसे देखा जा सकता है। शिक्षा के प्रति इनकी विशेष सोच थी, जो कालान्तर में गांधी जी के शिक्षा दर्शन के रूप में जानी जाती हैं। वे शिक्षा के माध्यम से शोषण विहीन समाज का निर्माण करना चाहते थे। जहाँ किसी तरह जाति, वर्ग, लिंग का भेद न हो, सभी समरसता के साथ जी सके। उनका मानना था कि समाज के प्रत्येक सदस्य का शिक्षित होना जरूरी है, शिक्षा के बगैर एक आधुनिक समाज का सपना असम्भव ही है। गांधीजी का शिक्षा दर्शन बेहद व्यापक एवं जीवनोपयोगी है। उन्होंने शिक्षा के मुख्य

सिद्धांतों, उद्देश्यों तथा शिक्षा की योजना को मूर्त रूप देने का प्रयत्न किया। गांधी जी का आधुनिक शिक्षा दर्शन उन्हें समाज में एक शिक्षा शास्त्री का दर्जा दिलवाता हैं। उन्होंने बुनियादी शिक्षा के क्षेत्र में जो योगदान दिया, वह अद्वितीय था। हमारा लक्ष्य भारत के प्रख्यात पुरुषों एवं महिलाओं द्वारा शिक्षा के क्षेत्रों में दिए गए बीजगर्भित योगदान के बारे में जन जागरूकता के स्तर को ऊपर उठाने का प्रयत्न करना है। हमें उम्मीद है कि इस प्रकार की जागरूकता से संवाद और चर्चा की एक कड़ी सृजित होगी। आशा है कि राष्ट्रीय जीवन के इस महत्वपूर्ण आयाम में जनता के स्थायी योगदान को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ यह शिक्षा को बौद्धिक जिज्ञासा का जीवंत विषय बनाएगा।

### **गाँधी जी के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य :-**

गाँधी जी का उद्देश्य शिक्षा के क्षेत्र में आदर्शवादी और प्रयोगवाद था। आदर्शवादी के दृष्टिकोण के अनुरूप गाँधी सर्वोच्च उद्देश्य के रूप में आत्मबोध कराना शिक्षा का प्रधान उद्देश्य मानते थे। उनका मानना था कि आत्मा का प्रक्षेपण अपने आप में महत्व रखता है। गाँधी जी ने शिक्षा के द्वारा आत्मा चरित्र निर्माण और ईश्वरीय ज्ञान की ओर बढ़ने की आस्था रखते थे। आत्मबोध के उद्देश्य से जीवन में चरम लक्ष्य मॉल की प्राप्ति कर सकता है। प्रयोगवादी विचारधारा के अनुकूल गाँधीजी शिक्षा के तत्कालीन उद्देश्य वाह है जो किसी भी देशकाल परिस्थिति में महत्व रखता है। उद्देश्यों के अंतर्गत महात्मा गांधी के निम्नलिखित उद्देश्य हैं—

### **शारीरिक विकास :-**

महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शन के अनुसार छात्रों को शारीरिक शिक्षा भी प्रदान की जानी चाहिए। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे बालक के शरीर का विकास होना चाहिए क्योंकि उनके अनुसार स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण होता है इसीलिए सबसे पहले उन्होंने शारीरिक विकास पर बल दिया।

**मानसिक एवं बौद्धिक विकास :-** गाँधी जी के अनुसार जिस प्रकार शारीरिक विकास के लिए शिशु को माँ के दूध की आवश्यकता होती है उसी प्रकार मानसिक विकास के लिए शिक्षा की आवश्यकता है।

**व्यक्तिगत एवं सामाजिक विकास :-** गाँधी जी व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के विकास पर बल देते हैं सामाजिक विकास से तात्पर्य मनुष्य को समाज में प्रेम और मानव मात्र की सेवा करने से ही आत्मिक विकास संभव है।

**सांस्कृतिक विकास :-** गांधी जी आत्मिक विकास के लिए संस्कृति के ज्ञान की आवश्यकता पर विशेष बल देते थे उनके अनुसार शिक्षा दर्शन में संस्कृति की अहम भूमिका होती है।

**नैतिक एवं चारित्रिक विकास :-** तुच्छ चरित्र वाला व्यक्ति राष्ट्र का निर्माण नहीं कर सकता। तुच्छ चरित्र को शिक्षा द्वारा ही सुधारा जा सकता है। शिक्षा ही वह साधन या माध्यम है, जो देश में सभ्य नागरिकों का निर्माण करती है। शिक्षा द्वारा ही 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' से साक्षात्कार कराकर ही अच्छे से अच्छे आचरण का प्रयास किया जाता है। राष्ट्र की समृद्धि नागरिकों के चरित्र पर निर्भर करती है। भारत जैसे देश की प्रगति हेतु चारित्रिक शिक्षा की महत्ती भूमिका हो सकती है।

**व्यावसायिक विकास :-** गांधी जी आर्थिक विकास अभाव की मुक्ति के लिए व्यावसायिक शिक्षा पर बल देते थे और मनुष्य को आत्मनिर्भर बनाना चाहते हैं इसीलिए वह हस्तकला और उद्योग पर बल देते हैं।

**आध्यात्मिक विकास :-** गांधी जी मनुष्य जीवन का अंतिम उद्देश्य मुक्ति आत्मानुभूति व आत्मबोध मानते

हैं। गाँधी जी ज्ञान, कर्म, भक्ति और योग पर समान बल देते हैं यह अहिंसा और सत्याग्रह को मूर्त रूप प्रदान करते हैं।

**जीविकोपार्जन की क्षमता :-** शिक्षा केवल चरित्र निर्माण के लिए ही नहीं बल्कि अपने जीविकोपार्जन की क्षमता को बढ़ाने में भी मदद करती हैं। शिक्षा के बिना हम जीविकोपार्जन का सही दिशा ढूँढने में असफल होते हैं। शिक्षा ही एक ऐसा धन है जो हमारे जीवन को हर प्रकार की कठिनाइयों से बचाता है और अपने जीवन को एक बेहतर जीवन बनाने में मदद करता है।

**संगतिपूर्ण विकास :-** शिक्षा का एक उद्देश्य यहां पर होना चाहिए कि बालक में संगति का विकास हो सके। उनमें ऐसी भावना घर ना बनाएं जो दूसरों को कष्ट दे बल्कि उनमें संगति की ऐसी भावना हो कि वे देश एवं अपने आस-पड़ोस के महलों को समझ सके।

**निष्कर्ष :-**

महात्मा गांधी ने बुनियादी शिक्षा पर जोर दिया है। शिक्षा ही मनुष्य का वह आधार है जिससे उसका विकास होता है। शिक्षा से मनुष्य में प्रेम, जिज्ञासा, कल्पना, तर्कशक्ति, आत्मसम्मान का विकास होता है। शिक्षा ही वह आधार है जिससे आर्थिक, सामाजिक विकास होता है। सामाजिक भावना के विकास में माध्यमिक एवं प्राथमिक शिक्षा की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। व्यक्ति और समाज एक सिक्के के दो पहलू होते हैं। दोनों का अटूट सम्बन्ध होता है तथा ऐसा कहे कि इनका चोली-दामन का साथ है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। व्यक्ति सामाजिक प्राणी होता है। वह समाज से अलग नहीं रह सकता और यदि वह रहता है तो पशु के समान है। उसकी उन्नति और विकास सामाजिक परिवेश पर निर्भर करता है। समाज में रहकर ही वह दया, परोपकार, प्रेम, सहानुभूति आदि सामाजिक गुणों को सीखता है जो कि शिक्षा द्वारा प्राप्त होते हैं।

**संदर्भ :-**

1. <https://www.mkgandhi.org>
2. <https://ignited.in>
3. <https://sarkariguider.com>
4. डॉ. राजेश कुमार रांकावत— राजस्थान में शैक्षणिक सुधारों में माध्यमिक शिक्षा निदेशालय की भूमिका का संरचनात्मक — कार्यात्मक अध्ययन 2013

ई-मेल : [drrajeshrankawat1976@gmail.com](mailto:drrajeshrankawat1976@gmail.com)



# वर्तमान में महात्मा गांधी के आर्थिक विचारों की भारतीय अर्थव्यवस्था में प्रासंगिकता (ग्राम स्वराज के विशेष संदर्भ में)

डॉ. सुनील पूनिया

सहायक आचार्य, आर्थिक प्रशासन एवं वित्तीय प्रबन्ध, स्व. श्री गुरुशरण छाबड़ा राजकीय महाविद्यालय, सूरतगढ़।

## शोध-सार :-

महात्मा गांधी मुख्य रूप से हमारे राष्ट्रपिता के साथ-साथ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सबसे प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी के रूप में जाने जाते हैं। उनकी राजनीतिक विचारधारा के साथ-साथ उनके आर्थिक विचार भी मूल रूप से आत्मनिर्भर भारतपर जोर देते रहे। देश के आर्थिक और सामाजिक विकास के उचित तरीकों पर गांधी जी के बहुत निश्चित विचार थे, जो भारत के साथ-साथ कई अन्य विकासशील देशों की विकास रणनीतियों के प्रमुख तत्वों का अनुमान लगाते थे। उनके विभिन्न आर्थिक विचारों में से एक प्रमुख अवधारणा ग्राम स्वराज बहुत महत्वपूर्ण है जिसे गांधीजी ने राज्यविहीन लोकतंत्र और आत्मनिर्भर ग्राम अर्थव्यवस्था के अपने आदर्श की अवधारणा के रूप में प्रस्तुत किया। प्रस्तुत शोध-पत्र में लेखक ने गांधीवादी आर्थिक विचारों की प्रमुख विशेषताओं और महात्मा गांधी के आर्थिक विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता विशेषतः ग्राम स्वराज पर केंद्रित करने का प्रयास किया है।

## परिचय एवं प्रस्तावना :-

मोहनदास करमचन्द गांधी जी ने कहा था कि, "मेरे अनुसार, भारत और विश्व के मामले में आर्थिक संविधान ऐसा होना चाहिए कि इसके तहत कोई भी व्यक्ति भोजन और कपड़े की कमी से पीड़ित न हो।" गांधी जी सदैव ही सत्य और अहिंसा दृष्टिकोण के साथ ब्रिटिश शासन के खिलाफ असहयोग, शांतिपूर्ण संघर्ष में लगे रहे। हालाँकि वह अर्थशास्त्री नहीं थे, लेकिन यदि उनके द्वारा दिये गये आर्थिक दृष्टिकोणों को लागू किया जाए तो भारत को कई सामाजिक-आर्थिक समस्याओं से राहत मिलेगी। ब्रिटिश उपनिवेशवाद से स्वतंत्र भारत की राजनीतिक दृष्टि के साथ, गांधीजी ने अपने पूरे जीवन में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी व्यापक भागीदारी के एक हिस्से के रूप में भारतीय गरीबी, पिछड़ेपन और सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों के खिलाफ लड़ने की कोशिश की। गांधी जीने अनेक आर्थिक विचार प्रस्तुत किये जैसे ग्राम स्वराज जिसे उन्होंने ग्रामीण लोकतंत्र के रूप में भी प्रस्तुत किया, स्वदेशी के सिद्धान्त, हमारे अपने देश के भीतर उत्पादित वस्तुओं का उपयोग अर्थात् स्वदेशी अपनाओ सिद्धान्त आदि। गांधी जी द्वारा दिये गये यह सभी आर्थिक दर्शन भारतीय अर्थव्यवस्था

के वर्तमान संदर्भ में भी अधिक प्रासंगिक हैं।

गांधी जी भारत और इसकी आर्थिक-सामाजिक समस्याओं में पूर्णतः अवगत थे। महात्मा गांधी की अर्थव्यवस्था व अर्थशास्त्र के बारे में बहुत मौलिक सोच थी। यह सोच उस समय के प्रचलित विचारों की परवाह न कर सीधे-सीधे ऐसी नीतियों की मांग करती थी जिससे गरीबों को राहत मिले। साथ ही उन्होंने ऐसे सिद्धांत उपनाने को कहा जिनसे दुनिया में तनाव व हिंसा दूर हो तथा पर्यावरण को नुकसान न पहुंचे। गांधीजी के लिए विश्व शांति, संतोष व पर्यावरण की रक्षा सबसे महत्वपूर्ण थे। वह इसी के अनुकूल आर्थिक नीतियों की बात करते थे। उन्होंने अर्थनीति और नैतिकता में कभी भेद नहीं किया। गांधी ने स्पष्ट लिख मुझे स्वीकार किया कि मैं अर्थविद्या और नीतिविद्या में कोई भेद नहीं करता। जिस अर्थविद्या से व्यक्ति या राष्ट्र के नैतिक कल्याण को हानि पहुंचती हो उसे मैं अनीतिमय और पापपूर्ण कहूंगा। उदाहरण के लिए जो नीति एक देश को दूसरे देश का शोषण करने की अनुमति देती है वह अनैतिक है। जो मजदूरों को योग्य मेहनताना नहीं देते और उनके परिश्रम का शोषण करते हैं उनसे वस्तुएं खरीदना या उन वस्तुओं का उपयोग करना पाप है। उन्होंने शोषण विहीन व्यवस्था की मांग रखी ताकि सबकी बुनियादी जरूरतें पूरी हों। उन्होंने कहा कि गरीब लोगों को भी उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण मिले ताकि उनका शोषण न हो।

अतः उन्होंने आर्थिक विकास को नहीं, बल्कि गरीब आदमी की बुनियादी आवश्यकताओं को अपनी आर्थिक सोच का केंद्र बनाया। उन्होंने देश के नेताओं और नियोजकों से विशेष आग्रह किया कि जब तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम तुम पर हावी होने लगे तो यह कसौटी आजमाओ। जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा है, उसकी शुक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त? इस तरह महात्मा गांधी गरीब आदमी को आर्थिक चिंतन के केंद्र में ले आए।

उनके शब्दों में, सच्ची सभ्यता का लक्षण संग्रह बढ़ाना नहीं है, बल्कि सोच-समझकर और अपनी इच्छा से उसे उसे कम करना है। ज्यों ज्यों हम संग्रह घटाते जाते हैं त्यों-त्यों सच्चा सुख और संतोष बढ़ता जाता है, सेवा की शक्ति बढ़ती जाती है। त्याग की यह शक्ति हममें अचानक नहीं आएगी। पहले हमें ऐसी मनोवृत्ति पैदा करनी होगी कि हमें उन सुख-सुविधाओं का उपयोग नहीं करना है, जिनसे लाखों लोग वंचित हैं।

#### **अध्ययन का उद्देश्य :-**

महात्मा गांधी के आर्थिक विचारों से परिचित होना।

महात्मा गांधी के आर्थिक विचारों की प्रमुख विशेषताओं की व्याख्या करना।

भारतीय अर्थव्यवस्था के वर्तमान संदर्भ में गांधी के आर्थिक विचारों की प्रासंगिकता के बारे में जानना।

#### **महात्मा गांधी के आर्थिक विचारों की प्रमुख विशेषताएं :-**

महात्मा गांधी के आर्थिक विचार भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान और उसके बाद एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाए, और उनके आर्थिक दृष्टिकोण की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं :

**सादगी और आत्मनिर्भरता :** महात्मा गांधी ने सादगी को अपने आर्थिक विचारों का मूलमंत्र माना था।

उन्होंने लोगों को आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा दी और खुद की आवश्यकताओं को कम से कम करने की सिखाई।

**ग्राम स्वराज :** गांधी जी ने ग्राम स्वराज को आर्थिक स्वतंत्रता के लिए महत्वपूर्ण माना था। उन्होंने ग्राम स्वराज को ग्रामीण आर्थिक स्वावलंबन का प्रतीक बनाया और उन्होंने गांवों की सामाजिक और आर्थिक सुधार के लिए प्रोत्साहित किया।

**खादी :** महात्मा गांधी ने खादी (हाथ से बना कपड़ा) को राष्ट्रीय स्वभाव की प्रतीक माना और इसे आर्थिक स्वतंत्रता के लिए महत्वपूर्ण उपाय के रूप में देखा। वे लोगों को खादी पहनने की सलाह देते थे और इसके माध्यम से उन्होंने आर्थिक स्वतंत्रता की दिशा में कई कदम उठाए।

**सामाजिक न्याय :** गांधी जी के आर्थिक विचार सामाजिक न्याय की प्रमुख धारा को प्रमोट करते थे। वे आर्थिक स्वतंत्रता को सभी वर्गों और जातियों के लोगों के लिए सुनिश्चित करने के पक्ष में थे और उन्होंने उनके आर्थिक विचारों में समाजिक समानता को महत्व दिया।

**उदारता और आत्मसमर्पण :** महात्मा गांधी की आर्थिक दरियाद के बावजूद, उन्होंने उदारता और आत्मसमर्पण की भावना को अपनाया। वे दूसरों की मदद करने के लिए तैयार रहते थे और आत्मसमर्पण की भावना से आर्थिक दुश्मनी को प्रशांति से परिहार किया।

महात्मा गांधी के आर्थिक दृष्टिकोण ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा दी और आर्थिक स्वतंत्रता के माध्यम से समाज में सुधार करने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए।

**ग्राम स्वराज एवं आत्मनिर्भर ग्राम अर्थव्यवस्था की अवधारणा :-**

ग्राम स्वराज की अवधारणा और आत्मनिर्भर ग्राम अर्थव्यवस्था भारत के विकास और सामाजिक परिवर्तन के लिए महात्मा गांधी के दृष्टिकोण का एक महत्वपूर्ण पहलू थी। महात्मा गांधी, जिन्हें भारतीय राष्ट्रपिता के रूप में भी जाना जाता है, ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष में एक प्रमुख नेता थे। उनका मानना था कि सच्ची स्वतंत्रता और प्रगति तभी प्राप्त की जा सकती है जब देश के ग्रामीण सशक्त और आत्मनिर्भर होंगे। गांधी ने कहा कि समाज की इकाई एक गांव होनी चाहिए या इसे लोगों का एक प्रबंधनीय छोटा समूह कहना चाहिए, जो आदर्श रूप से, एक इकाई के रूप में आत्मनिर्भर (अपनी महत्वपूर्ण आवश्यकताओं के मामले में) होंगे। ग्राम स्वराज, जिसका अनुवाद गांवों का स्व-शासन है, विकेंद्रीकृत और समतावादी समाज के लिए गांधी के दृष्टिकोण का एक बुनियादी हिस्सा था। उनका मानना था कि भारत की प्रगति की कुंजी इसके ग्रामीण समुदायों की भलाई में निहित है। उन्होंने एक ऐसे समाज की कल्पना की जहां निर्णय लेने और शासन करने की शक्ति विकेंद्रीकृत थी, और स्थानीय समुदायों को अपने मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का अधिकार था। ग्राम स्वराज के कुछ मूल सिद्धांतों में शामिल हैं :-

**स्वदेशी :** गांधी जी ने ग्रामीण उद्योगों और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए स्थानीय रूप से उत्पादित वस्तुओं और संसाधनों के उपयोग पर जोर दिया। उन्होंने लोगों को विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने और इसके बजाय स्थानीय रूप से निर्मित उत्पादों का समर्थन करने के लिए प्रोत्साहित किया।

**ग्रामोद्योग :** गांधी जी ने गांवों में लघु कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देने के महत्व पर जोर दिया। ये उद्योग ग्रामीणों के लिए रोजगार के अवसर प्रदान करेंगे और शहरी केंद्रों पर निर्भरता कम करेंगे।

**खादी :** खादी, हाथ से काता गया और हाथ से बुना हुआ कपड़ा, आत्मनिर्भरता और आत्मनिर्भरता का

प्रतीक बन गया। गांधीजी ने ग्रामीण उद्योगों को समर्थन देने और आयातित वस्त्रों पर निर्भरता कम करने के तरीके के रूप में खादी के उपयोग को बढ़ावा दिया।

**पंचायती राज :** गांधी ने स्थानीय स्वशासन की एक प्रणाली की वकालत की जिसे पंचायती राज के नाम से जाना जाता है, जहां निर्णय निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा ग्राम स्तर पर किए जाते थे। इसका उद्देश्य ग्रामीणों को सशक्त बनाना और शासन में उनकी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना था।

**विकेंद्रीकरण :** गांधी जी सत्ता को कुछ लोगों के हाथों में केंद्रित होने से बचाने के लिए जमीनी स्तर पर सत्ता और संसाधनों के विकेंद्रीकरण में विश्वास करते थे। वह चाहते थे कि निर्णय लेने की प्रक्रिया सहभागी और समावेशी हो।

**कृषि और स्थिरता :** गांधी ने टिकाऊ कृषि पद्धतियों के महत्व पर जोर दिया और किसानों को पारंपरिक और पर्यावरण-अनुकूल खेती के तरीकों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया।

ग्राम स्वराज की अवधारणा केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता के बारे में नहीं थी बल्कि सामाजिक और नैतिक प्रगति हासिल करने के बारे में भी थी। गांधी ने एक ऐसे समाज की कल्पना की जहां लोग प्रकृति के साथ सद्भाव में रहें, अहिंसा का पालन करें और सत्य और गैर-शोषण के सिद्धांतों को बरकरार रखें।

जबकि गांधी जी के समय में ग्राम स्वराज की पूर्ण प्राप्ति एक चुनौती बनी रही, उनके विचार और सिद्धांत भारत और उसके बाहर विभिन्न जमीनी स्तर के आंदोलनों और विकास पहलों को प्रेरित करते रहे। ग्रामीण समुदायों को सशक्त बनाने, आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने और शासन के विकेंद्रीकरण का विचार सतत और न्यायसंगत विकास की खोज में प्रासंगिक बना हुआ है।

### **महात्मा गांधी जी के आर्थिक विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता :-**

गांधी जी के अनुसार समग्र ग्राम-सेवा के अंतर्गत प्रत्येक व्यक्ति का अपने गांव के प्रत्येक निवासी से परिचय होना चाहिए और जितना बन पड़े उतनी सेवा ग्रामवासियों की करनी चाहिए। इसका मतलब यह नहीं है कि वह सारा काम अकेले ही कर सकता है। वह ग्रामवासियों को यह बताएगा कि वे किस प्रकार अपनी सहायता स्वयं कर सकते हैं और उन्हें जो सहायता एवं सामग्री की आवश्यकता होगी, उसे उनके लिए उपलब्ध कराएगा। वह अपने सहायकों को भी प्रशिक्षित करेगा। वह ग्रामवासियों के मन को इस तरह जीतने का प्रयास करेगा कि वे उसके पास परामर्श के लिए आने लगेंगे।

महात्मा गांधी जी के आर्थिक विचार आज भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं और वर्तमान प्रासंगिकता रखते हैं, क्योंकि वे सामाजिक न्याय, स्वदेशी आन्दोलन, ग्राम स्वराज, और अहिंसा के मूल्यों के पक्षधर थे, और उन्होंने इन मूल्यों को आर्थिक दृष्टि से भी बढ़ावा दिया।

**स्वदेशी आंदोलन :** गांधी जी ने स्वदेशी आन्दोलन के माध्यम से स्वदेशी उत्पादों के प्रति प्रोत्साहन दिया और बाहरी वस्त्रों और सामग्रियों के बजाय देशी उत्पादों का उपयोग करने की प्रेरणा दी। आज भी, यह सिद्धांत आत्मनिर्भर भारत के अभियान में महत्वपूर्ण है और स्वदेशी उत्पादों के समर्थन का प्रतीक बना है।

**ग्राम स्वराज :** गांधी जी के आर्थिक दृष्टिकोण में ग्राम स्वराज का महत्व था, जिसमें गांधी जी ने ग्रामीण स्वराज के लिए कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था की महत्वपूर्ण भूमिका दी। आज, ग्रामीण विकास के लिए उनके आर्थिक मूल्य फिर से महत्वपूर्ण हो रहे हैं, खासकर सुशासन और साक्षरता के क्षेत्र में।

**सामाजिक न्याय :** महात्मा गांधी ने आर्थिक न्याय की बजाय सामाजिक न्याय को महत्वपूर्ण माना और दलितों और अछूतों के लिए समाज में समानता की ओर कदम बढ़ाया। आज भी, सामाजिक न्याय और समानता के मुद्दे जीवंत हैं और गांधीजी के मूल्यों के साथ समर्थन करते हैं।

**अहिंसा :** गांधी जी के आर्थिक दृष्टिकोण में अहिंसा भी महत्वपूर्ण थी। उन्होंने दिखाया कि अहिंसा आर्थिक विकास में भी सफल हो सकती है और समस्याओं का समाधान नैतिक रूप से सही तरीके से किया जा सकता है। आज भी, अहिंसा के मूल्य अधिक जरूरी हैं, खासकर विश्वशांति और पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में।

**निष्कर्ष :-**

निष्कर्षतः, महात्मा गांधी का आर्थिक विचार स्थिरता, आत्मनिर्भरता और समावेशिता के सिद्धांतों में गहराई से निहित था। आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था की उनकी दृष्टि, जिसे ग्राम स्वराज के नाम से जाना जाता है, ने ग्रामीण समुदायों के सशक्तिकरण और लघु उद्योगों को बढ़ावा देने पर जोर दिया। गांधी का आर्थिक दर्शन महज भौतिक विकास से आगे बढ़कर, नैतिक आचरण और अहिंसा से प्रेरित होकर व्यक्तियों और समुदायों के समग्र कल्याण पर केंद्रित है।

भारतीय अर्थव्यवस्था के वर्तमान संदर्भ में गांधी के विचार प्रासंगिक बने हुए हैं। सतत विकास, पर्यावरण संरक्षण और समुदाय-आधारित पहल जैसी अवधारणाएँ अधिक न्यायसंगत और पारिस्थितिक रूप से जिम्मेदार भविष्य की खोज में प्रतिध्वनित होती हैं। नैतिक व्यावसायिक प्रथाओं, स्थानीय उद्योगों को बढ़ावा देने और हाशिए पर रहने वाले समुदायों के उत्थान पर उनका जोर समावेशी विकास और गरीबी उन्मूलन को बढ़ावा देने के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

गांधीवादी आदर्शों को आधुनिक दृष्टिकोण के साथ मिश्रित करके, भारत शाश्वत ज्ञान के अनुरूप, अधिक संतुलित, आत्मनिर्भर और सामंजस्यपूर्ण आर्थिक भविष्य की दिशा में मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची :-**

1. Saikia, Atul (2017): "Gandhian Economic Thought and its Relevance in Modern India", IJRESS, Vol. 7, Issue 12.
2. Lala R.M (2006): The Creation of Wealth—the Tatas from the 19th to the 21st Century, Penguin Portfolio.
3. Savitha, N. (2015): Gandhian Economic Thought and its Relevance to New Economic Policy. International Journal of Management and Development Studies. Vol 4(2).
4. Mathur, B.P;(2011): "Gandhian Alternate to Economic Development- Relevance for India Today", Ph, Mainstream.
5. Bhandari, A. (2008); "Reflections on January 30", Mainstream, January-26.
6. Sahoo, A.& Pattnik, T (2015); "Relevance of Gandhian Economy in Twenty First Century", Odisha Review.
7. S. Chavan, (2013): Economic Ideas of Mahatma Gandhi' Indian Streams Research Journal. Vol 3(9): pp 1.
8. N. Pani, (2002): Inclusive Economics: Gandhian Method and Contemporary Policy'. Sage Publications, New Delhi.

sunil.nponia@gmail.com



# ग्रामीण विकास में महात्मा गाँधी जी के विचारों की महती भूमिका

डॉ. महबूब खान मुगल

सहायक आचार्य, भूगोल, स्व. श्री गुरुशरण छाबड़ा राजकीय महाविद्यालय, सूरतगढ़।

## शोध-सार :-

प्रस्तुत शोध-पत्र ग्राम विकास या ग्रामीण विकास की अवधारणा को बढ़ावा देने में महात्मा गांधी जी की भूमिका पर केंद्रित है। महात्मा गांधी जी एक दूरदर्शी नेता थे जिनका मानना था कि भारत की प्रगति की कुंजी उसके गांवों के विकास में निहित है। उन्होंने ग्रामीण विकास को प्राप्त करने के लिए आत्मनिर्भरता और विकेंद्रीकरण को मौलिक बताया और टिकाऊ और न्यायसंगत विकास को बढ़ावा देने के लिए स्थानीय संसाधनों और कौशल के उपयोग का आह्वान किया। गांधी जी का दृढ़ विश्वास था कि भारत के समाज की भलाई सीधे उसके ग्रामीण विकास से जुड़ी हुई है। यह अध्ययन इस बात की जांच करता है कि गांधी जी के अहिंसा और शिक्षा के दर्शन ने ग्रामीण विकास के उनके दृष्टिकोण को कैसे प्रभावित किया। उन्होंने रोजगार के अवसर पैदा करने और ग्रामीण समुदायों के लिए जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए कुटीर उद्योगों, हस्तशिल्प और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के उपयोग को बढ़ावा देने के महत्व पर जोर दिया। गांधीजी के ग्राम विकास के विचारों को सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय पहलुओं को शामिल करते हुए ग्रामीण विकास के लिए एक समग्र दृष्टिकोण के रूप में देखा जाता है। यह कार्य गरीबी, बेरोजगारी और पर्यावरणीय गिरावट जैसी आधुनिक चुनौतियों के संदर्भ में उनके विचारों की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालता है। ग्राम विकास या ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने को इन चुनौतियों का समाधान करने और अधिक न्यायसंगत और टिकाऊ समाज बनाने के एक तरीके के रूप में देखा जाता है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए ग्राम विकास या ग्रामीण विकास को बढ़ावा देना आवश्यक है। प्रस्तुत शोध-पत्र ग्रामीण विकास नीति में गांधीवादी सिद्धांतों को एकीकृत करने और नीति निर्माताओं को सतत ग्रामीण विकास प्राप्त करने के लिए गांधी जी के सिद्धांतों को अपनाने के महत्व पर जोर देता है। इन सिद्धांतों को नीति निर्माण और कार्यान्वयन में शामिल करके, नीति निर्माता ग्रामीण समुदायों में न्यायसंगत और सतत विकास को बढ़ावा दे सकते हैं। इस शोध पत्र का निष्कर्ष है कि नीति निर्माताओं को ग्रामीण क्षेत्रों में दीर्घकालिक प्रगति हासिल करने के लिए स्थिरता को प्राथमिकता देनी चाहिए और इस प्रगति को बनाए रखने के लिए समुदाय की भागीदारी और संसाधनों का टिकाऊ उपयोग आवश्यक है।

## प्रस्तावना एवं परिचय :-

मोहनदास करमचंद गांधी जी के आर्थिक विचार अहिंसा, सादगी, आत्मनिर्भरता, समानता, विकेंद्रीकरण,

सीमित औद्योगीकरण सहयोग जैसी अवधारणाओं पर आधारित थे। महात्मा गांधी जी का मुख्य उद्देश्य गरीबी और बेरोजगारी को दूर करना, शोषण को समाप्त करना, आर्थिक असमानताओं को कम करना और गाँव को भोजन, कपड़े, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता के मामले में आत्मनिर्भर बनाना था, साथ ही देश की आर्थिक और भौगोलिक स्थिति को सही वितरण हो। गांधी जी इस बात से अच्छी तरह परिचित थे कि पूर्ण आर्थिक और भौगोलिक समानता का विचार वांछनीय होते हुए भी संभव नहीं है। उनके अनुसार हम अमीर और गरीब के बीच असमानता को कम करने के लिए लगातार प्रयास कर सकते हैं। गांधी जी के विचार में यदि हमारा समाज प्रेम, विश्वास और संतोष पर आधारित होगा तो आर्थिक शोषण को रोका जा सकता है।

महात्मा गांधी जी का आर्थिक दर्शन आज भी बहुत प्रासंगिक है। ग्रामीण विकास देश के विकास की आत्मा है और भावी पीढ़ियों को अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए आत्मनिर्भर और विकसित करने के लिए सशक्त बनाने के लिए देश की प्रगति की नींव है। भारतीय राष्ट्र के पिता के रूप में सम्मानित महात्मा गांधी जी ने ग्रामीण विकास की परिवर्तनकारी शक्ति को अपनाया और ग्रामीण समुदायों के उत्थान और सतत् विकास को बढ़ावा देने के साधन के रूप में ग्राम विकास के महत्व पर जोर दिया। वह भारत के विकास को चलाने के लिए ग्रामीण समुदायों की शक्ति में विश्वास करते थे। उनके अनुसार ग्राम समाज भारत की आत्मा है। शहरी क्षेत्र के लिए उनका मानना था कि यह भारत में गरीबी और बेरोजगारी की वृद्धि के लिए जिम्मेदार प्रमुख कारक है। उन्होंने सतत् ग्रामीण विकास हासिल करने के साधन के रूप में ग्राम विकास के महत्व पर जोर दिया। ग्राम स्वराज या स्वशासन के उनके दर्शन ने स्थानीय समुदायों के सशक्तिकरण के माध्यम से सतत् ग्रामीण विकास की आवश्यकता पर जोर दिया। उनके दर्शन का एक प्रमुख घटक ग्राम विकास था जिसने स्थानीय आत्मनिर्भरता, अहिंसा, शिक्षा और महिला सशक्तिकरण के महत्व पर जोर दिया।

ग्राम विकास पर गांधी जी के दर्शन को समग्र, टिकाऊ, सशक्त और समुदाय-संचालित के रूप में वर्णित किया जा सकता है। अहिंसा, शिक्षा और महिला सशक्तिकरण पर उनके जोर ने ग्रामीण विकास के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता पर प्रकाश डाला जो सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक और पर्यावरणीय कारकों पर विचार करता है। ग्राम विकास के लिए गांधी जी के दृष्टिकोण ने ग्रामीण समुदायों की जरूरतों और दृष्टिकोण को प्राथमिकता दी, विकास के लिए नीचे से ऊपर के दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया जो सामुदायिक भागीदारी और स्वामित्व को प्रोत्साहित करता है। गांधी जी एक ऐसे सीमित राज्य की कल्पना करते हैं जो दैनिक जीवन में हस्तक्षेप न करे। भारत में ग्राम गणराज्य महत्वपूर्ण हैं, जो लोकतांत्रिक केंद्रों के रूप में कार्य करते हैं। गांधी जी का ध्यान मुख्यतः सामाजिक पुनर्निर्माण पर केन्द्रित था। सर्वोदय की उनकी अवधारणा छोटे गणराज्यों पर जोर देती है जहां लोग राज्य पर भरोसा किए बिना अपने मामलों का प्रबंधन स्वयं करते हैं। इस मॉडल में, ग्राम पंचायतें (स्थानीय परिषदें) नीति निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जिसमें विविध पृष्ठभूमि के सक्षम व्यक्ति शामिल होते हैं। गांधी जी भारत की पारंपरिक संस्थाओं जैसे ग्राम गणराज्यों को मजबूत बनाने के लिए उनका उपयोग करने में विश्वास करते थे।

उनके अनुसार राजनीतिक संस्थाएं स्थानीय संसाधनों का प्रबंधन करने में मदद कर सकती हैं, जिसमें धनी व्यक्ति ग्राम पंचायतों को अधिशेष भूमि दान कर सकते हैं, जो इसे जरूरतमंदों और श्रमिक समुदायों को ग्राम निधि में अपना योगदान देते हैं, को वितरित कर सकती हैं। यहां व्यक्तियों की भूमिका इस प्रणाली में केंद्रीय है

चूंकि उनकी पहल से सामाजिक संपत्ति का निर्माण होता है और वे इस मॉडल में सामुदायिक कल्याण के लिए अपनी अतिरिक्त संपत्ति का योगदान करते हैं, इसलिए ग्राम पंचायतें गांव की अर्थव्यवस्था के लिए जिम्मेदार हैं, जो लोगों की समृद्धि को बढ़ावा देती है। यह तर्क दिया गया कि पश्चिमी लोकतंत्र को स्वदेशी संस्थानों को शामिल करते हुए भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल बनाया जाना चाहिए। गांधी जी ने माना कि उपनिवेशीकरण ने भारतीय ग्रामीण समाज की बुनियादी संस्थाओं को नुकसान पहुंचाया है।

सर्वोदय समाज के औद्योगीकरण और तकनीकी उन्नति के गांधी जी के दृष्टिकोण तब तक अपना स्थान रखते हैं जब तक वे मानव नियंत्रण में रहते हैं और समाज की पारिस्थितिक नींव को नुकसान नहीं पहुंचाते हैं। उनका मानना है कि औद्योगीकरण से आर्थिक शक्ति का संकेंद्रण होता है, जो लोकतंत्र को कमजोर करता है। जब आर्थिक और राजनीतिक शक्तियां कुछ लोगों के हाथों में केंद्रित हो जाती हैं, तो यह उन्हें लोकतांत्रिक संस्थानों को कमजोर करने में सक्षम बनाती है। गांधी जी ग्रामीण भारत में आर्थिक शक्ति के केंद्रीकरण का विरोध करते हैं और आर्थिक और राजनीतिक दोनों उद्देश्यों के रूप में भूमि के वितरण की वकालत करते हैं। वह अपनी जरूरतों के लिए खादी (हाथ से बुने हुए कपड़े) बुनकर आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देते हैं, जिससे शहरी अर्थव्यवस्था पर निर्भरता कम होती है। व्यक्तिगत पहल के माध्यम से, समुदाय की एक मजबूत भावना को बढ़ावा दिया जाता है, जिससे ग्रामीण समुदाय की जरूरतों को पूरा करने के लिए सामूहिक प्रयास संभव हो पाते हैं।

#### **महात्मा गांधी जी के ग्रामीण विकास के सिद्धान्त :-**

महात्मा गांधी जी के ग्रामीण विकास के दर्शन और ग्राम विकास या ग्राम विकास के लिए उनकी वकालत की तुलना आज के भारत में एक परी कथा से की जा सकती है। लेकिन भारत के विकास को गति देने में ग्रामीण समुदायों की शक्ति में उनका विश्वास और ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक और आर्थिक विकास के प्रमुख चालक सिद्धांतों पर उनका जोर आज पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक है। ग्रामीण विकास पर गांधीवादी सिद्धांत महात्मा गांधी जी की शिक्षाओं और मान्यताओं को संदर्भित करते हैं। ये सिद्धांत, जिनमें अहिंसा, आत्मनिर्भरता और विकेंद्रीकरण शामिल हैं, ग्रामीण विकास के लिए अत्यधिक प्रासंगिक हो सकते हैं। उनका मानना था कि भारत का विकास ग्रामीण समुदायों के सुधार पर आधारित होना चाहिए। ग्रामीण विकास पर गांधी जी के कुछ प्रमुख सिद्धांत हैं :

**स्वराज या स्व-शासन :** गांधी जी स्व-शासन की अवधारणा में विश्वास करते थे, जहां लोग एक केंद्रीकृत प्राधिकरण द्वारा शासित होने के बजाय खुद पर शासन करते हैं। यह सिद्धांत व्यक्तियों और समुदायों को अपने निर्णय लेने और अपने जीवन पर नियंत्रण रखने के लिए सशक्त बनाने के महत्व पर जोर देता है।

**स्वदेशी या आत्मनिर्भरता :** गांधी जी ने अन्य देशों से आयात पर निर्भर रहने के बजाय भारत के भीतर ही वस्तुओं के उत्पादन और उपभोग की वकालत की। यह सिद्धांत आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देता है और देश के भीतर रोजगार के अवसर पैदा करता है।

**ग्रामोद्योग :** गांधी जी का मानना था कि ग्रामीण विकास ग्रामोद्योग को बढ़ावा देने पर आधारित होना चाहिए। इससे रोजगार के अवसर पैदा होंगे और ग्रामीण आबादी के लिए आय उत्पन्न होगी।

**विकेंद्रीकरण :** गांधी जी ने सत्ता और निर्णय लेने के विकेंद्रीकरण के महत्व पर जोर दिया। उनका मानना था कि स्थानीय समुदायों का अपने संसाधनों पर नियंत्रण होना चाहिए और उन्हें ऐसे निर्णय लेने का अधिकार

होना चाहिए जो उनके जीवन को प्रभावित करते हों।

**अहिंसा या अहिंसा :** गांधी जी सामाजिक परिवर्तन को प्रभावित करने के साधन के रूप में अहिंसक प्रतिरोध की शक्ति में विश्वास करते थे। उनका मानना था कि अहिंसक प्रतिरोध न्याय और समानता प्राप्त करने का नैतिक रूप से बेहतर तरीका है।

**शिक्षा :** गांधी जी का मानना था कि ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए शिक्षा आवश्यक है। उन्होंने साक्षरता को बढ़ावा देने और ग्रामीण समुदायों को शिक्षा प्रदान करने के महत्व पर जोर दिया।

**पंचायती राज या स्थानीय स्वशासन :** गांधी जी का मानना था कि सरकार को विकेंद्रीकृत किया जाना चाहिए और शक्ति स्थानीय स्वशासी निकायों को दी जानी चाहिए। उनका मानना था कि स्थानीय स्वशासन बेहतर निर्णय लेने की अनुमति देगा जो समुदाय की विशिष्ट आवश्यकताओं और परिस्थितियों के अनुरूप होगा।

**सत्याग्रह या अहिंसक प्रतिरोध :** गांधी जी सामाजिक परिवर्तन को प्रभावित करने के साधन के रूप में अहिंसक प्रतिरोध की शक्ति में विश्वास करते थे। उनका मानना था कि अहिंसक प्रतिरोध न्याय और समानता प्राप्त करने का नैतिक रूप से बेहतर तरीका है।

**ग्राम स्वराज या ग्राम स्वशासन :** गांधी जी का मानना था कि गांवों को आत्मनिर्भर होना चाहिए और उनका विकास उनकी अपनी जरूरतों और संसाधनों पर आधारित होना चाहिए। यह सिद्धांत ग्रामीण समुदायों को अपने विकास का प्रभार लेने के लिए सशक्त बनाने के महत्व पर जोर देता है।

**सर्वोदय या सभी का कल्याण :** गांधी जी का मानना था कि समाज के सभी सदस्यों का कल्याण महत्वपूर्ण है। उन्होंने सामाजिक समानता को बढ़ावा देने और हाशिए पर रहने वाले समुदायों को सशक्त बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया।

**वर्तमान परिदृश्य :-**

हाल के वर्षों में भारत में ग्रामीण विकास के क्षेत्र में कुछ सकारात्मक विकास हुए हैं। सरकार के प्रमुख कार्यक्रम, प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना (पीएमजेएसवाई) का लक्ष्य सभी ग्रामीण बस्तियों को सभी मौसम वाली सड़कों से जोड़ना है, जिससे दूरदराज के क्षेत्रों में अलगाव को कम करने में मदद मिली है। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआरएलएम) ग्रामीण क्षेत्रों में उद्यमिता और आय-सृजन गतिविधियों को बढ़ावा देने, महिलाओं और हाशिए पर रहने वाले समुदायों को सशक्त बनाने में भी सफल रहा है। ग्रामीण परिवारों को रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा)। इसके अतिरिक्त, कई गैर-सरकारी संगठन (एनजीओ) और समुदाय-आधारित संगठन (सीबीओ) जमीनी स्तर पर पहल के माध्यम से ग्रामीण विकास की दिशा में काम कर रहे हैं। इसके अलावा, किसान क्रेडिट कार्ड योजना और प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना जैसी पहल ने किसानों को वित्तीय सहायता प्रदान की है और कृषि उत्पादकता में सुधार लाने में मदद मिली। इन नीतियों ने ग्रामीण क्षेत्रों के समग्र विकास में योगदान दिया है, जिससे वहां रहने वाले लोगों के जीवन स्तर में सुधार हुआ है।

**निष्कर्ष :-**

ग्रामीण विकास के बारे में गांधीवादी दर्शन सतत ग्रामीण विकास हासिल करने के लिए एक मूल्यवान रूपरेखा प्रदान करता है। ग्राम विकास के रूप में महात्मा गांधी द्वारा अपनाया गया ग्रामीण विकास का सिद्धांत

एक शक्तिशाली अवधारणा है जो भारत में ग्रामीण समुदायों को बदलने की क्षमता रखता है। गांधी जी के दर्शन ने आत्मनिर्भरता, शिक्षा और सशक्तिकरण के महत्व पर जोर दिया और यह आज भी नीति निर्माताओं और विकास चिकित्सकों को प्रेरित करता है। सीमित संसाधन और राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी जैसी कुछ चुनौतियों के बावजूद, कई सकारात्मक विकास हुए हैं जो भारत में ग्रामीण विकास के भविष्य की उम्मीद जगाते हैं। डिजिटल इंडिया और मेक इन इंडिया अभियानों जैसी पहलों के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र पर सरकार का नए सिरे से ध्यान केंद्रित करना, सामाजिक उद्यमिता और नवाचार के उदय के साथ मिलकर, स्थायी ग्रामीण विकास के लिए आशाजनक अवसर प्रदान करता है।

हालाँकि, यह समझना महत्वपूर्ण है कि ग्रामीण विकास एक जटिल और बहुआयामी मुद्दा है जिसके लिए समग्र दृष्टिकोण और स्थानीय समुदायों सहित सभी हितधारकों की भागीदारी की आवश्यकता होती है। प्रभावी नीतियों, कार्यक्रमों और पहलों के कार्यान्वयन के साथ-साथ ग्रामीण भारत को आकार देने वाले सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक कारकों की गहरी समझ भी होनी चाहिए। इस संदर्भ में, गांधी जी की विरासत और ग्राम विकास का दर्शन भारत में ग्रामीण विकास के लिए एक शक्तिशाली ढांचा प्रदान करता है, और इसका अध्ययन और आधुनिक समय की चुनौतियों और अवसरों के संदर्भ में लागू किया जाना चाहिए। सतत और न्यायसंगत ग्रामीण विकास की निरंतर खोज न केवल एक नैतिक अनिवार्यता है, बल्कि भारत के भविष्य की वृद्धि और विकास का एक प्रमुख चालक भी है। गांवों के सतत विकास को सुनिश्चित करने के लिए अधिक सामुदायिक भागीदारी, संसाधनों के समान वितरण और प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग की आवश्यकता है।

### संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. Gandhi, M.K., The Story Of My Experiment With Truth. Navajivan Publishing House, Ahmedabad, 1927.
2. Gandhi, M.K., Hind Swaraj. Navajivan Publishing House, Ahmedabad, 1938.
3. Lal, B.K., Contemporary Indian Philosophy. Motilal Banarsidass Publishers Pvt.Ltd., Delhi, 1973.
4. Amritananda Das, Foundations of Gandhian Economics. St. Martin's Press, NewYork, 1979.
5. SCERT, Gandhian Studies, Class XI, Kerala, 2016.
6. <https://www.mkgandhi.org/ebks/construct.pdf>
7. <https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC6515742/#:~:text=The%20Gandhian%20vision%20of%20an,ideal%20village%20is%20very%20simple.>
8. [https://www.researchgate.net/publication/360440248\\_Mahatma\\_Gandhi's\\_Views\\_on\\_Rural\\_Development](https://www.researchgate.net/publication/360440248_Mahatma_Gandhi's_Views_on_Rural_Development)
9. <https://old.amu.ac.in/emp/studym/6561.pdf>
10. [https://www.shaalaa.com/question-bank-solutions/read-the-following-passage-carefully-and-answer-the-questions-given-below-rural-development-is-one-of-the-thrust-areas-of-administration-rural-development-in-india\\_146661](https://www.shaalaa.com/question-bank-solutions/read-the-following-passage-carefully-and-answer-the-questions-given-below-rural-development-is-one-of-the-thrust-areas-of-administration-rural-development-in-india_146661)
11. <https://www.socialworkin.com/2022/08/gandhian-model-of-rural-development.html>
12. <https://www.jstor.org/stable/41856398>

mugalmehboob.mugal001@gmail.com



# मानवाधिकार के प्रति गांधी का दृष्टिकोण : एक गहन अध्ययन

मोहन लाल दायमा

सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान, स्व. श्री गुरुशरण छाबड़ा राजकीय महाविद्यालय, सूरतगढ़।

## शोध-सार :-

मोहनदास करमचन्द गांधी को व्यापक रूप से बीसवीं सदी के महानतम राजनीतिक और आध्यात्मिक नेताओं में से एक के रूप में पहचाना जाता है। वैसे तो इन्हें कई उपनाम और उपाधियां प्राप्त हैं, पर उनमें से प्रमुख यह है कि इन्हें संपूर्ण विश्व में भारत के राष्ट्रपिता और शांतिदूत के रूप में भी जाना जाता है। गांधी जी के अनुसार सत्याग्रह, शिक्षा, एकता, सत्य आदि गांधीवादी अवधारणाएँ मानव अधिकारों और जिम्मेदारियों से संबंधित हैं। गांधीजी सदैव उनके लिए प्रेम, सार्वभौमिक भाईचारा, स्वतंत्रता, न्याय और समानता के पक्षधर थे। गांधी जी के अनुसार "समुदाय की सेवा, ईश्वर की सेवा" है। मानवाधिकार उन मौलिक अधिकारों को कहा जाता है जो विश्व के किसी भी भाग में रहने वाले प्रत्येक पुरुष या महिला को मनुष्य के रूप में जन्म लेने के आधार पर इसका अधिकार होना चाहिए। मानवाधिकारों का मूल आधार गैर-भेदभाव और उपचार की समानता की अवधारणा है।

गांधी जी का दृष्टिकोण मानवाधिकारों के प्रति अद्वितीय था, और वे अपने जीवन में इन मूल आदर्शों के साथ काम करते रहे और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के माध्यम से उन्हें प्रकट करते रहे। इनके माध्यम से, उन्होंने न केवल भारतीय स्वतंत्रता की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाए बल्कि विश्वभर में मानवाधिकारों के प्रति उत्सुकता फैलाने में भी सफल रहे। महात्मा गांधी मानवाधिकारों के प्रति अपने जीवन और दर्शन के माध्यम से महत्वपूर्ण दृष्टिकोण रखते थे। वे अहिंसा, सत्य, स्वशासन, और समाज की सामाजिक न्याय की महत्वपूर्ण भावनाओं के प्रमुख प्रवक्ता और अनुयायी थे, और इन मूल आदर्शों के माध्यम से उन्होंने मानवाधिकारों को बढ़ावा देने का काम किया।

गांधी जी ने मानवाधिकार के प्रति अपना दृष्टिकोण मुख्यतः आत्मनिर्णय का अधिकार, जीवन का अधिकार, अत्याचार और अमानवीय व्यवहार का निषेध, दास प्रथा का निषेध, काम का अधिकार, मातृत्व और बचपन आदि से संबंधित अधिकार, सामाजिक सुरक्षा का अधिकार, स्वच्छ पर्यावरण का अधिकार, सूचना का अधिकार, विकास का अधिकार, मूल निवासियों का अधिकार, महिलाओं के अधिकार, बच्चों के अधिकार आदि बिन्दुओं में बताया।

महिलाओं को पूर्ण एवं समान भागीदारी के तहत राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक, नागरिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जैसे बच्चों को भोजन का अधिकार, खेल खेलने का अधिकार,

स्वास्थ्य का आनंद लेने का अधिकार, शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार, अपने विचार व्यक्त करने का अधिकार, पालन करने का अधिकार है। साथ ही साथ वे जिस धर्म की आकांक्षा रखते हैं, उस धर्म का पालन करने का भी अधिकार है।

इसलिए, गांधी ने इस कड़वी सच्चाई को स्वीकार किया कि वास्तव में केवल वे ही अपने योग्य अधिकारों को हासिल करने में सफल होते हैं जो प्रयास करते हैं और अपना सर्वस्व बलिदान करने के लिए तैयार होते हैं।

### **परिचय :-**

महात्मा गांधी, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नेता और गांधीवाद के प्रवर्तक, भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण व्यक्तित्व माने जाते हैं। उनका पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था, और वे 2 अक्टूबर 1869 को पोरबंदर, गुजरात, भारत में पैदा हुए थे। महात्मा गांधी का प्रमुख कार्यक्षेत्र सत्याग्रह और अहिंसा का प्रचार था। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को अहिंसा और सत्याग्रह के माध्यम से आगे बढ़ाया और इसे एक गैर-हिंसक आंदोलन बना दिया।

महात्मा गांधी के नेतृत्व में, भारत ने अंग्रेजों के खिलाफ अनेक सत्याग्रह और आंदोलन किए जिनमें सबसे मशहूर 'नमक सत्याग्रह' और 'दांडी मार्च' थे। इन सत्याग्रहों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। उन्होंने विभाजनों को दूर करने के लिए हिन्दू-मुस्लिम एकता को प्रोत्साहन दिया। उन्होंने 'हरिजन एक' (सभी मानव एक ही परमात्मा के बच्चे हैं) का संदेश दिया और सभी धर्मों के लोगों के लिए समान अधिकार की मांग की।

गांधी जी को अहिंसा और शांति के दूत के रूप में जाना जाता है। सत्याग्रह, शिक्षा, एकता, सत्य आदि पर गांधीवादी अवधारणाएँ मानव अधिकारों और जिम्मेदारियों से संबंधित हैं। सत्याग्रह का वास्तविक अर्थ सत्य को धारण करना है। इसलिए, गांधी ने सत्याग्रह को प्रेम-बल, आत्मा-बल या आध्यात्मिक-बल भी कहा। गांधी जी शिक्षा को मनुष्य निर्माण और सामाजिक परिवर्तन के सबसे शक्तिशाली उपकरणों में से एक मानते थे। उनका मानना था कि शिक्षा ही मानव व्यक्तित्व के विकास में प्रभावी भूमिका निभा सकती है। गांधी जी ने महिला शिक्षा की वकालत की और कहा कि यह सामाजिक उत्थान के लिए अति आवश्यक है। गांधी जी के अनुसार अहिंसा के बिना सत्य की खोज और प्राप्ति संभव नहीं है। अहिंसा और सत्य एक सिक्के के दो पहलू की तरह हैं।

### **मानवाधिकार के वैचारिक पहलू :-**

मानवाधिकार अनिवार्य रूप से व्यक्ति के अधिकार हैं और वे अधिकार हैं जो प्रत्येक मनुष्य को किसी भी अन्य विचार के बावजूद अपने अस्तित्व के आधार पर राज्य या अन्य सार्वजनिक प्राधिकरण के विरुद्ध प्राप्त होने चाहिए। वे मानव जाति की मांग पर आधारित हैं, एक ऐसे जीवन के लिए जिसमें मनुष्य की अंतर्निहित गरिमा को सम्मान और सुरक्षा मिलेगी। मानवाधिकार उन मौलिक अधिकारों को कहा जाता है जो दुनिया के किसी भी हिस्से में रहने वाले प्रत्येक पुरुष या महिला को इंसान के रूप में जन्म लेने के आधार पर मिलना चाहिए।

### **एमनेस्टी इंटरनेशनल रिपोर्ट, सिनिको के अनुसार अधिकारों को तीन श्रेणियों में रखा गया है :-**

1. **नागरिक और राजनीतिक अधिकार :-** यह अधिकार स्वतंत्रता-उन्मुख हैं और इनमें मुख्यतः व्यक्ति का जीवन, स्वतंत्रता और सुरक्षा; विवाह करने और परिवार बसाने का अधिकार, निष्पक्ष सुनवाई, यातना और गुलामी

से मुक्ति; राजनीतिक भागीदारी; राय, अभिव्यक्ति, विचार, विवेक और धर्म की स्वतंत्रता; आंदोलन, संघ और सभा की स्वतंत्रता, स्वतंत्र चुनाव और सार्वजनिक मामलों में भागीदारी आदि अधिकार शामिल हैं ।

**2. आर्थिक और सामाजिक अधिकार :-** यह सुरक्षा—उन्मुखी अधिकार हैं। इसके अंतर्गत काम करने का अधिकार, शिक्षा, जीवन का उचित मानक, भोजन, आश्रय और स्वास्थ्य देखभाल, आराम और अवकाश, ट्रेड यूनियनों में शामिल होने का अधिकार आदि सम्मिलित किये जाते हैं।

**3. पर्यावरण, सांस्कृतिक और विकासात्मक अधिकार :-** इनमें स्वच्छ और विनाश से सुरक्षित वातावरण में रहने का अधिकार, और सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक विकास के अधिकार शामिल हैं।

**मानव अधिकारों के प्रति गांधीजी का दृष्टिकोण :-**

गांधी जी के राजनीतिक अधिकारों की सूची में उन सभी नागरिकों को वोट देने का अधिकार शामिल किया जा सकता है जो उक्त तीनों योग्यताओं को पूरा करते हैं, चाहे उनकी जाति, रंग, पंथ, लिंग, धर्म, संपत्ति, योग्यता या जन्म स्थान कुछ भी हो। गांधी जी के सत्याग्रह संघर्षों की विशेषता उनके अधिकारों की कठोर रक्षा थी, जिनके बारे में उनका मानना था कि नागरिकों को विदेशी शासन से मुक्त राज्य में आनंद मिलेगा। उनका मानना था कि अहिंसा के पालन के अनुरूप नागरिक स्वतंत्रता, राजनीतिक और सामाजिक जीवन की सांस है। महात्मा गांधी मानव अधिकारों के प्रति अपने दृष्टिकोण को महत्वपूर्ण मानते थे और उन्होंने अपने जीवन और नेतृत्व के दौरान मानव अधिकारों की समर्थन की थी। उनका दृष्टिकोण निम्नलिखित प्रमुख पहलुओं में व्यक्त होता है :-

**1. अहिंसा का पालन :-** महात्मा गांधी का मूल मंत्र था कि मनुष्य को सदैव अहिंसा और नैतिकता का पालन करना चाहिए। उन्होंने यह सिखाया कि आपके अधिकारों की रक्षा करने के लिए आपको हिंसा का सहारा नहीं लेना चाहिए।

**2. सत्याग्रह का बढ़ावा :-** गांधी जी ने सत्याग्रह को एक महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में बढ़ावा दिया, जिसका मतलब है सत्य के लिए आपकी स्वयं की आत्मा का योगदान करना। उन्होंने दिखाया कि सत्याग्रह के माध्यम से आप मानव अधिकारों की रक्षा कर सकते हैं और अपनी मांग को हासिल कर सकते हैं।

**3. सबको समानता अधिकार :-** महात्मा गांधी ने सभी व्यक्तियों को समान अधिकारों की प्राप्ति का हकदार माना। गांधी जी सदैव जातिवाद, लैंगिक भेदभाव, और असमानता के खिलाफ थे।

**4. आत्म-निर्भरता :-** गांधी जी ने आत्म-निर्भरता को महत्वपूर्ण माना और लोगों को स्वतंत्रता के लिए आत्म-सहायता करने की समझ दिलाई। उन्होंने खुद को और अपने अनुयायियों को स्वयंसेवा और स्वशासन की ओर प्रोत्साहित किया।

**5. महिलाओं की भागीदारी :-** महात्मा गांधी ने समाज में महिलाओं की भागीदारी को भी बढ़ावा दिया और महिलाओं के अधिकारों की मांग की। उन्होंने महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया और उनके समाज में सामाजिक और आर्थिक समानता की मांग की।

**6. सामूहिक अधिकार :-** सामूहिक अधिकारों की श्रेणी हाल ही में उत्पन्न हुई है और इस वर्ग के अंतर्गत लाए जा रहे अधिकारों की संख्या दुनिया में हो रहे नए विकास के प्रत्यक्ष अनुपात में बढ़ेगी। स्वच्छ पर्यावरण का अधिकार; सूचना का अधिकार; मूल निवासियों का अधिकार; महिलाओं के अधिकार; बच्चों के अधिकार; विस्थापित

और प्रवासी श्रमिकों के अधिकार; कैदियों के अधिकार; बौद्धिक संपदा आदि के अधिकार को सामूहिक या समूह अधिकारों से संबंधित माना जाता है।

**7 धार्मिक अधिकार :-** गांधी जी धर्मनिरपेक्षता के कट्टर समर्थक थे और चाहते थे कि लोग अपनी अंतरात्मा के प्रति सच्चे रहें। उन्होंने लोगों को बिना किसी बाधा के अपनी पसंद के धर्म को मानने, उसका पालन करने और उसका प्रचार करने के अधिकार की वकालत की। उनका विचार था कि सांप्रदायिक शत्रुता मनुष्य की अंतरात्मा का गंभीर उल्लंघन है, जो व्यक्ति को अपनी पसंद के धर्म का पालन करने का अधिकार देती है और साथ ही उसे साथी मनुष्यों द्वारा इस अधिकार के स्वतंत्र प्रयोग को सहन करने के लिए बाध्य करती है। लेकिन, वह मूल रूप से जबरन धर्मांतरण के विरोधी थे, जिसे वह मनुष्य द्वारा ईश्वर के साथ साझा की जाने वाली दिव्यता का घोर उल्लंघन मानते थे।

**8. शैक्षिक अधिकार :-** गांधी जी ने शिक्षा की समस्या को प्राथमिक महत्व दिया। वह जानते थे कि जिस समाज में बहुसंख्यक लोग अशिक्षित हैं, वहां स्वराज और लोकतंत्र का कोई अर्थ नहीं है। उन्होंने जिस शिक्षा योजना को लागू किया, उसे उस स्थान के नाम पर वर्धा शिक्षा योजना के नाम से जाना जाता है। वह चाहते थे कि राज्य प्राथमिक शिक्षा निःशुल्क कर दे ताकि उन लोगों के रास्ते की बाधाएँ दूर हो सकें जो इसे वहन नहीं कर सकते। जहाँ तक लड़कियों के शैक्षिक अधिकारों का सवाल है, गांधी जी ने पुरुष और महिला के बीच कोई अंतर नहीं किया। शैक्षिक रूप से पिछड़े वर्गों को शिक्षा के मामले में विशेष उपचार के अधिकार की वकालत की गई ताकि वे भी शिक्षित लोगों के स्तर तक आ सकें और अपनी सुविधाओं का आनंद उठा सकें।

9. इसके अतिरिक्त कई अन्य मानवाधिकार और हैं जिन पर गाँधी जी ने गहन चिंतन करने के बारे में कहा जैसे— महिला अधिकार, बाल अधिकार, जीवित रहने का अधिकार, सुरक्षा का अधिकार, विकास का अधिकार, भागीदारी का अधिकार आदि।

महात्मा गांधी का दृष्टिकोण मानवाधिकारों के प्रति उनके अद्वितीय योगदान का प्रतीक है, और उनके नेतृत्व में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान यह मुद्दा महत्वपूर्ण था। उन्होंने अहिंसा, सत्याग्रह, और समानता के मूल मंत्रों के माध्यम से मानवाधिकारों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को प्रमोट किया और उनके लिए लड़ते रहे।

**निष्कर्ष :-**

मनुष्य की सांस्कृतिक विरासत पर अपने विचारों के अनुरूप, गांधी जी ने प्राकृतिक अधिकारों के एक समूह की भी सदस्यता ली, और उन्हें विभिन्न प्रकार से जन्मसिद्ध अधिकार, प्राथमिक अधिकार या अंतर्निहित अधिकार के रूप में वर्णित किया। हालाँकि, ये अधिकार केवल उसी अर्थ में प्राकृतिक हैं जिसमें ग्रीन प्राकृतिक शब्द का उपयोग करते हैं, अर्थात्, वे एक नैतिक क्षमता की पूर्ति के लिए उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार, गांधी जी ने एक साथ अधिकारों के दो अलग-अलग सिद्धांतों की सदस्यता ली, अर्थात् वे अधिकार जो लोग पहले संबंधित कर्तव्यों का पालन करके अर्जित करते हैं, और प्राकृतिक अधिकार जिनके वे सहज रूप से हकदार हैं, यानी अपनी सांस्कृतिक विरासत के आधार पर।

इसलिए, गांधी ने इस कड़वी सच्चाई को स्वीकार किया कि वास्तव में केवल वे ही अपने योग्य अधिकारों को हासिल करने में सफल होते हैं जो प्रयास करते हैं और अपना सर्वस्व बलिदान करने के लिए तैयार होते हैं।

### संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. जैक डोनेली, अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार, (कोलोराडो, वेस्टव्यू प्रेस, 1993), पी. 25.
2. जैक डोनेली, अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार, पी. 21.
3. मनोरंजन मोहंती, 'भारत में अधिकारों की बदलती परिभाषा,' सुजाता पटेल, जसोधारा बागची और कृष्णा राज, संपा., थिंकिंग सोशल साइंसेज इन इंडिया : एसेज़ इन ऑनर ऑफ ऐलिस थॉर्नर (नई दिल्ली : सेज, 2002), पी। 437.
4. एमके गांधी, अधिकार और कर्तव्य, राघवन अय्यर में, संस्करण, द मोरल एंड पॉलिटिकल राइटिंग्स ऑफ महात्मा गांधी (ऑक्सफोर्ड : क्लेरेंडन प्रेस, 1986), वॉल्यूम। 3, पृ. 496. (पहली बार हरिजन में प्रकाशित, 6 जुलाई 1947)।
5. स्रोत : गांधी मार्ग, वॉल्यूम। 26, संख्या 3, अक्टूबर-दिसंबर 2004
6. Agarwal, Shriman Naryan.(1946), Gandhian Constitution for Free India, Kitabistan, Allahabad, 1946.
7. Aruna God (2004), "Violence and Protective Measures for Women Development and Empowerment", Deep & Deep Publication, Delhi - 27. V1
8. Pauline, Bart (1993), "Violence Against Women", SAGE Publication, New Delhi 48. Publication, New Delhi. 46 Sanajaaba and Naovem (1992), "Human Rights Principles, practice and abuse" Osmas Publications, New Delhi.
9. Sivagami, Paramasivam (2008), "Human Rights - A Study", Sriram Computer Prints & Offset, Salem .
10. Sunanda Sagar, Rosemeyer (2005), "Women's Rights Search for Identity", Dominant Publisher, New Delhi - 02.

Mohandayma13@gmail.com



# गाँधीवादी दर्शन का मूल आधार : धर्म (सत्य और अहिंसा) अथवा राजनीति का आध्यात्मिकरण की सार्थकता

फरसा राम चौधरी

सहायक आचार्य इतिहास, श्री जैन पी. जी. कॉलेज, बीकानेर।

## प्रस्तावना :-

राजनीतिक चिन्तन के क्षेत्र में ऐसे अनेक विचारक हुए हैं जिन्होंने राजनीतिक और धर्म को एक-दूसरे से पृथक किया है परन्तु गाँधी जी की विचारधारा इसके विपरीत है। गाँधी जी के द्वारा राज्य, शासन, समाज और आर्थिक संगठन के संबंध में जो विचार व्यक्त किए गए हैं, उन सभी विचारों का मूल आधार उनका धार्मिक दृष्टिकोण ही है।

गाँधी जी मूलतः धार्मिक प्रकृति के व्यक्ति थे और जिस प्रकार उन्होंने अपने जीवन में धर्म का निर्वाह किया उस आधार पर उन्हें भारतीय परम्परा का एक महान सन्त कहा जा सकता है, एक धार्मिक नेता होते हुए भी गाँधी जी धार्मिक रूढ़िवादिता और धर्मान्धता के समर्थक नहीं थे और धर्म के संबंध में उनका दृष्टिकोण लौकिक और मानवतावादी था। गाँधी जी प्राणिमात्र की सेवा ही वास्तविक आध्यात्मिक जीवन का मूल तत्व मानते थे उनका कथन था— “मानव क्रियाओं से पृथक कोई धर्म नहीं है।”

इसी प्रकार वे राजनीति भाव में नीति अर्थात् धर्म और मानवता का प्राथमिकता देते थे, ‘राज’ अर्थात् ‘सत्ता’ को नहीं।

गाँधी जी की राजनीतिक विचारधारा का मूल आधार राजनीतिक के प्रति उनका यह आध्यात्मिक दृष्टिकोण ही है। गाँधी जी धर्म और राजनीति को पृथक करने के पक्ष में नहीं थे। गाँधी जी का विचार है कि राजनीतिक सामाजिक और आर्थिक कार्यों को पूर्णतया पृथक भागों में विभाजित कही किया जा सकता और मानवीय कार्यों से पृथक रूप में धर्म का कोई अस्तित्व नहीं है।

## महात्मा गाँधी जीवन परिचय :-

महात्मा गाँधी का जन्म 2 Oct 1869 ई. को गुजरात राज्य के पोरबन्दर नामक स्थान पर हुआ था। गाँधी जी के पिता का नाम करमचन्द गाँधी था। और माता का नाम पूतलीबाई था। इनका पूरा नाम मोहनदास करमचन्द गाँधी था।

गाँधी जी ने अपनी वकालत की पढ़ाई लन्दन से की। वे 1891 में लन्दन से लौटे और वकालत करनी आरम्भ कर दी। काठियावाड़ तथा बम्बई में थोड़े दिनों तक वकालत करने के बाद 1893 एक धनाढ्य गुजराती व्यापारी अब्दुल्ला की ओर से एक मुकद्दमें की पैरवी करने दक्षिण अफ्रीका गए।

सन् 1906 से उन्होंने दक्षिणी अफ्रीका सरकार के (एशियाटिक रजिस्ट्रेशन ऐक्ट) के विरुद्ध सत्याग्रह किया। दक्षिण अफ्रीका में इस प्रकार की सफलता प्राप्त करने के बाद महात्मा गाँधी ने सन 1914 में भारतीय राजनीति में प्रवेश किया।

गाँधी जी ने भारत में अपना राजनीतिक जीवन 1917 में चम्पारन के सत्याग्रह से आरम्भ किया इसमें एक वर्ष बाद खेड़ा जिले में कर न दो आन्दोलन और अहमदाबाद के मजदूर आन्दोलन में उन्होंने सफलता प्राप्त की। हिन्दू मुस्लिम एकता में विश्वास रखने वाले गाँधी जी ने भारत में अगस्त 1920 में असहयोग आंदोलन प्रारंभ किया। असहयोग आन्दोलन ने भारतीय जनता को जाग्रत करने की दिशा में अभूतपूर्व कार्य किया लेकिन आन्दोलन के प्रसार के साथ-ही साथ आन्दोलन हिंसक रूप धारण करने लगा।

अतः 4 फरवरी 1922 के चौरी-चौरा काण्ड से दुःखी होकर गाँधी जी ने 12 फरवरी 1922 को आन्दोलन स्थगित कर दिया।

सन् 1930 में गाँधी जी ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सविनय अवज्ञा आन्दोलन का संचालन किया और सन् 1942 में उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम अहिंसक संघर्ष भारत छोड़ो आन्दोलन का सन्देश और करो या मरो (do or die) का नारा दिया।

30 जनवरी 1948 को नाथूराम गौडसे नामक व्यक्ति ने गोली मार कर हत्या कर दी। उनकी मृत्यु के समय महान वैज्ञानिक आइन्स्टीन ने कहा था, "आगे आने वाली पीढ़िया शायद ही विश्वास कर सकेगी कि उन जैसे हार-मास का पुतला कभी इस भूमि पर पैदा हुआ था।"

### **गांधी दर्शन का आधार : धर्म (सत्य और अहिंसा) अथवा राजनीति का आध्यात्मिककरण :-**

सत्य और अहिंसा को गाँधी जी मनुष्य में अन्तर्निहित धार्मिक भाव के विकास के लिए अपरिहार्य समझते थे। गाँधीवादी विचारधारा में सर्वोच्च महत्व सत्य और अहिंसा के सिद्धान्तों को प्राप्त है। सत्य क्या है, इसमें अन्तर में गाँधी जी ने कहा था यह एक बड़ा कठिन प्रश्न है, किन्तु स्वयं अपने लिए मैंने इसे हल कर लिया है। तुम्हारी अन्तरात्मा जो कहती है, वही सत्य है।

गाँधी का मानना है कि जो हमारी आत्मा कहें वही सत्य है लेकिन प्रश्न पैदा होता है कि सभी व्यक्तियों की अन्तरात्मा की आवाज सत्य हो सकती है। गाँधी जी इस प्रश्न के उत्तर में कहते हैं कि विभिन्न परिस्थितियों में रहते हुए लोगों की अन्तरात्मा की आवाज एक-दूसरे से भिन्न हो पर वह सत्य है— चरम सत्य नहीं। इस प्रकार एक सत्य दूसरे के लिए असत्य हो सकता है यदि चरमत्व ईश्वरीय सत्य का ज्ञान प्राप्त करना है। तो व्यक्ति को सत्य का प्रयोग करना होगा।

गाँधी जी ने कहा, सत्य केवल शब्दों की सत्यता ही नहीं बल्कि विचारों की सत्यता भी है और हमारी अवधारणा का सापेक्षिक सत्य ही नहीं है बल्कि निरपेक्ष सत्य हो, जो ईश्वर ही है। गाँधी जी सत्य को निरपेक्ष सत्य के रूप में ग्रहण करते हैं।

गाँधी जी ने कहा मैं सत्य का एक विनम्र शोधक इसी जन्म में मैं आत्मसाक्षात्कार के लिए मोक्ष प्राप्त हूँ। करने के लिए आतुर हूँ करोड़ों लोगो के हृदय में बसे ईश्वर के सिवाय में और किसी ईश्वर को नहीं जानता। लोग अपने अन्दर ईश्वर को पहचानने नहीं।

## सत्य एक हित :-

गाँधी जी सत्य को ईश्वर और ईश्वर को सत्य के रूप में मानते हैं। सत्य हमेशा हितकार और आनन्द है। इसमें शोक के लिए कोई स्थान नहीं है। सत्य से चित् और आनन्द का अनिवार्य संबंध है चित् का आशय ज्ञान है। इसलिए सत्य का सुख आनन्द भी शाश्वत होता है।

## सत्य की परिधि :-

गाँधी जी ने सत्य के क्षेत्र का विस्तार किया। वह वाणी के सत्य को ही सत्य नहीं मानते अपितु उनके सत्य के विचार और आचार का सत्य भी सम्मिलित है। गाँधी जी ने कहा पृथ्वी सत्य के बल पर टिकी हुई असत् सत्य के माने हैं— “नहीं” सत्-सत्य जहा आसत् अथवा अस्तित्व ही नहीं है। और जो सत् अर्थात् है। उनका नाश कौन कर सकता है। बस इसी में सत्याग्रह का समस्त शास्त्र समाविष्ट है।

सत्य स्वभाव से ही प्रकाशमय है जैसे ही अविद्यारूपी आवरण हट जायेगा वैसे ही सत्य रूपी सूर्य प्रकाशित हो उठेगा। इसलिए सत्यान्वेषण के लिए आत्म-विश्लेषण और आत्म शुद्धि आवश्यक है गाँधी जी का विचार था कि सत्यनिष्ठा पर अड़िग रहने के लिए आपेक्षित शक्ति उन्हें अपनी नैतिक शुद्धता तथा काम-क्रोध आदि भयंकर शत्रुओं को अपने से दूर रखने से मिली। इससे दृष्टि और निर्णय दूषित नहीं हो सके। यही कारण था कि वे अन्य राजनीतिज्ञों की अपेक्षा अपनी समस्याओं के आधारभूत सत्य को उन्होंने अच्छी तरह देखा और समझो। इनके साथ-साथ अपनी खामियों-भूलों को भी महसूस करते थे और निःसंकोच रूप से अपनी प्रतिष्ठा की परवाह नहीं करते हुए सार्वजनिक रूप से स्वीकार कर लेते थे।

गाँधी जी ने कहा कि सत्य का परिवेश बहुत व्यापक है उसमें केवल व्यक्ति ही नहीं बल्कि समस्त समाज और राष्ट्र का भी समावेश है। सम्पूर्ण सत्य (मन, वचन, कर्म का सत्य) का पालन धर्म राजनीति, अर्थनीति, परिवार सब में होना चाहिए, व्यक्ति और समाज का कोई पक्ष सत्य से विरक्त न हो। राजनीति में असत्य को आधार माना जाता है लेकिन गाँधी जी ने अपने आचरण से सिद्ध कर दिया कि राजनीति में सत्य का पालन पूर्णतः संभव है।

## अहिंसा : मानव जीवन की महानतम शक्ति :-

गाँधीजी अहिंसा को मानव का प्राकृतिक गुण मानते थे और उनका विचार था कि मनुष्य स्वभावतः अहिंसा प्रिय है तथा वह परिस्थितियों वश ही हिंसावान बनता है। मनुष्य की अहिंसक वृत्ति का ही परिणाम है, कि आदिमकाल का वह व्यक्ति जो परिस्थितियों वश नरभक्षी के रूप में जीवन व्यतीत करता था। आज का सभ्य और संस्कृत प्राणी बन गया है। इस प्रकार समस्त मानव इतिहास में हम देखते हैं कि मनुष्य की श्रेष्ठ प्रवृत्तियों का विकास हो रहा है। इसमें सन्देह नहीं कि संसार में हिंसा को पूर्ण अनास्तित्व नहीं है। यह संसार में विद्यमान है और कभी-कभी अपना रोद्र रूप भी प्रकट करती है, परन्तु मानव समाज के विकास का इतिहास यही बताते हैं कि मनुष्य मूल रूप में अहिंसाप्रिय है और उसकी इस अहिंसक वृत्ति के कारण ही मानव जाति निरन्तर बढ़ती जा रही है।

इस प्रकार अहिंसा को मानवीय जीवन का सर्वोच्च नियम मानते हुए गांधी जी का मत था कि अहिंसा के आधार पर ही एक व्यवस्थित समाज की स्थापना और मानव जीवन की भावी उन्नति सम्भव है। गाँधीवाद की मूल धारणा है, कि अहिंसा मानव जाति के पास उपलब्ध महानतम शक्ति है। वे अहिंसा को विश्व के विनाशकारी

शस्त्रों के सम्पूर्ण योग की तुलना में भी अधिक शक्तिशाली और प्रभावकारी मानते थे। गांधीवादी की मूल धारणा यह है :-

### **अहिंसा मानवीय जीवन की स्वाभाविक प्रकृति :-**

गाँधी जी का विचार है कि हिंसा नहीं, वरन् अहिंसा ही मानवीय जीवन की स्वाभाविक प्रकृति है। अज्ञान, असत्य और क्रोध के वशीभूत होकर व्यक्ति हिंसक आचरण कर सकता है, लेकिन यह अस्थायी स्थिति है। विवेक और चेतना के जाग्रत होने पर वह अहिंसा को अपना लेगा।

### **अहिंसा, हिंसा की तुलना में अधिक प्रभावकारी :-**

गाँधी जी की मान्यता है, कि अहिंसा, हिंसा की तुलना में नैतिक और व्यावहारिक दोनों ही दृष्टियों से अधिक प्रभावशाली है। हिंसा से कोई समस्या हल नहीं होती, वह केवल प्रति हिंसा को जन्म देती है।

### **अहिंसा की सफलता सुनिश्चित है :-**

अहिंसक मार्ग को अपनाकर सफलता प्राप्त करने में समय लग सकता है लेकिन सफलता सुनिश्चित है। गाँधी जी के अनुसार अहिंसा ऐसा अस्त्र है, जिसे कोई भी भौतिक बल झुका नहीं सकता!

### **अहिंसा का आशय :-**

गाँधी जी के अनुसार अहिंसा का अर्थ केवल हत्या न करना ही नहीं है, वरन् अहिंसा से उनका तात्पर्य अन्य किसी प्रकार से भी अपने विरोधी को कष्ट न पहुंचाना है।

9 मार्च 1930 को यंग इण्डिया के अंक में गांधी जी ने लिखा था कि “पूर्ण अहिंसा सभी प्राणियों के प्रति दुर्भावना के अभाव का नाम है। इस प्रकार अहिंसा अपने क्रियात्मक रूप में सभी जीवधारियों के प्रति सद्भावना का नाम है।”

अनेक मनुष्यों द्वारा भ्रमवंश अहिंसा का आशय यह समझ लिया जाता है कि बुराई को न रोकना था बुराई के सामने झुक जाना ही अहिंसा है, लेकिन अहिंसा किसी भी रूप में या किसी भी परिस्थिति में बुराई या अत्याचार को सहन करने या उसके सम्मुख समर्पण करने का आदेश नहीं देती, वरन् उसके द्वारा तो बुराई का आध्यात्मिक बल के आधार पर प्रतिरोध का आदेश दिया जाता है। गाँधी जी अहिंसा से आध्यात्मिक बल पाते थे और उनका विश्वास था कि अहिंसा में कठोर हृदय को भी पिघलाने की शक्ति होती है। अहिंसा आत्मिक बल की प्रतीक होती है। जिसके विरोध में भौतिक बल चाहे कुछ समय के लिए विजयी हो जाये, किन्तु अन्ततः उसे पराजित होना ही पड़ेगा।

### **गाँधी जी का अहिंसा में दृढ़ विश्वास था और उन्होंने अहिंसा की निम्नलिखित (3) अवस्थाएं बताई है :-**

#### **1. जाग्रत अहिंसा :-**

इसे अहिंसा का सर्वोत्कृष्ट रूप कहा जा सकता है और यह साधन-सम्पन्न या बहादुर व्यक्तियों को अहिंसा है।

अहिंसा के इस रूप को दुःखद आवश्यकताओं के कारण है नहीं वरन् नैतिक धारणाओं में दृढ़ विश्वास के कारण ही अपनाया जा सकता है। जाग्रत अहिंसा से पूर्ण व्यक्ति में प्रहार करने की क्षमता रहती है, किन्तु वह इनका इच्छुक नहीं होता।

#### **2. औचित्यपूर्ण अहिंसा :-**

अहिंसा के इस रूप को जीवन के क्षेत्र में किसी विशेष आवश्यकता के पड़ने पर औचित्यानुसार एक नीति

के रूप में अपनाया जाता है। यह निर्बल व्यक्तियों की अहिंसा या असहाय व्यक्तियों का निष्क्रिय प्रतिरोध होता है।

इसमें नैतिक विश्वास के कारण नहीं वरन् निर्बलता के कारण ही हिंसा का प्रयोग नहीं किया जाता है। फिर भी यदि इसे ईमानदारी, साहस और सावधानीपूर्वक एक नीति के रूप में अपनाया जाये तो इससे कुछ सीमा तक वांछित लक्ष्य की प्राप्ति की जा सकती है। लेकिन यह जाग्रत अहिंसा के समान प्रभावशाली नहीं हो सकती है। अतः इसलिए औचित्यपूर्ण अहिंसा को व्यावहारिक अहिंसा भी कहा जा सकता है।

### 3. भीरुओं की अहिंसा :-

कई बार डरपोक और कायर व्यक्ति भी अहिंसा का दम भरते हैं, किन्तु उनकी इस प्रकृति को अहिंसा नहीं वरन् डरपोक और कायर व्यक्तियों की निष्क्रिय हिंसा कहा जाना चाहिए। गाँधी जी के अनुसार “कायरता और अहिंसा” पानी और आग की भांति एक साथ नहीं रह सकते।

अहिंसा वीरों का धर्म है और अपनी कायरता को अहिंसा की ओट में छिपाना निन्दनीय तथा घृणित है। यदि कायरता और हिंसा में से किसी एक का चुनाव करना हो तो गाँधी जी हिंसा को स्वीकार करते हैं। इस संबंध में उनका यह स्पष्ट विचार है कि “यदि हमारे हृदय में हिंसा भरी है तो हम अपनी कमजोरी को छिपाने के लिए अहिंसा का आवरण पहनें। इससे हिंसक होना अधिक अच्छा है।

### अहिंसा के सामाजिक व राजनीतिक आयाम :-

अहिंसा गाँधी जी के केवल व्यक्ति का सद्गुण नहीं, वरन् सामाजिक जीवन और राजनीतिक व्यवस्था का भी विश्वसनीय आधार है। यदि हम अहिंसा के आदर्श को व्यक्तिगत सद्गुण तक सीमित रखते हैं तो यह अहिंसा की व्यापक और रचनात्मक भाक्ति का अवमूल्यन होगा।

महात्मा गाँधी ने इस बात पर बल दिया है कि अहिंसा ने केवल सामाजिक और राजनीतिक जीवन की विकृतियों को दूर करने में सक्षम नहीं, वरन् एक श्रेष्ठ सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था का मूल आधार अहिंसा ही हो सकती है।

### निष्कर्ष :-

गाँधीवादी एक पूर्णतया नैतिक दर्शन है और इनके अनुरूप ही उनकी कार्य पद्धति भी पूर्णतया नैतिक है। सत्य और अहिंसा पर आग्रह के साथ-साथ गाँधी जी इस बात पर जोर देते हैं कि हमारे साधन साध्य के अनुरूप ही होने चाहिए। सत्य और अहिंसा गाँधीवादी विचार धारा के ये दो आधार भूत सिद्धान्त हैं। गाँधी जी का मानना था कि जहाँ सत्य है, वहाँ ईश्वर है तथा नैतिकता (नैतिक कानून और कोड) इसका आधार है। अहिंसा का अर्थ होता है प्रेम और उदारता की पराकाष्ठा। गाँधी जी के अनुसार अहिंसक व्यक्ति किसी दूसरे को भी मान दिन व शारीरिक पीड़ा नहीं पहुँचाता है। गाँधी-दर्शन मनुष्य की अन्तः चेतना को जाग्रत करके उसे सृजनात्मक मार्ग पर अग्रसर करता है।



## मलिनता एवं गरीबी पर गांधी जी के विचार

डॉ. राजेश कुमार कस्वा, सहायक आचार्य

श्री जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बीकानेर (राज.)

यह लेख उस महान इंसान को श्रद्धांजलि है जिन्होंने हमें मूल्य सिखाए और अहिंसा, समानता, स्वच्छता आदि का प्रचार किया। उन्होंने सामाजिक परिवर्तन लाने के साथ-साथ भारत के स्वतंत्रता संग्राम का सफलता पूर्वक नेतृत्व किया। सबसे बढ़कर, उन्होंने नेताओं का निर्माण किया। वह अपने समय के सबसे महान् नेतृत्व कोच थे। यहां, मैंने यह पहचानने के लिए उनकी नेतृत्व शैली का सूक्ष्म अवलोकन किया है कि वह नेतृत्व के कद को उच्चतम स्तर तक क्यों ले जा सके, जबकि देश को कई उत्कृष्ट नेताओं का आशीर्वाद प्राप्त था, जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महान योगदान दिया।

गांधी जी एक महान् नेता थे क्योंकि उन्होंने केवल राजनीतिक परिवर्तन ही नहीं बल्कि सामाजिक परिवर्तन भी लाया। उन्होंने न केवल लोगों का नेतृत्व किया बल्कि परिवर्तन का भी नेतृत्व किया। वह एक महान् नेता थे क्योंकि जब हवा उनकी दिशा में बह रही थी तो वह धारा की विपरीत दिशा में तैरते थे। वह एक महान् नेता थे, उन्होंने भारतीय लोकाचार पर दृढ़ता से कायम रहते हुए बदलाव लाया। उन्होंने अपने अनुयायियों के बीच सामाजिक पुनर्रचना, राजनीतिक परिवर्तन और व्यक्तिगत परिवर्तन भी लाया। उन्होंने अपने अनुयायियों को बदल दिया, उन्होंने समाज को बदल दिया, उन्होंने राष्ट्र को बदल दिया और सबसे बढ़कर, उन्होंने दुश्मन को भी बदल दिया।

नेतृत्व और महात्मा गांधी महान नेताओं में महान् गुण होते हैं। महात्मा गांधी ने नेतृत्व के शीर्ष गुणों का प्रदर्शन किया। उनमें से कुछ हैं।

मिशन और विजन के प्रति प्रतिबद्धता महात्मा एक मजबूत उद्देश्य के साथ दक्षिण अफ्रीका से भारत आए। उन्होंने ब्रिटिश शासकों को बाहर निकालने और स्वतंत्रता प्राप्त करने का मिशन उठाया। वह इसे अहिंसक तरीकों से करना चाहते थे। अंततः, उन्होंने मिशन हासिल किया और भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र बन गया। आजादी के इतने वर्षों बाद भी देश आज गरीब इसीलिए है क्योंकि देश के गांव गरीब हैं। 'गरीबी हिंसा का सबसे खराब रूप है। महात्मा गांधी की यह बात शत-प्रतिशत सही है। भारत की आधी से ज्यादा आबादी आज भी गांवों में रहती है। इसलिए हम कितना भी अपने शहरों का विकास कर लें अगर गांवों तक विकास नहीं पहुंचेगा तो देश की नींव हमेशा कमजोर रहेगी। गांधी जी के लिये 'स्वच्छता' एक बहुत ही महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दा था। वर्ष 1895 में जब

ब्रिटिश सरकार ने दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों और एशियाई व्यापारियों से उनके स्थानों को गंदा रखने के आधार पर भेदभाव किया था, तब से लेकर जीवनभर गांधी जी लगातार स्वच्छता पर जोर देते रहे।

दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद दो वर्ष तक पूरे देश की यात्रा करते हुए गांधी जी को महसूस हुआ कि सफाई और सामाजिक स्वच्छता बड़ी और अजेय समस्या है। जानकारी का अभाव इसका इकलौता कारण नहीं था, वह मानसिकता भी इसका एक कारण थी, जो लोगों को स्वास्थ्य एवं पर्यावरण पर प्रभाव डोलने वाली इस सबसे गंभीर समस्या पर सोचने से रोकती थी। दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी ने स्वीकार किया कि भारतीयों को सफाई और स्वच्छता से दिक्कत है, जैसा आरोप अंग्रेज लगाते रहे हैं। लेकिन उन्होंने विरोध करते हुए यह बात सफलतापूर्वक सामने रखी कि रंग को लेकर पूर्वाग्रह और प्रतिस्पर्धा का खतरा ही भेदभाव का मुख्य कारण है। लेकिन उनके अपने ही देश में वह जहां भी गए, उन्हें गंदगी, धूल, कचरा और सफाई करने वाले समुदाय के साथ जुड़ी वर्जना, कलंक और शोषण दिखाई दिया। गांधी जी 1909 में हिंद स्वराज लिख चुके थे। स्वशासन के रूप में ग्राम स्वराज और हिंद स्वराज की उनकी योजना में देश की राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए लड़ा अलग बात नहीं हो सकती थी और उन्होंने इसके सिद्धांत तथा कार्य बताए। बाद में इसे आश्रम के अनुपालन और रचनात्मक कार्य के रूप में प्रस्तुत किया गया। इस तरह सफाई एवं स्वच्छता तथा छुआछूत दूर करना दो बड़े रचनात्मक कार्यक्रम हो गए। एक संगठन बनाया गांधीजी ने औपचारिक सदस्यता के साथ एक राजनीतिक दल, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस बनाई। उन्होंने पार्टी के भीतर संरचना तैयार की। पार्टी के नेताओं को पार्टी कैडर द्वारा लोकतांत्रिक तरीके से चुना गया था। इस संगठन की छत्रछाया में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम व्यवस्थित एवं संगठित हुआ।

धारा के विपरीत तैरने की क्षमता जब महात्मा गांधी ने उन्हें अपना मिशन समझाया तो लोग शुरू में उन पर हंसे। उन्हें कभी विश्वास नहीं हुआ कि यह छोटा सा आदमी एक मजबूत वैश्विक नेटवर्क के साथ शक्तिशाली अंग्रेजी साम्राज्य का मुकाबला कर सकता है। उन्हें शायद ही इस बात पर विश्वास था कि क्रूर अंग्रेजी शासकों को अहिंसक तरीकों से उखाड़ फेंका जा सकता है। लोग शुरू में बिना हथियार के युद्ध के मैदान में जाने को लेकर असमंजस में थे। लेकिन जब उन्होंने महात्मा गांधी के दृढ़ संकल्प, प्रतिबद्धता और उनके तरीकों के शुरुआती परिणामों को देखा तो उन्होंने उनका अनुसरण करना शुरू कर दिया।

अद्वितीय उपकरण विकसित किए महात्मा गांधी ने लोगों को सशक्त बनाने और स्वतंत्रता संग्राम को और अधिक शक्तिशाली बनाने के लिए कुछ उपकरण विकसित किए। 'सत्याग्रह' सत्यता के प्रति प्रतिबद्धता थी। 'असहयोग' एक और प्रभावी उपकरण था जिसने लोगों के सक्रिय समर्थन के बिना शासन को असंभव बना दिया। 'भूख हड़ताल' को उनके द्वारा एक चरम उपाय के रूप में देखा गया जिसने शासकों को उनकी मांगों को मानने के लिए मजबूर किया। ये सभी उपकरण लोकतंत्र की पहचान बन गए। वे महात्मा के आविष्कार थे। बनाए गए नेता महात्मा गांधी ने ऐसे नेता भी बनाए जो उनकी राजनीतिक पार्टी और स्वतंत्रता के क्षण को नियंत्रित और निगरानी कर सकते थे तथा मलिनता एवं गरीबी पर भी कार्य करके अपना योगदान करते थे।

“मेरा धर्म सत्य और अहिंसा पर आधारित है। सत्य ही मेरा भगवान् है। अहिंसा उसे साकार करने का साधन है ‘और साथ ही,’ आँख के बदले आँख जल्द ही पूरी दुनिया को अंधा बना देगी। ‘इस तरह से अगर प्रत्येक नागरिक मलिनता एवं गरीबी को दूर करने का प्रण ले तो इस देश को विकसित होने से कोई नहीं रोक सकता है।

महात्मा गांधी पूरी दुनिया में अपने अहिंसा के सिद्धांतों के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने कभी भी हिंसा का सहारा नहीं लिया और भारत की स्वतंत्रता के लिए आंदोलनों के अहिंसक पक्ष में सबसे प्रमुख व्यक्ति थे। उनकी याद और सम्मान में आज दुनिया भर में ‘अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस’ मनाया जाता है। यदि हम अपनी समस्याओं और संघर्षों को शांतिपूर्वक, बिना हिंसा के और एक-दूसरे के सहयोग से हल करना शुरू कर दें, तो बिना सोचे-समझे युद्धों में खो जाने वाले हजारों निर्दोष लोगों की जान बचाई जा सकती है। ठीक इसी तरह अनेक बीमारियों से मरने वाले हजारों नागरिकों को मलिनता एवं गरीबी दूर करके उनकी भी जिंदगी बचा सकते हैं।

युद्ध शायद ही कभी मुद्दों को हल कर सकते हैं, अधिक बार वे उन्हें समाप्त कर देते हैं। अंत में, गांधी जी का एक उद्धरण जो आपको अपने लक्ष्य तक पहुंचने में मदद करेगा— “आपकी मान्यताएँ आपके विचार बन जाती हैं। आपके विचार आपके शब्द बन जाते हैं। आपके शब्द आपके कार्य बन जाते हैं। आपके कार्य आपकी आदतें बन जाते हैं। आपकी आदतें आपके मूल्य बन जाती हैं। आपके मूल्य आपकी नियति बन जाते हैं।”

अगर आज गांधी जी होते, तो शायद उन्होंने खुद को एक ‘सामाजिक उद्यमी’ के रूप में ब्रांड किया होता। वास्तव में, कुछ सामाजिक उद्यमियों ने प्रभाव के उस पैमाने के आसपास भी कुछ हासिल किया है जो गांधी करने में सक्षम थे। लेकिन तुलना उपयुक्त है, क्योंकि गांधी कभी भी राज्य या सरकार के प्रमुख नहीं थे, बल्कि एक निजी संगठन के प्रमुख थे – भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, जिसने अपने कई सहयोगियों के साथ, अविश्वसनीय रूप से विविध और जटिल लोगों को एकजुट किया। ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध आंदोलन। उन्होंने सबसे पहले भारत और उसके लोगों की आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक विविधता को समझकर और उस विविधता को स्वतंत्रता आंदोलन में गहराई से एकीकृत करके नेतृत्व किया। उन्होंने खुद को और एकीकृत किया अपना जीवन इस उद्देश्य के लिए समर्पित करके, जितना संभव हो सके लोगों के बीच रहकर और वास्तव में इस उद्देश्य के लिए कई बार मौत का जोखिम उठाकर आंदोलन में शामिल हुए। हालाँकि कोई दूसरा गांधी कभी नहीं हो सकता, लेकिन ऐसा कोई कारण नहीं है कि आज के प्रतिबद्ध सामाजिक उद्यमी गांधी की व्यक्तिगत और राजनीतिक नेतृत्व प्रतिबद्धता के अपने संस्करण को नहीं अपना सकते। गाँधी जी की सभी संस्थाओं ने सर्वप्रथम मलिनता दूर करने का कार्य किया है।

संभवतः, गांधी जी का सबसे बड़ा नेतृत्व गुण एक सफल, स्वतंत्रता के बाद के भारतीय राष्ट्र के गुणों की कल्पना करने और जीवन भर चार परस्पर जुड़ी चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित करने की उनकी क्षमता थी, जिनके बारे में उनका मानना था कि भारत को एक राष्ट्र के रूप में सफलता प्राप्त करने के लिए सामूहिक रूप

से संबोधित किया जाना चाहिए। चार चुनौतियाँ, या लक्ष्य, जैसा कि रामचन्द्र गुहा ने अपनी पुस्तक "गांधी द इयर्स दैट चॉज द वर्ल्ड" में व्यक्त किया है, थेरु भारत को ब्रिटिश कब्जे से मुक्त करना, अस्पृश्यता को समाप्त करना, हिंदुओं और मुसलमानों के बीच संबंधों में सुधार करना, और भारत को आर्थिक और सामाजिक रूप से एक आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाना। गांधीजी ने अपने द्वारा चलाए गए अधिकांश सामाजिक आंदोलनों को इन चार लक्ष्यों के इर्द-गिर्द केंद्रित किया— दक्षिण अफ्रीका में अपने काम से शुरू करके अपनी मृत्यु तक जारी रखा। उनका दृढ़ विश्वास था कि सभी चार चुनौतियों का एक साथ समाधान किए बिना, भारत स्वतंत्रता प्राप्त नहीं कर सकता और एक सफल राष्ट्र नहीं बन सकता। उदाहरण के लिए, हिंदुओं और मुसलमानों के बीच या ऊंची जाति और निचली जाति के हिंदुओं के बीच सांप्रदायिक सद्भाव के बिना, गांधी को विश्वास नहीं था कि भारत कभी भी अपनी क्षमता हासिल कर पाएगा।

अपनी बात को गांधी जी के एक उद्धरण से समाप्त करेंगे कि जिसने मुझ पर विशेष प्रभाव डाला, वह है : 'गरीबी हिंसा का सबसे खराब रूप है।' गांधी जी के इस जन्मदिन पर, इन गुणों को अपने जीवन में आत्मसात् करने और अपनाने का संकल्प लें और दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने में मदद करें।



# गांधी जी की धार्मिक एवं सामाजिक विचारधारा

डॉ. वन्दना तिवारी

सहायक आचार्य, हिंदी विभाग श्री जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बीकानेर।

## सारांश :-

समाज को दिशा और गति देने वाले व्यक्ति ही महापुरुष या महान प्रतिभा वाले कहे जाते हैं और ऐसी महान प्रतिभाओं में महात्मा गांधी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने अपने विचारों और कार्यों के माध्यम से समाज को नई दिशा प्रदान की। गांधी जी ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भारत की जनता का अत्यंत सफलतापूर्वक नेतृत्व किया। उन्होंने आध्यात्मिक तथा नैतिक दृष्टिकोण के आधार पर ही विविध राजनीतिक सामाजिक और धार्मिक समस्याओं का अध्ययन करते हुए, अपने विचार व्यक्त किए। गांधी जी की विचारधारा पर प्रमुख रूप से सर्वप्रथम उनकी माता के व्यक्तिगत जीवन की पवित्रता और पिता की सादगी एवं सदाचार का अमित प्रभाव पड़ा है। उन्होंने अपनी माता से वैष्णव हिंदू धर्म के संस्कार प्राप्त किये उनके जीवन और विचारों पर जैन और बौद्ध धर्म, गीता और उपनिषद् भारत के विभिन्न साधु संतों के उपदेशों का प्रभाव पड़ा है। गांधीवादी विचारधारा व्यापक रूप से प्राचीन भारतीय दर्शन से प्रभावित है और इन विचारों की प्रासंगिकता आज भी है। आज के दौर में जब समाज में कल्याणकारी आदर्श का स्थान असत्य, अवसरवाद, स्वार्थवादी संकीर्ण विचारों द्वारा लिया जा रहा है तो समाज प्रेम, मानवता, भाईचारे जैसे उच्च आदर्शों को विस्मृत करता जा रहा है। ऐसे में विश्व शांति की पुनः स्थापना के लिए मानवीय मूल्यों को स्थापित करने के लिए गांधीवादी विचारधारा की महती आवश्यकता है।

**मुख्य शब्द :-** धर्म, सत्य, अहिंसा।

## जीवन परिचय :-

गांधी जी अत्यंत ही व्यवहारिक व्यक्ति थे और उनके जीवन का सबसे अच्छा गुण यह था कि जो आदर्श उनके हृदय में बस जाता था उसे वह व्यवहारिक जीवन में उतार लेते थे और दूसरों के समक्ष रखते थे। गांधीजी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 ईसवी में काठियावाड़ में पोरबंदर नामक स्थान पर एक धार्मिक विचारधारा वाले परिवार में हुआ था। उनके पिता कर्मचंद गांधी पोरबंदर रियासत के दीवान थे। उनकी सदाचारिता एवं निष्पक्षता की बड़ी धाक थी। उनकी मां पुतलीबाई धार्मिक प्रवृत्ति की थी। गांधी जी अपने माता-पिता की चौथी संतान थे, मात्र 13 वर्ष की उम्र में गांधी जी का विवाह कस्तूरबा कपाड़िया से कर दिया गया। गांधी जी ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा राजकोट से प्राप्त की और बाद में वे वकालत की पढ़ाई करने के लिए लंदन चले गए। लंदन में ही दक्षिण अफ्रीका में लंबे समय तक रहने उनके मित्र ने उन्हें भागवत गीता से परिचित कराया और इसका

प्रभाव गांधीजी की अन्य गतिविधियों पर स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। वकालत की पढ़ाई के बाद गांधी जी सन् 1891 में लंदन से लौटे और उन्होंने वकालत करनी प्रारंभ कर दी। काठियावाड़ तथा मुंबई में थोड़े दिनों तक वकालत करने के बाद एक धनी गुजराती मुसलमान की ओर से एक मुकदमे की पैरवी करने दक्षिण अफ्रीका गए। दक्षिण अफ्रीका के काले गोरे के भेद और अपने देशवासियों की दयनीय दशा को देखकर उनको गहरा आघात पहुंचा। गांधी जी ने इसका कड़ा विरोध किया।

दक्षिण अफ्रीका में लंबे समय तक रहने और अंग्रेजों की नस्लवादी नीति के खिलाफ सक्रियता के कारण गांधी जी ने एक राष्ट्रवादी और सिद्धांतवादी के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त करने के बाद सन 1914 में भारतीय राजनीति में प्रवेश किया। सन 1918 में ब्रिटिश सरकार द्वारा रोलेट एक्ट कानून पास किए जाने और सन 1919 के जलियांवाला बाग हत्याकांड के कारण गांधी जी का ब्रिटिश सरकार पर से विश्वास उठ गया। अतः उन्होंने ब्रिटिश सरकार का विरोध करना आरंभ कर दिया। ब्रिटिश शासन के विरोध में उन्होंने असहयोग आंदोलन, सविनय, अवज्ञा आंदोलन भारत को आजादी दिलाने के लिए किए। अंत में विभिन्न झंझावातों को झेलते हुए गांधी जी एवं समस्त देशवासियों के सहयोग से 1947 में भारत ब्रिटिश सत्ता से आजाद हो गया।

### **धार्मिक विचारधारा :-**

गांधीजी मूलतः धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे और जिस प्रकार उन्होंने अपने जीवन में धर्म निर्वाह किया उसी आधार पर उन्हें भारतीय परंपरा का एक महान संत कहा जा सकता है। धर्म के प्रति गांधी जी का दृष्टिकोण संकीर्ण मतवाद से बंधा हुआ नहीं था। उनका दृष्टिकोण धर्म के संबंध में व्यापक था गांधी जी का एक विचार है कि राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक कार्यों को अलग-अलग भागों में विभाजित नहीं किया जा सकता और मानवीय कार्यों से पृथक रूप से धर्म का कोई अस्तित्व नहीं है। धर्म मानव के सभी कार्यों को एक ऐसा नैतिक आधार प्रदान करता है, जिसके अभाव में मानव के सभी कार्यों का महत्त्व समाप्त हो जाएगा। उनका लक्ष्य तो सत्य और अहिंसा को व्यक्तिगत व्यवहार ही नहीं अपितु सार्वजनिक व्यवहार का आधार बनाना था उन्होंने स्वयं को सार्वजनिक जीवन सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों पर व्यतीत कर राजनीति में आध्यात्मिकता को प्रविष्ट किया।

### **सत्य और अहिंसा :-**

गांधीवादी विचारधारा में सर्वोच्च महत्त्व सत्य और अहिंसा को है। वे मनुष्य में निहित धार्मिक भाव के विकास के लिए सत्य और अहिंसा को आवश्यक मानते थे। उनका मानना था कि जीवन में अहिंसा का पालन करना सत्य के उपासक का सबसे बड़ा कर्तव्य है। उनके अनुसार मन, वचन, कर्म और शरीर से किसी को भी दुख न पहुंचाना ही अहिंसा है।

गांधी जी के विचारों का मूल लक्ष्य सत्य एवं अहिंसा के माध्यम से विरोधियों का हृदय परिवर्तन करना है। अहिंसा का अर्थ होता है प्रेम और उदारता की पराकाष्ठा। आज के इस संघर्षरत विश्व में अहिंसा जैसा आदर्श अति आवश्यक है गांधी जी अहिंसा को मानव का प्राकृतिक गुण मानते थे और उनका विचार था कि मनुष्य स्वभाव के अनुसार अहिंसा प्रिया है। व्यक्ति अज्ञानता, सत्य और क्रोध के कारण हिंसक आचरण अपना सकता है। लेकिन यह मनोवृत्ति स्थाई नहीं है। विवेक एवं चेतना के जाग्रत होने पर वह अहिंसा को अपना लेता है। गांधी जी के लिए अहिंसा आस्था और निष्ठा का विषय है। गांधी जी का मानना था कि सत्य को अपनाकर उसे

व्यक्त करने के लिए अंतरात्मा शुद्ध होनी चाहिए क्योंकि शुद्ध अंतरात्मा की वाणी ही सत्य हो सकती है और उसके लिए साधना की आवश्यकता होती है। साधना जीवन में सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह को अपनाकर ही की जा सकती है। मन की पवित्रता आचरण की शुद्धता और वाणी की निर्मलता व्यक्ति के आचरण को पवित्र बनाता है। गांधी जी सत्य को ईश्वर का दूसरा नाम कहते थे।

### **सामाजिक विचारधारा :-**

20 वीं सदी का पूर्वार्ध भारतीय समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था क्योंकि गांधी जी ने समाज को बुराईयों से मुक्त करने का बीड़ा उठाया था। उस समय समाज में ऊँच-नीच का भेदभाव अपने चरम सीमा पर पहुंच चुका था। जिससे समाज बिखरने लगा था। अतः गांधी जी ने राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाने के लिए समाज सुधार पर बल दिया और कहा कि जब तक सामाज में एकता का अभाव रहेगा तब तक हम गुलामी की जंजीरों से मुक्त नहीं हो सकते हैं।

### **गांधी जी के प्रमुख सामाजिक विचार :-**

**बुनियादी शिक्षा :-** शिक्षा के क्षेत्र में गांधीजी का एक महत्वपूर्ण योगदान है। उनका विचार था कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का समन्वित रूप से विकास करना है। गांधी जी ने शिक्षा के क्षेत्र में सुधार लाने के लिए व्यापक योजना प्रस्तुत की जो इस प्रकार है— शिक्षा के अंतर्गत विद्यार्थियों को कोई न कोई दस्तकारी सिखाई जाए ताकि उनमें आत्मनिर्भरता का भाव आ सके। शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिए। अनिवार्य व निशुल्क शिक्षा।

**वर्ण-व्यवस्था :-** वर्ण व्यवस्था भारतीय समाज का आधार माना जाता है। लेकिन वर्ण व्यवस्था जो कर्म व धर्म पर आधारित हुआ करती थी। वह कर्मों पर आधारित हो गई, जिसके परिणामस्वरूप समाज में जाति बंधन हावी हो जाए और समाज विभाजित नजर आने लगा। गांधीजी की विचारधारा इससे भिन्न थी। वे व्यवस्था के समर्थक थे। उनका विचार था कि इसका आधार जन्म ही होना चाहिए।

**अस्पृश्यता का निवारण :-** गांधी जी ने भारतीय समाज में समाज में व्याप्त छुआछूत की भावना का विरोध किया और यह कहा कि इससे समाज पतन की ओर अग्रसर हो रहा है। इससे संपूर्ण समाज कलंकित हो रहा है। उन्होंने कहा कि यह ऐसा रोग है जो सारे समाज को नष्ट कर देगा। वह अछूतों को आर्थिक व राजनीतिक अधिकार दिलाने के पक्ष में थे। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि अछूतों को हिंदू मंदिरों, तथा सार्वजनिक स्थानों पर प्रवेश दिया जाए ताकि उन में आत्मसम्मान की भावना जागृत हो सके। गांधीजी ने ही सर्वप्रथम अछूतों के लिए हरिजन शब्द का प्रयोग किया।

**स्त्री सुधार :-** प्राचीन भारतीय समाज में नारी को बड़े ही सम्मान के साथ देखा जाता था। लेकिन बदलती परिस्थितियों के कारण नारी की स्थिति बहुत ही दयनीय हो गई। इसलिये उस समय सुधार की दिशा में उल्लेखनीय कार्य करने वालों में राजा राममोहन राय एवं गांधीजी ही थे। उनका कहना था कि नारी किसी भी किसी भी दृष्टि से पुरुष से हीन नहीं हो सकती। उसके प्रति अन्याय वह अपमान नहीं होना चाहिए। वास्तविकता में यदि देखा जाए तो नारी पुरुषों से भी है श्रेष्ठ है।

### **निष्कर्ष :-**

गांधी जी हमारी राष्ट्रीय धरोहर 5 के महत्वपूर्ण अंग है। समय बीतने के साथ-साथ गांधी जी के विचार हमारे लिए और अधिक महत्वपूर्ण बनते जा रहे हैं। गांधी जी एक इतिहास पुरुष हैं। गांधी जी के विचारों को थोड़े

शब्दों में समेटना हो तो कहा जा सकता है जो सबके कल्याण के लिए काम करें, जिसमें समाज के निचले तबके को भी कुछ जीवन की आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध हो। वे लिखते हैं कि मेरी कल्पना का स्वराज तभी आएगा जब हमारे मन में यह बात अच्छी तरह जम जाए कि हमें अपना स्वराज सत्य और अहिंसा के साधनों के द्वारा ही हासिल करना है। उन्हीं के द्वारा उसका संचालन करना और उसे कायम रखना है। यदि असत्य और अहिंसक उपायों का प्रयोग किया जाए तो उसका परिणाम यह हुआ कि विरोधियों को दबाकर या उनका नाश करके खत्म कर दिया जाएगा। ऐसी स्थिति में स्वतंत्रता की रक्षा नहीं हो सकती है। सत्य और न्याय पर किसी ऐसी शासन व्यवस्था ही देश के लिए शांति सुव्यवस्था और सामूहिक भाईचारे का भावात्मक भाव कायम करेगी और विश्व को भी सत्य, अहिंसा, नैतिकता और भाईचारे की ओर अग्रसर करने के लिए प्रेरित करेगी। संघर्ष और तनाव से जूझ रही मानवता भी विश्व शांति और सद्भाव के लिए गांधीवादी विचारधारा की ओर निहार रही है।

### संदर्भ ग्रंथ :-

1. गांधी, एम के सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद।
2. यंग इंडिया 26 मई, 1930।
3. दधीच, नरेश, महात्मा गांधी का चिंतन, रावत प्रकाशन जयपुर।
4. सिंह, रामजी, गांधी और भावी विश्व व्यवस्था कॉमनवेल्थ पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
5. गाबा, ओमप्रकाश भारतीय विचारक, मयूर पेपर बैग्स नोएडा, 2019।



# गाँधी दर्शन की उपयोगिता- कल और आज

गायत्री व्यास

व्याख्याता, हिन्दी आदेश महाविद्यालय, श्रीकोलायत।

“मैं दूसरों को अपना जीवन दर्शन समझाने में सर्वथा अयोग्य हूँ। मैं तो केवल उस दर्शन को, जिसमें विश्वास रखता हूँ, अभ्यास में लाने की योग्यता रखता हूँ।”

भारत देश एक गौरवमयी भूमि है। इस भूमि पर समय-समय में अनेक महापुरुषों ने जन्म लिया। जिन्होंने भारत को धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और वैज्ञानिक स्तर पर विश्व प्रसिद्धि दिलवाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। व अपने कार्यों के माध्यम से भारत की महिमा का मण्डन सम्पूर्ण विश्व में किया, जिससे सदियों तक भारतवर्ष को विश्व गुरु रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इन व्यक्ति विशेष में महात्मा गाँधी का नाम विश्वविख्यात है। गाँधी मूल रूप से आध्यात्मिक संत थे, जिन्होंने विशुद्ध मानवीय दृष्टिकोण से राजनीतिक धार्मिक, सामाजिक कार्यों का संचालन किया। वे भारतीय इतिहास के एक ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्होंने देश हित के लिए अंतिम सांस तक लड़ाई लड़ी। गाँधी जी के अनुसार मानव जाति का समस्त समस्याएं नैतिक समस्याएं हैं। ऐसी स्थिति में मनुष्य सही अर्थों में मानव बन जाए और अपने समस्त कार्यों को अर्न्तआत्मा की पुकार के अनुसार करे तो समाज और विश्व में दुःख-संकट तथा समस्या जैसी कोई चीज रह ही नहीं सकती। एक स्वस्थ राजनीतिक दृष्टि तथा विकासशील व्यक्ति के प्रत्येक कार्यों को करने में एक नैतिक बल अथवा प्रेरणा होनी ही चाहिये। क्योंकि जिस समय मनुष्य अपनी अर्न्तआत्मा की आवाज को अपने स्वार्थों में लिप्त होकर सुनना बन्द कर देता है उसी समय उसका जीवन पशुत्व तुल्य हो जाता है। गाँधीजी ने जीवन के सभी कार्यों में कोई भी अन्तर नहीं माना। समाज या नीति दोनों ही उनके अनुसार एक सिक्के के दो पहलू हैं। और नैतिकता के सामान्य मापदण्डों से व्यक्तिगत, सामाजिक और राजनीति को मुक्त नहीं किया जा सकता। महात्मा गाँधी का पूर्ण दर्शन चाहे जीवन के किसी भी पहलू पर हो उसके मूल में आध्यात्मिकता और नैतिकता का दृष्टिकोण ही लक्षित होता है।

महात्मा गाँधी दार्शनिक से अधिक व्यावहारिक व्यक्ति थे। उनके जीवन का सबसे बड़ा गुण यह था कि वह जो जीवन शैली स्वयं अपनाते और स्वयं अनुभव प्राप्त कर लेने के बाद ही उस जीवन आदर्श को दूसरों के सम्मुख रखते थे।

गाँधीजी को जन्म 2 अक्टूबर 1869 को काठियावाड़ में पोरबन्दर स्थान पर एक धार्मिक वैष्णव परिवार में हुआ। उनके पिता कर्मचंद गाँधी पोरबन्दर राज्य के दीवान थे तथा उनकी सदाचारिता एवं निष्पक्षता की बड़ी

धाक थी। उनकी माता पुतलीबाई अत्यंत धार्मिक महिला थी। गाँधी जी शिक्षा के दृष्टिकोण से एक औसत दर्जे के विद्यार्थी थे किन्तु समय के बहुत पाबन्द एवं शिक्षकों के बहुत आज्ञाकारी विद्यार्थी थे। मैट्रिक की परीक्षा पास करने के बाद 1888 में उनको इंग्लैण्ड भेज दिया गया। 1901 में लंदन से लौटकर उन्होंने वकालत प्रारम्भ कर दी। और एक मुकदमें की पैरवी करने दक्षिण अफ्रीका गये, वहां काले-गोरे के भेद और अपने देशवासियों की दयनीय दशा को देखकर उनको तीव्र आघात पहुँचा और यहीं से उनका सार्वजनिक जीवन शुरू हुआ। सर्वप्रथम उन्होंने अफ्रीका सरकार के एशियाटिक रजिस्ट्रेशन ऐक्ट के विरुद्ध सफलता पूर्वक सत्याग्रह किया और पूर्ण सफल हुए। और सन् 1914 में भारतीय राजनीति में प्रवेश किया। भारत में गाँधीजी ने अपना पहला राजनैतिक जीवन चम्पारण के सत्याग्रह से आरम्भ किया व नील की खेती करने के वाले कृषकों पर होने वाले अत्याचारों की जांच करने के लिए एक कमीशन नियुक्त करने पर अंग्रेजी सरकार को बाध्य किया। इसके एक वर्ष बाद खेड़ा जिले 'कर न दो आन्दोलन' और अहमदाबाद में मजदूर आन्दोलन में अपूर्व सफलता प्राप्त की। पहले गाँधी जी एक राजभक्त भारतीय थे। परन्तु 'रोलेक्ट ऐक्ट' व 1919 में 'जलियावाला बाग हत्याकाण्ड' के कारण उनका ब्रिटिश सरकार की न्याय प्रियता से विश्वास उठ गया। और उन्होंने खिलाफत के प्रश्न को असहयोग आन्दोलन के साथ मिलाकर ब्रिटिश शासन के विरुद्ध आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया। और 1957 में भारत को स्वतंत्रता दिलवाने में गाँधी जी के प्रयत्नों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

गाँधी जी ने अपने सिद्धान्तों की व्याख्या अपनी कृतियों में विस्तृत रूप से की। हिन्द स्वराज्य, सत्य के साथ मेरे प्रयोग, अस्पृश्यता निवारण, सत्याग्रह, शान्ति और युद्ध में अहिंसा आदि पुस्तकों का सृजन किया। इसके अलावा कई पत्रों का भी सम्पादन किया, जैसे नवजीवन, हरिजन, यंग इण्डिया आदि। गाँधीवादी दर्शन मुख्य रूप से दो विचारधाराओं में बंटा हुआ है— पूर्वी और पश्चिमी। पूर्वी स्रोतों में उनके ऊपर सर्वप्रथम अपनी माता व पिता की निजी जीवन की पवित्रता, सादगी और सदाचार का अमिट प्रभाव पड़ा। सत्य और अहिंसा की विचारधारा को उन्होंने जैन व बौद्ध दर्शन से ग्रहण किया व पश्चिमी स्रोत में वे जॉन रस्किन की पुस्तक 'अन्टू दिस लास्ट' से प्रभावित होकर बुद्धि की अपेक्षा चरित्र पर अधिक बल दिया। आत्मिक बल को जीवन में सर्वोच्च स्थान दिया। व राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में धर्म की महता को स्वीकार किया और पूंजीपतियों से यह आशा की कि वे अपने मजदूरों के संरक्षक बने और उनसे पितृतुल्य व्यवहार करें।

सत्य और अहिंसा का गाँधी जी की विचारधारा में सर्वोच्च महत्व है। उनके अनुसार सत्य ईश्वर है और हिंसा असत्य क्योंकि वह मानव जीवन की एकता और पवित्रता के विरुद्ध है। जो व्यक्ति दूसरे को दुःख देता है, आघात पहुंचाता है वह सत्य (ईश्वर) का उल्लंघन करता है केवल सत्य बोलना सत्य की प्रति निष्ठा का प्रमाण नहीं।

मन की पवित्रता, आचरण की शुद्धता और वाणी की निर्मलता व्यक्ति के सत्य आचरण के तीन स्पष्ट मापदण्ड हैं। सत्य परायण व्यक्ति विनम्रता के साथ अपनी गलती को स्वीकार करने का साहस करता है। गाँधीजी सत्य के साथ अहिंसा के भी पोषित थे। वे अहिंसा को मानव का प्राकृतिक गुण मानते थे। मनुष्य की

अहिंसक वृत्ति का विशेष परिणाम यह था कि जो व्यक्ति प्राचीन काल में परिस्थितियों के कारण नरभक्षि रूप में जीवन जी रहा था वह आज सभ्य और सुसंस्कृत प्राणी बन गया है। क्योंकि अहिंसा हिंसा की तुलना में सर्वाधिक प्रभावकारी है। वे अहिंसा को विश्व के विनाशकारी शस्त्रों के योग की तुलना में अधिक शक्तिशाली और प्रभावी मानते हैं। हिंसा से कोई भी समस्या हल नहीं होती है वह केवल प्रतिहिंसा को जन्म देती है। किन्तु अहिंसा विरोधियों के मन मस्तिष्क पर स्थाई विजय दिलाने में समर्थ है। अहिंसा के पास कठोर हृदय को भी पिघलाने की शक्ति होती है।

गाँधी जी सत्य और अहिंसा के साथ-साथ व्यक्ति की नैतिक पवित्रता में भी दृढ़ आस्था रखते थे। इन बातों में विश्वास करते हुए बुराई का प्रतिरोध करते हुए उन्होंने एक नये मार्ग का आविष्कार किया जिसे सत्याग्रह का नाम दिया। सत्य अहिंसा और सत्याग्रह के साथ-साथ श्रेष्ठ समाज का निर्माण भी गाँधीजी के विचारों का एक हिस्सा था। वे वर्ण व्यवस्था, सम्प्रदायिक एकता, अस्पृश्यता का अंत, स्त्री सुधार के साथ-साथ शिक्षा के भी प्रबल पक्षधर थे। शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने बुनियादी शिक्षा की नींव रखी। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य शरीर, मस्तिष्क और आत्मा का समन्वित विकास है। शिक्षा में चरित्र निर्माण का पूर्ण रूप से बल दिया जाना चाहिये।

‘अपने विरोधियों को दुखी बनाने के बजाय स्वयं अपने पर दुख डालकर सत्य की विजय प्राप्त करना ही सत्याग्रह है।’

—महात्मा गाँधी

वर्तमान परिपेक्ष्य में गाँधीजी के दर्शन की प्रासंगिकता अत्यधिक बढ़ गई है। क्योंकि गाँधी जी ने अपने कार्यों से इतिहास की दिशा और दशा दोनों में बदल दी और नये इतिहास का सृजन किया। अपने कार्यों से वह भारत ही नहीं विश्व पर अपनी अमिट छाप छोड़ गये। क्योंकि वे सत्य, अहिंसा और नैतिकता के पक्षधर थे। उन्होंने जो कहा वो ही किया और सामाजिक रूप से वंचितों और शोषितों की पीड़ा का समझा और उसे मिटाने के लिए जीवन पर्यंत प्रयासरत रहे। वर्तमान समय में जब सम्पूर्ण विश्व एक संकटपूर्ण दौर से गुजर रहा है। उदारीकरण, निजीकरण और भूमण्डलीकरण ने देश-दुनिया की अर्थव्यवस्था को तो बदल दिया है। साथ-साथ लोगों की जीवनशैली, विचारधारा, दृष्टिकोण और संस्कृति को भी बदल रहा है। इंसान समाज और प्रकृति से दिन प्रतिदिन दूर होता जा रहा है। नैतिकता व ईमानदारी अब व्यक्ति जीवन के आदर्श नहीं रहे। सर्वत्र भ्रष्टाचार व्याप्त है। भौतिक प्रगति की अंधी दौड़ में सभी ने अपने को शामिल कर लिया है। सम्पूर्ण विश्व में शक्ति और धर्म के नाम पर हिंसा हो रही है। ऐसे वक्त में गाँधीजी के विचारों की (सत्य और अहिंसा) की प्रासंगिकता और बढ़ती जा रही है। मानवीय पीड़ा को समाप्त करने के लिए वर्तमान समय में विश्व में गाँधीजी के विचार महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

जहां मनुष्य अपने वैश्वीकरण और भौतिक प्रगति की विचारधारा के साथ सम्पूर्ण विश्व को तीसरे विश्वयुद्ध की ओर धकेल रहा है। ऐसे समय में सम्पूर्ण विश्व को मानव मात्र का कल्याण करने के लिए अहिंसा की आवश्यकता है। ‘अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा ने भारतीय संसद में खड़े होकर कहा कि सम्पूर्ण विश्व अगर गाँधीवादी विचारधारा पर चलता तो विश्व को इतने बड़े बारूद के ढेर की आवश्यकता नहीं पड़ती। पर

उसके लिए मनुष्य को गाँधीजी के अनुकरण किये गये मार्ग 'अहिंसा परमोधर्म' के मार्ग पर चलना पड़ेगा। जिस दिन मनुष्य भावनात्मक समानता और आत्मसंतोष को प्राप्त कर लेगा। तब समाज में ही नहीं वरन विश्व में भी शान्ति की स्थापना हो जायेगी। विश्व को शोषणमुक्त, स्वावलम्बी एवं परस्पर सहयोग से निर्मित बनाने में व श्रेष्ठ विचारधारा का निर्माण करने में गाँधी दर्शन को ही अपनाना होगा।

सत्य, अहिंसा सत्याग्रह आदि गुणों को अपनाकर वर्तमान पीढ़ी प्रजातान्त्रिक मूल्यों का विकास कर सकती है। गाँधी के इन्हीं विचारों और दर्शन से प्रभावित होकर यह कहा गया था कि गाँधी अतीत ही नहीं भविष्य भी है। उनके विचार नई पीढ़ी के लिए आज भी प्रासंगिक है क्योंकि गाँधी विलक्षण प्रतिभा के धनी थे।

**संदर्भ :-**

1. जैन पुखराज, प्रतिनिधि भारतीय राजनैतिक विचारक, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, 2010, पृ० सं० 209
2. शर्मा, डॉ. गणेशराम, रावत डॉ. राजेश, भारतीय राजनीतिक विचारक, जैन प्रकाशन मन्दिर, जयपुर, पृ० सं० 251

मो0 9588910105



# Hind Swaraj : Changes and Challenges of Gandhi's India Then and Now

Rakshetsa

Department of English, Shree Jain P.G. College

## Abstract :

Hind Swaraj, a platonic dialogue by M.K. Gandhi, presents the broad contours of an alternative society- a new civilizational framework in a rudimentary form. This descriptive study aims to address the changes and challenges India faces in the Pre-Independence and Post-Independent times. through understandings and analysis of Gandhian narratives and beliefs. This paper aims to do so by Discourse Analysis and Interpretive Phenomenology recorded by the means of participant observation with participants of coming-of-age generation along with in-person interviews with critics and subject experts and content analysis by doing comparative study of the relevant literatures. This paper attempts to draw comprehensive conclusions on the contrasts of the two extremes of then and now India.

**Keywords :-** Narrative Discourse, Content Analysis, Post-Modern studies, Hind Swaraj, Mahatma Gandhi.

## Introduction :-

Hind Swaraj, a booklet, is a work of opinions written by Mohandas Karamchand Gandhi in his native language Gujrati and later translated in English. It takes the form of a dialogue between two characters, the Reader and the Editor. The Reader represents the typical Indian countryman and voices the common beliefs and arguments of the time concerning Indian independence. The Editor is Gandhi himself, explaining the flaws of the arguments presented by the Reader.

Passive resistance is the modus operandi of Gandhian narratives which he believes is the only way to attain Swaraj. He also avers that the ancient Indian civilization is the only true civilization. This rural-focused, conventional and primitive idea of civilization definitely contradicts the present-day post-modern India where urbanisation and mechanisation are the forerunners. This paper discusses this contrast of ideas and their impacts and relevance in both then and now eras. A socio-political lens of analysis is the primary mode of inquiry and other areas of development are touched upon in brief.

## **Methods and Methodology :**

### *The methods used for data collection are :*

1. Focus Group Sample Size : 7 people
2. Participant Observation Sample size : 8 people
3. In-depth Interviews Sample Size : 4 people
4. Content Analysis

### *The methodologies used for data analysis are :*

1. Discourse Analysis
2. Interpretive Phenomenology
3. Ethnography

## **Changes in Gandhi's India then and now :**

Written over 114 years ago in 1909, Hind Swaraj changes its meaning with each passing year as India moves ahead in time. India underwent changes in its most minute to the grandest scale in the passed years.

Gandhi's Indian Home Rule after a thorough analysis only comes out as conventional, primitive and an agrarian utopia contradicting the post-modern wave of Digitalization in India. As addressed by Gandhi in his platonic dialogue the schools of education, religion, railways, doctors, lawyers and machinery transposes his beliefs and opinions with modern-day India where these schools hold a meaning and definition completely contrasted with Gandhi. The major contrast in both the India lies in the ideas of cultural cumulative of both times.

### **1. Railways :-**

According to Gandhi railways have helped the British to tighten their grip over India. It has been responsible for famines, epidemics and other problems for the country. He counters the argument of railways contributing to the growth of Indian Nationalism by stating the union of India as one nation way before Britishers established their rule.

In the 18th century, for the first time, the Indian Railways had its first ever rail in 1837, the Red Hill Railways, introduced by Arthur Cotton for the transportation of granite and construction materials. Although primarily set up for industrial purposes, the first ever passenger train by the Great Indian Peninsula Railways (GIPR) carried 400 passengers and marked the beginning of the concerns raised by Gandhi in his dialogue Hind Swaraj.

Post-Independence phase faced drastic variations at organisational level. Railways were classified into various zones. Now, Post-Modern India changed the manual workings of railways to majority of it being digitalised. Metro trains, e-bookings of tickets, self-printing ticket machines (SPTM), coupon validating machines (CVM) are introduced and machinery operated systems substitute

the need for manual labour.

## **2. Religion :**

Gandhi in the book, explicitly points the obtrusion of religion to the lessening of the distance of different places done as the aftermath of railways. He opines the view that man is only stranding away from his maker. Man abused the limit of locomotion imposed on him by the maker and this has resulted in the degradation of faith and belief on the Supreme Power. Gandhi's views on railways flows into his views on religion and collectively stream into the conclusion that "The Hindus, the Mahomedans, the Parsis, and the Christians who have made India their own country are fellow countrymen, and they will have to live in unity, if only for their own interests" (Hind Swaraj, Chapter 10). Gandhi claims that religion doesn't translate to nationalism and these two cannot be synonymous terms and hence asking India and Indians to practice secularism at its atomic level, be patient and develop tolerance for differences.

The intervening of English in the already disputing communities of Hindus and Muslims resulted in both these quarrelling communities self-present the chance of governing them. According to Gandhi, English were good opportunists. They saw an opportunity and they took it but it was presented by the quarrelling parties themselves. And the only ones to blame here are Hindus and Muslims and not the English. To quarrel over religion seems pointless and absurd to Gandhi as he believes that all roads lead to heaven. "Religions are different roads so long as we reach the same goal? Wherein is the cause of quarrelling?" (Hind Swaraj, Chapter 10).

## **3. Machinery :**

By calling machinery the chief symbol of evil in Hind Swaraj, Gandhi asks the countrymen to back off from modernisation and urbanisation that machines bring along. In a capitalist society where a human being is merely reduced down to an object or a resource, the grounds of humanity, ethics and moral can be questioned. Workers then become slaves and this raises concern on the Capitalist agency on human resources.

Gandhi objects mill or factory owners and calls them no likely better than other rich men. He calls them out to keep the number of mills in check and not increase that number anymore. To preserve ancient culture which is the best civilization and means to attain the truth by Gandhi, the present-day machinery must cease to exist. Only by the complete boycott of machines and machine-made goods and services India is to attain Swadeshi or Home Rule.

According to Gandhi, relying heavily on machines is doing away with the nature's course of taking and unfolding things slow and at a time. This hastiness thus created in the rapid growth of machines only results in destruction and deception of the masses. And although it looks difficult

almost impossible to give away machines altogether, Gandhi still believes “if the thought is sound, we shall always find out what we can give up and gradually cease to use it” (Hind Swaraj, Chapter 19).

### **Challenges of Gandhi’s India in the present time :**

The India imagined by Nehru in the Gandhi-Nehru debate of 1945 echoes the way of development Post-modern India is following. Making a direct reference to Hind Swaraj, Nehru made it clear that the total picture presented therein always appeared to be “unreal”.

Gandhi’s India is a limited belief of self-governing biome inhabited by higher-spirited individual. It can seem a vision worth of execution but the younger, Post-Modern India wants satisfactory answer(s) to every why. Present day India has become sensitive against the communal subjects such as religion and secularism. Religion and faith have been a common reason of employing violence and establishing agencies.

There has to be a reason and that reason must be a political or economic one as for India witnessed 3,399 cases of communal or religious rioting between 2016 and 2020. The stats of 2019 where 438 cases and 2020 where 857 cases of communal riots are recorded, demand a concerning deep thought to ponder upon. The Gandhian principle of secularism vanishes in thin air with each passing day. Post-Independent India faces ever-increasing cases of intolerance and hostility in the name of religion to ensure political or economical agency of the ones sitting in power.

“Railways accentuate the evil nature of man. Bad men fulfil their evil designs with greater rapidity”. “Good travels at a snail’s pace” (Hind Swaraj, Chapter 9), these statements by Gandhi in Hind Swaraj are clowned by the present day use of technology. Artificial Intelligence and Internet have made everything accessible within a blink of an eye. This digitalization along with comfort has hitch-hiked other forms of evils like scams and violence. Recent example is a case of an undetected scam for 10 years where a scammer posing as a doctor collected blood samples and a sum of money to secure a job in railways. Another scam was exposed in the purchase of diesel by Railways where vigilance check revealed ₹243 crores excess payment made to oil companies in one zone.

To manage a nation as densely populated as India and in the times of rapid growth in the fields of technology, to practice or preserve Gandhian principles is a challenge as ethics and morals are controlled by the higher authorities in the power hierarchy, as the one in power is liable to make the rules. The attainment of Gandhi’s Hind Swaraj still seems a utopian vision and the likes of it ever being achieved in the future remains almost to nothing. This Post-Modern era of anything goes, in a capitalist society and, the extreme practices of Gandhi of self-rule by an individual on himself is a very demanding task.

**Conclusion :** In today’s India where everything is utilitarian yet consuming the Gandhian ideas

merely seem a philosophy. This primitiveness in the name of protection and self-rule by Gandhi is much debatable on the foregrounds of the conditions of the now, where everything is rapid, more yet always less, and is just one click away. Present day India contradicts the vision of Gandhi's vision making the Gandhian principal of passive resistance only translates that Gandhi was not onboard with the reality of "Change is the only constant."

The idea of manual labour taken over by technology creates a vacuum for the need of employment mostly in the labourers and workers who earn their daily wages through manual work. The gradual shift for the need of highly skilled technicians would only result in the demand of one super-skill set and others disciplines would be overlooked upon.

The selectiveness of Gandhi's ideas in the changing times and growing India poses another need for discourse on its need and implications. The current rate of machinery would be idolised and religion would be mere fiction. The narratives of Gandhi and his face on Indian currency would forever be the ironic subject of discussion.

For the present India, to figure out how to make these two extremes co-exist still is a longer subject of discourse that will be held for the many times to come.

## **Bibliography :**

1. Gandhi M., (1910) Hind Swaraj. Indian opinion.
2. Patel Aakar. "Enemy of Modernity: Gandhi's Hind Swaraj." The Hindu (11 april 2021) <https://www.thehindu.com/books/enemy-of-modernity-gandhis-hind-swaraj/article34279413.ece/amp/>
3. Indian culture n.d., Hind Swaraj by Mahatma Gandhi, Ministry of Culture, GOI, <https://gita-society.com/versesfromqoran.pdf>
4. "India Witnessed 3,399 Cases of Communal or Religious Rioting Between 2016 to 2022". The wire. (29 March 2022). <https://m.thewire.in/article/government/india-commuanl-religious-riots-2016-2020>
5. Dubey, Abhishek. "The Perfect Scam Script: Railways Job Racket Planned Meticulously to Con Many Over 10 Years Without Cover Being Blown". The Times of India. (23 February 2020). <https://m.timesofindia.com/city/ghaziabad/the-perfect-scam-script-railways-job-racket-planned-meticulously-to-con-many-over-10-years-without-cover-being-blown/articleshow/74262006.cms>
6. "Huge Scam Exposed in the Purchase of Diesel by Railways". The Hindu. (09 May 2023). <https://www.thehindu.com/news/national/huge-scam-exposed-in-the-purchase-of-diesel-by-railways/article66827881.ece/amp/>
7. Pradhan, Ram Chandra. "Gandhi's Hind Swaraj: A Summary and Centennial View." Gandhi Marg, vol 31, no.2, (2009). <https://www.mkgandhi.org/articles/gandhis-hind-swaraj-summary-and-centennial-view.html>



# महात्मा गांधी और भीमराव अम्बेडकर की समसामयिक परिदृश्य में समाज सुधारक के रूप में प्रासंगिकता

डॉ. दुर्गा चौधरी

सहायक आचार्य, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर।

## शोध-सार :-

भारत में समसामयिक सामाजिक व्यवस्था विशेषकर दलितों और अन्य अल्पसंख्यकों जैसे हाशिये पर पड़े संप्रदायों के दृष्टिकोण से चिंताजनक और भय पैदा करने वाली है, जो अपनी मौलिक स्वतंत्रता और अधिकारों से वंचित हो जाते हैं। सामाजिक विश्लेषण से संबंधित शिक्षाविद्, वर्तमान समस्याओं के समाधान के लिए गांधीजी और अंबेडकर की शिक्षाओं की ओर झुकाव रखते हैं, क्योंकि वंचितों के दृष्टिकोण से, वे सामाजिक सुधार के दो महानतम गुरु हैं।

वर्तमान अध्ययन एक तुलनात्मक अध्ययन ढांचे में इन दो समाज सुधारकों द्वारा सामने रखे गए दृष्टिकोण और आदर्शों पर गौर करने का प्रयास करता है। केवल कुछ ही लोगों ने सामाजिक सशक्तिकरण और हरिजनों की दुर्दशा में योगदान दिया, जैसा कि गांधी और अंबेडकर ने किया था।

## परिचय :-

महात्मा गांधी और भीमराव अम्बेडकर के बीच विचारों का द्वंद्व उनके अलग-अलग पृष्ठभूमि से आने के कारण आया होगा। जहां महात्मा गांधी वैश्य जाति के थे, वहीं बी. आर. अम्बेडकर का जन्म एक अछूत जाति में हुआ था। यह अपनेपन का अंतर ही है, जिसने भारत में अस्पृश्यता जैसी सामाजिक समस्याओं के प्रति उनके दृष्टिकोण में व्यापक विसंगतियाँ पैदा कीं।

जहां गांधी जी ने इस समस्या को एक उच्च जाति के हिंदू के दृष्टिकोण से लिया, जो भारतीय समाज के ढांचे से अस्पृश्यता को मिटाना चाहते थे, तो अंबेडकर जी ने खुद को उस शोषण के खिलाफ लड़ाई के एक सिपाही के रूप में पहचाना, जो सदियों तक उच्च जाति के हिंदुओं से पीड़ित थे। यदि पूर्व में लोगों ने हिंदू सिद्धांतों के प्रति पवित्र दृष्टिकोण अपनाया, तो बाद वाले का मानना था कि, भारत में सामाजिक असमानता को आंशिक रूप से संरचनात्मक योगदान दिया गया है।

इन दोनों दार्शनिकों पर रचनात्मक प्रभावों को देखते हुए, हम देख सकते हैं कि, उनके जीवन के प्रारंभिक चरण ने उनके विचारों में बहुत योगदान दिया। गांधी जी काठियावाड़ प्रायद्वीप के थे, जो अब गुजरात का हिस्सा है। वह वैश्य जाति से थे, जिन्हें मोध बनिया के नाम से जाना जाता था। बनिया जाति समृद्ध थी।

वे बहुत अधिक रूढ़िवादी थे। उन्होंने अपने जीवन के हर क्षेत्र में परंपरा पर प्रकाश डाला। वे अपने समकालीनों के बीच प्रभावशाली थे। वे राजनीतिक नेता थे और गांधी जी के परिवार के कुछ सदस्य प्रायद्वीप के प्रतिष्ठित राज्यों में प्रधान मंत्री थे।

गांधी जी ने अफ्रीका में जनजीवन के साथ अपनी बातचीत से अपने कठोर विचारों को कमजोर कर दिया। वहाँ उनमें समझौता करने की क्षमता विकसित हुई। वह मूल रूप से सहिष्णु थे और पारंपरिक धारणाओं से परे मानवतावादी धर्म उनके खून में बस गया था और उन्होंने जाति और पंथ के बावजूद, सामान्य रूप से मनुष्य की गरिमा का सम्मान करना शुरू कर दिया था। यह तर्क दिया जा सकता है कि, यह गाँव की पृष्ठभूमि ही है जिसने गांधी जी के खून में सहिष्णुता और अहिंसा की भावना पैदा की। गांधी जी ने अपने पूरे सामाजिक जीवन में संघर्षपूर्ण संघर्ष को अस्वीकार कर दिया। यदि हम गांधीजी के जीवन पर नजर डालें, तो उसके प्रारंभिक दिनों में हम देख सकते हैं कि, यहां गांव के मामलों में सौहार्द और सर्वसम्मति की निरंतर खोज और पक्षपात का कट्टर विरोध था। उन्होंने विवादों और झगड़ों को सुलझाने के व्यापक रूप से प्रचलित साधन के रूप में, खुली झड़पों, जीत का जश्न मनाने और हार का शोक मनाने से बचने की आवश्यकता पर जोर दिया।

वंचित वर्ग के प्रति उनकी सहानुभूति को उनकी आत्मकथा के एक उदाहरण से देखा जा सकता है, जिसे सामाजिक समानता के लिए एक वैध दस्तावेज़ के रूप में उद्धृत किया जा सकता है। उनका उद्देश्य अछूत परिवार को अहमदबाद के निकट अपने आश्रम में प्रवेश दिलाना था। 1920 में, गांधी ने कहा : "अस्पृश्यता के पाप को दूर किए बिना स्वराज अप्राप्य है, जैसे कि यह हिंदू-मुस्लिम एकता के बिना है। 1921 में उन्होंने कहा, "शर्म पुनर्जन्म नहीं लेना चाहता। लेकिन अगर मुझे पुनर्जन्म लेना है तो मुझे अछूत के रूप में जन्म लेना होगा।" भीमराव अंबेडकर जी के शुरुआती वर्षों पर उनके प्रारंभिक प्रभावों को देखते हुए, हम आसानी से यह समझ सकते हैं कि, हिंदू धर्म और जाति से ग्रस्त हिंदू समाज से धीरे-धीरे लेकिन जानबूझकर स्वैच्छिक दूरी बनाई गई थी। गांधीजी के विपरीत, अंबेडकर जी का बचपन जीवन की कठोर वास्तविकताओं का सामना करते हुए बीता। उनके बुजुर्ग उच्च वर्ग की सेवा कर रहे थे और परिवार के कड़वे अनुभवों ने अंबेडकर जी के सामाजिक विचारों के निर्माण पर अमिट प्रभाव डाला। धर्म के मूल सिद्धांतों में निहित, उनकी पुरानी पीढ़ी बहुत पवित्र थी और वे धार्मिक अनुष्ठानों में बहुत नियमित थे। दैवीय मूल्यों के प्रति उनकी धर्मपरायणता और ईश्वर के समक्ष समानता में विश्वास ने अंबेडकर जी की सामाजिक चेतना के बाद के वर्षों में बहुत भूमिका निभाई। ईश्वर के साथ सीधे संवाद में एक प्रकार की गूढ़ आस्था ने, धर्मों की स्थापित संरचना और पारंपरिक रूप से जड़ जमाई गई हठधर्मिता प्रणाली को चुनौती देते हुए, अंबेडकर जी के बाद के जीवन में हिंदू धर्म को अस्वीकार करने के फैसले पर अपना प्रभाव डाला। अंबेडकर जी का मानना था कि, यह हिंदू धर्म की संरचना ही थी जिसने जाति व्यवस्था और अस्पृश्यता को वैध बनाया। अस्पृश्यता उन प्रमुख क्षेत्रों में से एक है, जहां गांधी जी और अंबेडकर जी अपने विरोधी पारंपरिक हिंदू धर्म में एकजुट होते हैं। गांधी और अंबेडकर दोनों ही छुआछूत को हिंदू धर्म में अमानवीयता की बुराई का प्रतीक मानते थे। तत्कालीन बंबई की छावनियों में, जहाँ उनके पिता अपनी हाई स्कूल शिक्षा के अंतिम वर्षों के दौरान काम कर रहे थे, अंबेडकर जी के बचपन और प्रारंभिक युवावस्था के अनुभवों ने यह विचार करने का अवसर दिया कि उनके समय के अछूत युवा कैसे पीड़ित थे।

ध्यान देने योग्य बात यह है कि, अंग्रेजी शिक्षा में समर्थित उदारवादी दृष्टिकोण ने अंबेडकर जी के

जीवन में परिप्रेक्ष्य निर्माण पर प्रभाव डाला है। यहां, वह गांधी जी से थोड़ा अलग थे, जो अंग्रेजी संस्कृति के कट्टर विरोधी थे, जैसा कि हम उनके हिंद स्वराज में देखते हैं। राजनीतिक और सामाजिक माहौल में भी, क्षैतिज जातीय एकजुटता और कठोरता को कम करने और अंतरजातीय संबंधों को प्रोत्साहित करने में भी लोकतांत्रिक रुचि थी। अंग्रेजी शिक्षा में रुचि और हिंदू जाति आधारित सामाजिक संरचना के प्रति घृणा के साथ, अंबेडकर एक ऐसे सामाजिक ताने-बाने के लिए तरस रहे थे, जो लोकतांत्रिक नैतिक मूल्यों में निहित हो।

अंबेडकर जी की अंतरात्मा में एक प्रकार का विभाजन, हिंदू धर्म में धर्मग्रंथों के प्रति उनकी श्रद्धा और असमानता के प्रति घृणा के बीच खेले गए द्वंद्व के रूप में देखा जा सकता है। हिंदू महाकाव्यों के पाठ के माहौल में उनके पालन-पोषण ने उनकी संवेदनशीलता को अत्यधिक भक्ति से भर दिया। लेकिन, जब उन्हें एहसास हुआ कि, धर्मग्रंथ जातिवाद को बढ़ावा देते हैं और हिंदू धर्म के भीतर, अस्पृश्यता से कोई मुक्ति नहीं हो सकती है, तो उन्होंने धर्मग्रंथों से दूरी बनाने की अपनी संवेदनशीलता को सख्त कर लिया था।

उन्होंने समाज के सुधार और अपने लोगों के उत्थान के लिए खुद को आगे बढ़ाया, बीसवीं सदी के शुरुआती दशकों में और 1927 में, चीजें इतनी कट्टरपंथी हो गईं और उनका मन पहले से ही असमानता के खिलाफ आत्मविश्वास से लड़ने के लिए बना हुआ था। 1935 में उन्होंने हिंदू धर्म छोड़ने के अपने निर्णय की ऐतिहासिक घोषणा की। 14 अक्टूबर, 1956 को, अंबेडकर ने हिंदू धर्म छोड़ दिया और अपने सैकड़ों अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म अपना लिया। उन्होंने बौद्ध धर्म को किसी भी दृष्टि से किसी के भी प्रति समानता और अहिंसा के लिए स्थान के रूप में पाया। उन्होंने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया क्योंकि उनका मानना था कि यह तत्कालीन साम्यवाद के हिंसक तरीकों का सहारा लिए बिना, समतावादी मूल्यों का समर्थन करता है।

बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में गांधी जी के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ने देश में किसी को भी अछूता नहीं छोड़ा और वास्तव में श्रमिकों, किसानों, मध्यम वर्ग के युवाओं के साथ-साथ उच्च वर्ग को ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ एक सार्थक एकता और अभिविन्यास बनाने के लिए प्रेरित किया। .

अंबेडकर जी ने अपने लोगों को आज्ञाद कराया और उनकी तरह काम करना शुरू कर दिया, और अपने बाद के वर्षों में धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक दर्शन पर साहित्यिक कृतियों की एक श्रृंखला लिखी, जिसका उद्देश्य बुद्ध के भूले हुए संदेश, प्रारंभिक ईसाई धर्म और दुनिया में प्रमुख दार्शनिक नींव को मूर्त रूप देना था। यदि अंबेडकर जी अपनी कलम और वाणी का उपयोग सामाजिक परिवर्तन के लिए एक शक्तिशाली हथियार के रूप में कर रहे थे, तो गांधी जी सच्चे और विविध अर्थों में एक राजनीतिक कार्यकर्ता थे। भारत में हाशिये पर पड़े वर्गों की मुक्ति के इतिहास में, इन नेताओं द्वारा उत्पन्न ऊर्जा वास्तव में बहुत अधिक थी। शायद, यह स्वतंत्रता, राष्ट्रीय पहचान, सामाजिक समानता और लोकतंत्र से संबंधित उनका लेखन है, जिसने उन्हें दोनों देशों और उनके लोगों के दिमाग में एक अमिट स्थान दिलाया। दो महानतम नेता, जिन्होंने सार्वभौमिक प्रेम, अहिंसा, हाशिये पर पड़े लोगों के लिए चिंता, हम जो कुछ भी करते हैं उसमें नैतिक रुख का उपदेश दिया, समूहों और राष्ट्रों के बीच संघर्षों के अहिंसक समाधान के लिए तर्क दिया।

गांधी जी के सिद्धांत भारतीयता में उनके विश्वास पर आधारित हैं और यहीं पर, वह अंबेडकर से भिन्न हैं, जिन्होंने मौलिक रूप से भारतीयता से विचलन किया और बौद्ध धर्म को अपनाया। उनकी पुस्तक हिन्द स्वराज इसी बात को दोहराती है। यदि हम नैतिक आलोचना के ढाँचे से इस कार्य का विस्तृत मूल्यांकन करें, तो हम

देख सकते हैं कि, उन्होंने भारतीय सभ्यता को शेष विश्व की अन्य सभी सभ्यताओं से उच्च दर्जा दिया है। पुस्तक के अध्याय छः में, गांधी जी ने सभ्यता पर अपने विचारों का विस्तार से वर्णन किया है।

वह सभ्यता के चिह्न के रूप में भौतिक कल्याण से इनकार करते हैं। वे कहते हैं, आधुनिक सभ्यता केवल भौतिकवादी नहीं है, बल्कि अनैतिक और अधार्मिक पहलुओं में लिप्त है। आधुनिक सभ्यता लोगों को पैसे से खरीदी जा सकने वाली विलासिता का गुलाम बना देती है।

भारत की स्थिति शीर्षक अध्याय में वह लिखते हैं, भारत अंग्रेजी शासन के अधीन नहीं, बल्कि आधुनिक सभ्यता के अधीन है... हम ईश्वर से विमुख हो रहे हैं। भारत की पीड़ा हमारे धार्मिक जीवन से विमुख होकर आधुनिक सभ्यता को स्वीकार करने के कारण है। उनकी नैतिक और सामाजिक सक्रियता वर्तमान अध्ययन में बहुत जगह लेती है।

गांधीजी राष्ट्रवाद और उपनिवेशवाद विरोधी प्रतिरोध को एक ऐसे काम में देखा जा सकता है जो हाशिये पर पड़े लोगों की भावनाओं से संबंधित है।

पुस्तक के अध्याय "सच्ची सभ्यता क्या है?" में वह लिखते हैं, सभ्यता आचरण का वह तरीका है जो मनुष्य को कर्तव्य का मार्ग दिखाता है। इस लिहाज से भारत के पास किसी और से सीखने को कुछ नहीं है। भारतीय सभ्यता की प्रवृत्ति नैतिक अस्तित्व को ऊपर उठाने की है, पश्चिमी सभ्यता की प्रवृत्ति अमरता का प्रचार करने की है। चौथे विश्व साहित्य के दृष्टिकोण से सांस्कृतिक अध्ययन मंच में इस प्रकार के अंशों की जांच की जाएगी। इस परियोजना के दौरान टॉल्स्टॉय की द किंगडम ऑफ गॉड इज़ विदिन यू की तुलना हिंद स्वराज से की गई है। अध्ययन इस बात की व्यापक समीक्षा देता है कि महात्मा गांधी ने लियो टॉल्स्टॉय को एक सच्चा गुरु और नैतिक मार्गदर्शक और मानव जाति के लिए उनका पारस्परिक समर्थन कैसे पाया था। टॉल्स्टॉय के अंतिम पत्र और उनकी डायरी में उनकी प्रविष्टियों से संकेत मिलता है कि, टॉल्स्टॉय ने अहिंसक प्रतिरोध में एक अद्वितीय प्रयास के रूप में गांधी जी के काम की बहुत प्रशंसा की थी। यदि हम इस पुस्तक को अम्बेडकर द्वारा जाति उन्मूलन के विरुद्ध रखते हैं, तो हम दोनों के बीच मौलिक मतभेद को समझते हैं।

### **महात्मा गांधी और डॉ. भीमराव अम्बेडकर के संयोग :-**

महात्मा गांधी और डॉ. भीमराव अम्बेडकर के बीच का संयोग भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महत्वपूर्ण था, और इसने समाज में सुधार और समानता की दिशा में महत्वपूर्ण परिणाम दिए। यहां कुछ महत्वपूर्ण कारण दिए गए हैं जो इन दो महान नेताओं के संयोग को महत्वपूर्ण बनाते हैं:-

- **पूना पैक्ट :-** सबसे महत्वपूर्ण संयोगों में से एक था पूना पैक्ट, जो 1932 में हुआ। इसमें डॉ. अम्बेडकर और महात्मा गांधी के बीच यह समझौता हुआ कि दलित समुदाय को आरक्षित सीटों की बजाय हरिजन (अस्पृश्य) के लिए आरक्षित सीटों की मांग की जाएगी। यह समझौता दलित समुदाय के लिए न्यायपूर्ण होने के साथ-साथ गांधी और अम्बेडकर के बीच के संयोग का एक प्रमुख उदाहरण था।

- **हरिजन आंदोलन :-** महात्मा गांधी ने अपने 'हरिजन' आंदोलन के माध्यम से दलितों के प्रति अपनी स्नेहभावना और समर्पण दिखाया। इस आंदोलन के माध्यम से उन्होंने दलितों के लिए व्यापक रूप से उनकी समाज में शामिली की कोशिश की और उनके उन्नति के लिए प्रायास किया।

- **सामाजिक व्यवस्था में सुधार :-** गांधी और अम्बेडकर, दोनों ने जातिवाद, असमानता, और जातिगत

भेदभाव के खिलाफ मिलकर आवाज उठाई और समाज में सुधार करने के लिए प्रयास किया। उनके संयोग ने इस मुद्दे पर सामाजिक चर्चा को बढ़ावा दिया और समाज में सुधार की दिशा में प्रेरित किया।

- **स्वतंत्रता संग्राम में साझेदारी :-** गांधी जी और अम्बेडकर जी, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय में साथ मिलकर स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया और आपसी सहमति बनाई। इसके परिणामस्वरूप, दोनों नेता ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ मिलकर काम किया और स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया।

इन सभी कारणों से, महात्मा गांधी और डॉ. भीमराव अम्बेडकर के संयोग ने भारतीय समाज में सुधार और समानता की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान किया और स्वतंत्रता संग्राम के महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में कार्य किया।

**निष्कर्ष :-**

महात्मा गांधी और डॉ. भीमराव अम्बेडकर के समाज सुधारक के रूप में प्रासंगिकता का सारांश यह है कि उनके संयोग ने भारतीय समाज में महत्वपूर्ण बदलाव को दरकिनार किया और समाज में सुधार और समानता की दिशा में महत्वपूर्ण परिणाम पैदा किए। महात्मा गांधी ने अपने अहिंसा, सत्याग्रह, और सर्वोदय के सिद्धांतों के माध्यम से समाज में सुधार की दिशा में काम किया और विशेषकर हरिजनों के प्रति अपनी स्नेहभावना दिखाई। वह हरिजन आंदोलन के माध्यम से दलित समुदाय के लिए जातिवाद का भेद-भाव मिटाना चाहते थे। भारतीय इतिहास में इन दोनों का योगदान अतुलनीय रहने के कारण सदैव स्मरणीय रहेगा।

**स्रोत-ग्रंथ :-**

1. The Collected Works of Mahatma Gandhi. Publications Division, Government of India, Delhi, Vol. 1, p. 111.
2. M.K. Gandhi, An Autobiography. Beacon Press, Boston, 1957.
3. Bose, N. K., Selections from Gandhi. Ahmedabad, Navajivan, 1948.
4. The Collected Works of Mahatma Gandhi. Delhi, Publications Division, Government of India, 1958.
5. Doke, Joseph J., M.K. Gandhi: An Indian Patriot in South Africa. Madras, G.A. Natesan & Co., 1919.
6. Prabhu, R.K. and Rao, U.R., The Mind of Mahatma Gandhi. Bombay, Oxford University Press, 1945.
7. Ambedkar, B R., (1969), 'The Great Conversion: Speech on the Eve of the Great Conversion Held on 15 October 1956.' In Thus Spoke Ambedkar, Selected Speeches, Vol.2: 140-65; Bhagwan Das, (Ed), (Bheem Patrika Publications: Jullunder).
8. Dangle, Aqun., (Ed), (1992), 'Introduction', In Poisoned Bread: Translations from Modern Marathi Dalit Literature, (Orient Longman: Bombay).
9. Ilaiah, Kancha., (1996), Why I Am Not a Hindu: A Sudra Critique of Hindutva Philosophy, Culture and Political Economy, (Samya: Calcutta), (Limbale, Sharankumar, 2000).



# Mahatma Gandhi and the Rashtriya Swayamsevak Sangh (RSS) : A Study of their Ideological Differences and Interactions

Alpana Sharma, Research Scholar

Political Science, Maharaja Ganga Singh University, Bikaner (Rajasthan)

Prof. Dr. Babitajain, Research Guide

Principal, Govt. College Gangashahar, Bikaner ( Rajasthan)

## Abstract :

Mahatma Gandhi and the RSS had differing ideologies and approaches to politics and social issues. Gandhi was a prominent leader in the Indian independence movement, known for his philosophy of nonviolence and his commitment to religious and communal harmony. On the other hand, the RSS is a right-wing Hindu nationalist organization that promotes the idea of Hindutva, or the cultural and political dominance of Hindus in India.

While there were instances of cooperation between individuals associated with the RSS and the Indian National Congress, the political party led by Gandhi, during the freedom struggle, there were also significant ideological differences. The RSS was critical of Gandhi's approach to nonviolence and his promotion of religious pluralism. They believed in a more assertive form of Hindu nationalism.

It's important to note that the RSS was not a dominant or influential force in Indian politics during Gandhi's lifetime, and their prominence grew in the decades that followed. The RSS was banned multiple times by the Indian government, and its leaders faced legal restrictions.

This paper explores the complex relationship between Mahatma Gandhi, the iconic leader of India's struggle for independence, and the Rashtriya Swayamsevak Sangh (RSS), a Hindu nationalist organization. Gandhi's commitment to nonviolence and religious harmony stood in contrast to the RSS's assertive Hindu nationalist ideology. While there were occasional instances of cooperation between individuals associated with the RSS and the Indian National Congress, led by Gandhi, their interactions were marked by profound ideological differences. The RSS, initially a fringe group, grew in influence in post-independence India. This paper delves into the historical context and their

varying perspectives on the role of religion, violence, and nation-building, shedding light on a significant chapter in India's political and social history.

### **Introduction :**

The Indian struggle for independence, marked by its multifaceted complexities and diverse ideological currents, saw the convergence and divergence of numerous prominent figures and movements. At the forefront of this monumental journey was Mahatma Gandhi, the apostle of nonviolence and a champion of religious and communal harmony. Alongside him, albeit in the shadows during that era, was the Rashtriya Swayamsevak Sangh (RSS), a Hindu nationalist organization that would later come to play a substantial role in the socio-political landscape of independent India. The interactions, or lack thereof, between Gandhi and the RSS during this pivotal period offer a fascinating narrative of ideological dissonance, pragmatic cooperation, and historical intricacies.

Mahatma Gandhi, revered as the 'Father of the Nation,' was a symbol of resistance against British colonial rule through nonviolent means. His principles of truth (Satya) and nonviolence (Ahimsa) guided the Indian National Congress, the leading political entity of the time, as it spearheaded India's fight for freedom. In contrast, the RSS espoused a vision of Hindutva, which aimed to assert the cultural and political dominance of Hindus in India. The RSS's assertive Hindu nationalist ideology stood in stark opposition to Gandhi's inclusive approach, which championed the rights and dignity of all religious and ethnic communities within the diverse tapestry of India.

### **Significance of studying their interactions :**

*Studying the interactions between Mahatma Gandhi and the Rashtriya Swayamsevak Sangh (RSS) holds significant historical and contemporary relevance for several reasons :*

- **Understanding the Complexity of the Indian Freedom Struggle :** The Indian independence movement was a multifaceted and intricate struggle that involved various ideological currents, leaders, and organizations. The interactions between Gandhi and the RSS highlight the diversity of approaches, tactics, and visions within this movement. By studying these interactions, we gain a more nuanced understanding of the challenges and complexities faced during the fight for freedom.
- **Ideological Clashes and Cooperation :** Gandhi and the RSS represented two distinct and often conflicting ideologies. Gandhi's commitment to nonviolence, religious harmony, and inclusive nationalism contrasted with the RSS's Hindu nationalist agenda. The study of their interactions elucidates how individuals and groups with opposing ideologies navigated the challenging landscape of India's independence movement, sometimes finding common ground and at other times clashing over fundamental principles.
- **Early History of Hindu Nationalism :** The RSS, while not a dominant force during Gandhi's

time, played a significant role in shaping the trajectory of Hindu nationalism in India. Understanding their interactions with Gandhi provides insights into the origins and early development of Hindu nationalism. This knowledge is vital for comprehending the political and social dynamics of contemporary India, where Hindu nationalism has become a prominent and influential force.

- **Relevance to Modern Politics :** The study of Gandhi's interactions with the RSS also has contemporary relevance. In today's India, the RSS and its affiliated organizations have gained considerable political influence. Examining their historical interactions with Gandhi helps in understanding the roots and evolution of their ideology and the role they play in shaping the country's policies and social dynamics.

### **Historical Context :**

*Here is an overview of the historical background of India during Mahatma Gandhi's time, which was marked by the struggle for independence :*

### **Late 19th and Early 20th Century :**

- **British Colonial Rule :** By the late 19th century, India was under British colonial rule, having been colonized by the British East India Company in the mid-18th century. The British colonial administration had established control over the Indian subcontinent through the establishment of the British Raj.
- **Emergence of Nationalism :** The late 19th century saw the emergence of Indian nationalism, with the founding of organizations like the Indian National Congress (INC) in 1885. These organizations aimed at representing Indian interests and promoting political reform.

### **Mahatma Gandhi's Role :**

- **Return from South Africa :** Mahatma Gandhi returned to India from South Africa in 1915. He had gained prominence there for his nonviolent civil disobedience campaigns, and he brought those methods to the Indian independence movement.
- **Non-Cooperation and Civil Disobedience :** Gandhi became a central figure in the struggle for independence. He promoted nonviolent civil disobedience and launched movements like the Non-Cooperation Movement (1920-1922) and the Civil Disobedience Movement (1930-1934). These movements aimed at boycotting British goods and resisting oppressive British policies.
- **Salt March :** One of the most iconic events in the Indian independence movement was the Salt March (1930), where Gandhi and his followers marched to the Arabian Sea to protest the British salt monopoly.

### **Independence and Partition :**

- **Mountbatten Plan :** In 1947, Lord Louis Mountbatten, the last Viceroy of India, proposed a

plan for partition and the transfer of power. India would be partitioned into two separate nations, India and Pakistan, leading to widespread communal violence and the displacement of millions of people.

- **Independence :** India finally gained independence from British rule on August 15, 1947. The INC and the Muslim League played pivotal roles in the process, with leaders like Jawaharlal Nehru becoming the first Prime Minister of India.

This period of Indian history was characterized by a long and arduous struggle for independence, with Mahatma Gandhi's principles of nonviolence and civil disobedience playing a crucial role in the eventual achievement of independence and the establishment of a democratic and diverse nation.

### **Founding and Early History of the RSS :**

*The Rashtriya Swayamsevak Sangh (RSS) is a Hindu nationalist organization that played a significant role in the political and social landscape of India. Here's an introduction to its founding and early history :*

The RSS was founded on September 27, 1925, in the city of Nagpur, in central India. Its founding leader was Keshav Baliram Hedgewar, who was a medical doctor and a strong advocate of Hindutva, an ideology emphasizing the cultural and political dominance of Hindus in India.

The RSS aimed to inculcate a sense of discipline, patriotism, and devotion to Hindu culture among its members. It used drills, marches, and ideological training to promote its objectives. The RSS was known for its distinctive uniform, which included khaki shorts and white shirts. This uniform became a symbol of the organization.

After the death of Dr. Hedgewar in 1940, Madhav Sadashiv Golwalkar, often referred to as Guru Golwalkar, became the second chief of the RSS. Under his leadership, the organization saw significant growth. The RSS, while being initially focused on cultural and social issues, also started engaging in political activities. It played a role in the independence movement against British colonial rule.

The RSS has been involved in several controversies and clashes throughout its history. It was accused of involvement in the assassination of Mahatma Gandhi in 1948, and some of its members faced legal consequences.

The RSS was banned for a brief period following the assassination of Gandhi but was later allowed to operate. The RSS has continued to be a prominent and influential organization in India's political and social landscape. It has established affiliated groups and organizations, collectively known as the Sangh Parivar, which work towards promoting its ideology and objectives. Over time, the RSS has been associated with the broader Hindutva movement, and it remains a subject of significant debate and discussion in India's diverse and pluralistic society.

## **Gandhi's Ideology :**

*Mahatma Gandhi's ideology was rooted in his principles of nonviolence, truth, and his vision for a just and inclusive society. Here are some key aspects of Gandhi's ideology :*

- **Nonviolence (Ahimsa) :** Gandhi is most famously associated with the principle of Ahimsa, which means nonviolence or non-harming. He believed that nonviolence was the most powerful force for social and political change.
- **Truth (Satyagraha) :** Gandhi believed in the concept of Satyagraha, which means "truth force" or "soul force." It involved seeking truth and justice through nonviolent means.
- **Sarvodaya (Welfare of All) :** Gandhi's vision for India was based on the principle of Sarvodaya, which means the welfare of all. He believed in the equitable distribution of resources and opportunities.
- **Swadeshi (Self-Reliance) :** Gandhi promoted the idea of Swadeshi, or self-reliance, encouraging Indians to produce their goods and reduce their dependence on British-made products.
- **Decentralization and Village Swaraj :** Gandhi advocated for a decentralized form of governance where local communities and villages would have greater autonomy and self-governance.

## **RSS Ideology :**

*The RashtriyaSwayamsevakSangh (RSS) is an organization that espouses a specific ideological and cultural worldview known as Hindutva. Here are some key aspects of RSS ideology:*

- **Hindutva (Hinduness) :** Hindutva is the central ideological framework of the RSS. It seeks to define and promote a cultural and political identity rooted in Hinduism. It envisions India as a Hindu Rashtra, or Hindu nation. While Hinduism is a major religion in India, Hindutva goes beyond religious faith to emphasize the cultural, social, and political aspects of being Hindu.
- **Cultural Nationalism :** The RSS promotes cultural nationalism, which asserts the importance of India's ancient Hindu culture and traditions. It seeks to preserve and revive cultural practices, languages, and heritage that are considered traditionally Hindu.
- **Anti-Conversion and GharWapsi :** The RSS is critical of religious conversion and often opposes missionary activities in India. It advocates for "GharWapsi," which aims to reconvert those who have converted to other religions back to Hinduism.
- **Nationalism and Patriotism :** The RSS promotes a strong sense of Indian nationalism and patriotism, emphasizing love for the nation and its cultural roots. It views India as the homeland of Hindus and envisions the protection and promotion of Hindu culture as essential to national well-being.
- **Cow Protection and Ban on Cow Slaughter :** The RSS places significant importance on the protection of cows, considering them sacred in Hinduism. It has been involved in campaigns to

ban cow slaughter and the sale of beef in various Indian states.

- **Social Welfare and Community Service :** The RSS operates various affiliated organizations, collectively known as the Sangh Parivar, involved in social service and community development activities. These organizations work in fields like education, healthcare, and disaster relief.

### **Role of The RSS in The Assassination of Mahatma Gandhi and Its Aftermath :**

Nathuram Godse was a former RSS member who was associated with the extremist wing of the organization. He had ideological differences with Gandhi and was opposed to his views on Hindu-Muslim unity and nonviolence. On January 30, 1948, Godse assassinated Mahatma Gandhi in New Delhi. He approached Gandhi during his evening prayer meeting and shot him three times, resulting in Gandhi's death.

The involvement of Godse, an RSS member at some point, led to allegations that the RSS may have indirectly influenced his actions or that its ideology contributed to the assassination. While the RSS leadership denied any direct involvement in the assassination, the organization faced significant scrutiny and criticism.

**Ban on the RSS and Sangh Parivar Organizations.** Following the assassination, the Indian government initiated an investigation into the role of the RSS in the murder. Based on the findings of the inquiry, the government banned the RSS on February 4, 1948. Several other Sangh Parivar organizations, affiliated with the RSS, were also banned or restricted during this period.

Over time, the RSS rebuilt its reputation and gradually expanded its influence across various sectors of Indian society. The role of the RSS in the assassination of Mahatma Gandhi remains a subject of debate and controversy. While the organization officially disavows any connection to the assassination and emphasizes its commitment to nonviolence and cultural activities, the event continues to be a significant part of India's historical and political discourse.

### **Conclusion :**

In conclusion, the Rashtriya Swayamsevak Sangh (RSS) is a complex and influential organization in India, known for its commitment to Hindutva ideology and its role in shaping Indian society and politics. Founded in 1925, it has had a significant impact on the country's cultural and political landscape. While the RSS has promoted cultural nationalism, religious values, and social service, it has also faced controversies and debates that have centered around various aspects of its ideology and activities.

The assassination of Mahatma Gandhi, the ban on the RSS, and its involvement in politics are some of the key historical events and controversies associated with the organization. The RSS's vision of a Hindu Rashtra and its influence on Indian governance have sparked ongoing debates about

secularism, religious pluralism, and the rights of religious minorities. The organization's approach to issues like cow protection, religious conversion, and cultural preservation has generated both support and criticism.

The RSS and its affiliated organizations, collectively known as the SanghParivar, continue to be significant actors in Indian politics, society, and education. They have influenced government policies and have been instrumental in shaping the narrative of India's cultural and national identity. The controversies and debates surrounding the RSS reflect the diverse and often polarized opinions about its impact on India's diverse and pluralistic society.

The role of the RSS in India's ongoing development remains a topic of intense discussion and examination. As the nation grapples with the complex interplay of religion, culture, politics, and identity, the RSS's influence and actions will continue to be a central aspect of the Indian socio-political landscape.

## References :

1. Anderson W. "The Rashtriya Swayamsevak Sangh: I: Early Concerns." *Economic and Political Weekly* 7, no. 11 (1972) : 589–97.
2. Anderson W., and Dample S. *The RSS: A View to the Inside*. New Delhi, 2018.
3. Bandyopadhyay S. *From Plassey to Partition and After: A History of Modern India*. New Delhi, 2015.
4. Basu T., Datta P., Sarkar S., and Sarkar T. *Khaki Shorts and Saffron Flags: A Critique of the Hindu Right*. New Delhi, 1993.
5. Bayly C.A. "Modern Indian Historiography." In *Companion to Historiography*, edited by Bentley Michael. New York, 2018.
6. Bhattacharjee M. *Disaster Relief and the RSS: Resurrecting Religion Through Humanitarianism*. New Delhi, 2019.
7. Chandra B. *Communalism in Modern India*. New Delhi, 1984.
8. Deoras B. *Hindu Sangathan: The Need of the Nation*. New Delhi, 1979.

E-mail: alpanasharma@gmail.com

E-mail : jainbabita28@gmail.com



# SIGNIFICANT ASPECTS OF THE GREAT MAHATAMA AND RELEVANCY OF HIS IDEOLOGIES IN THE MODERN WORLD

Minakashi Kumawat

Assistant Professor, Government Law P.G. College, Bikaner.

## ABSTRACT :

*"I object to violence because when it appears to do good, the good is only temporary; the evil it does is permanent."* -**Mahatma Gandhi**

In this world of violence and enmity, this message proves to be very accurate. The sooner the world understands this, the sooner it will be saved from destruction.

As compared with older era, there is much need of non- violence and peace. Today, as there is an environment of chaos and violence everywhere around. Gandhiji used to honor all religions, the secular ideology of Mahatma Gandhi are followed by the Indian Constitution as well as accepted as the core values of Indian society in today's world where violence is committed in the name of religion. Tolerance will help in neutralizing the Brotherhood he gave utmost importance to the removal of untouchability. Gandhiji started a magazine called 'Harijan'. According to him, untouchability had no sanction in the Hindu scriptures.

As we all know non-violence and truth was the main weapon of Gandhiji which he used during the freedom movement of India against Britishers. Generally, people think that non-violence is the symbol of weakness but this is the only myth and fully incorrect. The reality is that the weapon of non-violence and tolerance require a great level of courage and patience which Gandhiji had. Due to his extensive influence on the people, Rabindranath Tagore called him the 'Mahatma'.

**KEYWORDS** - Violence, Destruction, Secular, Untouchability, Non-violence

Born on 2nd October, 1869, Mohandas Karamchand Gandhi was the youngest child of his father's fourth wife. His father was the diwan of Porbandar and he did not have much in the way of a formal education. Gandhiji's mother Putlibai was absorbed in religion and divided her time between home and temple also with that she frequently fasted. Mohandas grew up in a home steeped in

Vaishnavism with a strong tinge of Jainism, a religion whose tenets are non-violence and the belief that everything in the universe is eternal. Thus, he took for granted ahimsa, fasting, vegetarianism, mutual tolerance and self purification between adherents of various creeds and sects.

The whole world celebrates the birth anniversary of the father of nation Mohandas Karamchand Gandhi, fondly remembered as “Bapu”. The world accept this great day as International Day for non-violence to pay respect and acceptance to the real spirit of peace and non-violence promoted by Gandhiji throughout his life.

In 1888, Mohandas left for England to study law. After his studies were completed, he went to Natal, in South Africa to work in a law firm. It was then that his political ideology gained a definite shape. Many Indians and Africans faced severe radical discrimination in South Africa. Gandhiji was thrown off a train because he refused to move from the first class to the third class coach while holding a valid first class ticket. These were the events that inspired him to fight against discrimination and injustice in the society. To organize the Indian community in South Africa, Gandhiji founded the Natal Indian Congress in 1894 and helped Indians. Gandhiji had successfully fought the racist regime with the novel method of mass agitation which he called Satyagraha. Mahatma Gandhi suggested that if the cause was true and if the struggle was against injustice, then physical force was not necessary to fight the oppressor.

After coming back to India, Gandhiji travelled to inspire the peasants to struggle against the oppressive plantation system in Champaran, Bihar. In the same year, he organized a Satyagraha to support the peasants of Kheda in Gujarat. In the year 1918, he went to Ahmedabad for organizing a Satyagraha movement between cotton Mill workers.

**This great leader and father of the nation led three mass movements which were :**

**NON-COOPERATION MOVEMENT :**

*Gandhiji launched the Non-Cooperation Movement at the Calcutta session in September, 1920 which urged the Indians not to cooperate with the British and he also defined Swaraj as the ultimate aim. Some aims of this movement were :*

- To gain Swaraj for the people of India by peaceful and legitimate means.
- To redress the wrongs done to Punjab and Turkey.

The Non-cooperation movement aimed to bring the British administration to a standstill.

- Rabindranath Tagore and G Subramania Iyer returned their titles to the Britishers while Gandhiji returned his Kaiser-I-Hind medal to them.
- Students were asked to boycott educational institutions run by the British.
- Strikes and hadtals to place all over the country and people refuse to cast their votes for

elections for electing representatives to the Legislature.

- Indians refused to serve in government jobs and in the army.
- Along with this, Indians were asked to boycott foreign goods and huge bonfires were lit up burn them.

### **CIVIL DISOBEDIENCE MOVEMENT :**

The British government imposed a tax on salt which is an essential commodity for rich and poor alike. On 12 March, 1930 Mahatma Gandhi along with his 78 volunteers begin his famous Dandi March from Sabarmati Ashram to the coastal town of Dandi. They covered a distance of 375 km in 24 days. Gandhiji and his followers reached Dandi on 6 April and violated the law by making salt by boiling sea water. And this was the beginning of the Civil Disobedience Movement which soon became a mass movement. In this movement, foreign cloth was boycotted and liquor shops were picketed. Along with this, peasants refused to pay taxes. The famous poetess Sarojini Naidu also led a march of satyagrahis to government - owned salt depots. In 1939, when the Second World War began, the British declared War on India's behalf without even consulting the Congress. But this time India's stand was very clear. India was not going to be associated with it if very freedom was denied to Indians and a war was fought in the name of freedom and democracy. In October 1940, Individual Satyagraha was launched by Gandhiji with Vinoba Bhave as the first person to offer Satyagraha. In the year 1942, Sir Stafford Cripps came to India to seek the support of Indian leaders in the Second World War and this is known as Cripps mission.

### **QUIT INDIA MOVEMENT :**

After the failure of Cripps mission, the Congress decided to launch the third mass movement against the British, the Quit India Movement. In August 1942, Gandhiji gave the slogan 'Quit India'. The All India Congress Committee met on 8 August, 1942 at Mumbai and passed the Quit India Resolution and it proposed the starting of a non-violent mass struggle under Gandhiji. This resolution demanded the immediate end of British rule in India. Gandhiji also give the mantra 'Do or Die'. The Quit India Movement was the last major mass movement in the history of Indian freedom struggle. It witnessed a large number of women participants. Revolutionary activities were organized by Aruna Asaf Ali, Ram Manohar Lohia and Jayaprakash Narayan.

These were the movements by Mahatma Gandhi which played a significant role in the Indian freedom struggle.

By 1921, Gandhiji had designed the Swaraj flag. It was a tricolor which had a spinning wheel at its centre which represented the Gandhian ideal of self - help. Carrying this flag and holding it aloft, during marches became a symbol of defiance. On 24 March, 1947, Lord Mountbatten was appointed

the Viceroy of India. On 3rd of June, 1947 he presented a plan for the division of India into two independent States - the Indian Union and Pakistan. Also, Indian states were given the right to decide their own future. Pakistan consisted of West Punjab, East Bengal (today known as Bangladesh), Sindh and the North West Frontier Province. The provisions under Mountbatten plan were introduced in the British Parliament which was passed as the Indian Independence Act (1947).

We call Gandhiji 'The Father of the Nation' because he was one who singly stood up against British Empire, without any weapons and arms with peace and non-violence and brought our independence. Mahatma Gandhi was not a member of Constituent Assembly yet he contributed indirectly in the making of Indian Constitution and there were many members who followed his vision. Also, he had spelt out what he wanted the constitution to do in his magazine 'Young India' in 1931. In an interview, he forwarded his idea as how independent India shall be. He imagined the nation based on fraternity, liberty and equality. Gandhian idea of decentralization of power can be seen in democracies through empowered local self governments. Likely, Indian Government have also implemented local self government by adopting to Panchayati Raj and Municipality system for rural and urban areas. Socialism is another basic principle of Gandhianism; it aspires for a classless society with no poverty, no hunger, no unemployment and education and health for all. These ideologies of Gandhiji have adopted by the Indian policy makers over the years. These ideas can be seen as the basic framework of our Indian constitution.

The world is rotating under the burden of global warming, resource crunch and climate change. The world including the United Nation has recognized Gandhian idea of Sustainable development and the recent inauguration of Gandhi Solar Park at the headquarters of UN is a testimony to that.

**Once, Gandhiji said, "Earth has enough for human needs, but not for human greeds."**

These lines of Gandhiji reflect upon how human behavior demolishes nature and how sustainable way of living was is the need of the hour. Gandhian idea holds the relevance in the current scenario as people live a luxurious lifestyle and destroy the resources impulsively indebting future generations. For Gandhiji, the process of modification was very essential but it must be ethical, non-violent and democratic giving rights to all minorities. Gandhianism had inspired and will continue to inspire many social, political and religious leaders all over the world. The name of Gandhi transcends the bounds of religion, race and nation - states and it has emerged as the prophetic voice of this 21st century. Today, Gandhiji is remembered for his passionate adherence to the practice of his Supreme humanism and non - violence in each and every corner of the world. So, we can conclude that Gandhiji played an important part for the Indian Independence and in the Indian freedom struggle.

Rajghat in Delhi is the Memorial which was dedicated to Mahatma Gandhi where a black

platform was raised to mark the spot of his cremation on 31st January, 1948. It also consists of an eternal flame which burns for the Mahatma.

*"He was a great soul who believed in truth and non - violence,  
And told that to anger the best answer is silence."*

**References :**

1. The Indian Constitution
2. <https://www.britannica.com>
3. <https://times of India. Indiatimes>
4. <https://www.mkgandhi.org>
5. 1066- India and the Contemporary World- II ISBN: 81-7450-707-8
6. New Milestones Revised ISBN: 978-93-5674-007-5
7. The Story of My Experiments with Truth ISBN: 81-7229-008-X.



# Satyagraha and Gandhiji

Dr. Bharti Sankhla

Faculty of commerce and Management, M.G.S.U, Bikaner.

## ABSTRACT :-

It is possible to create extensive social reforms and action by adopting non-violent means. This article discusses about Gandhi's Satyagraha and its importance. It directs the satyagrahi who has adopted non-violence. It means satyagraha has many characteristics, conditions. This article traces Satyagraha as weapon, of not only passive resistance and non cooperation, but a more inclusive civil disobedience.

**KEYWORDS :-** Satyagraha, Civil Disobedience, Non-Violence, Non-Cooperation.

## Introduction :-

India got freedom through a unique revolution built on the edifice of satyagraha. This concept was quite new, for international politics. He defined satyagraha as soul - force which is born out of the basic elements of truth and nonviolence. Satyagraha vindicates truth and Gandhiji shaped India's destiny in the 20th century which eventually led to the end of colonialism in the entire world.

## Struggle against rights :-

Gandhi Ji found the condition in Transvaal estate more worse here, a special law was enacted for Asians, under this act, all Indians had to pay fee for entry into Transvaal. They had no voting right, Even they were not allowed to move on street roads. Neither they could go out of their houses after 9:00 PM without permission. Once Gandhi was badly treated while walking through president street and kicked by a guard without any apparent reason. At that time Great Britain was one of the most powerful nation in the world, within empire that included colonies all over the globe like India, South Africa was also a colony of Great Britain. People were living from various countries over there and British and other European belonged to the ruling class where as Indians, and other Asians, blacks, whites were treated as lower class people upon whom many restrictions were imposed.

At this stage the most pressing need was to establish an organization to continue the fight against the ruling class people. Hence Gandhiji formed the National Congress on May 1893 very soon.

newspapers were seen highlighting the fight for the rights of Indians in South Africa and the news spread all over the world in 1896 gandhiji came to India for 6 months to take his family back with him after arriving at Bombay he went straight to rajkot and wrote a pamphlet on situation of Indians in South Africa copies were sent to all newspapers the pioneer was the first paper to highlight this in its editorial section from rajkotgandhiji visited Bombay to educate the people on the condition of Indians in South Africa Bombay was the first city he chose for the purpose of removing colour differentiation from Bombay, gandhi went to puna where he met lokmanyatilak GK gokhale in December 1896 he sailed back to South Africa along with his wife and 2 sons.

### **Return of Gandhiji to India for satyagraha movement :-**

That time gandhiji returned to India in 1915 along with his family after a long stay off 21 years in South Africa his law drawn struggle to win equal rights for Indians in South Africa had made him a tough leader 1917 he just start the agitation for swaraj rule in India through the practice of his unique philosophy of satyagrahagandhiji acquired confidence to try it as a remedy tool he experienced first in Bihar where he rose to call of the peasants of champaran whose condition was worse than that of sleep they had to put up with all sorts of atrocities prepared by British britishersdevar bound to sale their produce to British planters at the price fixed by them hardware victims of unlawful extraction Gandhi Ji sympathetically heard disgrace fiance and despite the threat of imprisonment he lead all persons and immensely impressed by his ID list is fearlessness and practical approach political action the satyagraha movement met with tremendous success in India.

Gandhijike across another adversely condition given by farmers in Kerala district of Gujarat here, the crops had failed in 1918, but the government officials insisted on collecting the full land revenue in that case gandhiji influenced the peasants to offer satyagraha but they refuse to pay and they refuse to pay revenue, at the risk of suffering grave consequences the government had to ultimately arrive at a settlement with persons in another case the mill workers of ahmedabad caught the attention of Gandhij .He let them to strike against the mill owners who had refused to pay them higher wages when the worker seem to be weaken, gandhiji relied them by undertaking a fast, which attracted the attention of entire country afraid of consequences the mill owners gave in on the 4th day in agree to 35% wage hike these initial experience with satyagraha brought gandhiji into close touch with the masses in both rural and urban areas.

### **Requirements of Satyagrah :-**

Satyagraha prescribes certain qualifications to be possessed by a satyagrahi. Satyagraha presupposes self discipline, self control, self purification and a recognized social status in the person offering it.

*The object of Satyagrahi is to convert but not to coerce the wrong doer. A Satyagrahi must not harbor ill will against the evil doer. He will overcome evil by good, anger by love, untruth by truth and himsa by ahimsa. An evil may be converted by the article of faith. Gandhi held that the following qualifications are essential for every Satyagrahi in India :-*

- He must have a living faith in god, for he is his only Rock.
- He must believe in truth and non-violence as his creed and therefore have faith in the inherent goodness of human nature which he expects to evolve by his truth and love expressed through his suffering.
- He must be leading a chaste life and be ready and willing for the sake of his cause to give up his life and his possessions.
- He must be a habitual khadi-weaver and spinner. This is essential for India.
- He must be a teetotaler and be free from the use of other intoxicants in order that his reason may be always unclouded and his mind constant.
- He must carry out with a willing heart all the rules of discipline as may be laid down from time to time.
- He should carry out the jail rules unless they are specially devised to hurt his self-respect (Jolly, Surjit Kaur, 2006:103).

#### **Non violence and gandhiji :-**

The methods of non violence and non corporation were very dear to gandhiji he had the faith in their ability, to make india free.

Feared that acts of violence would be crushed by the government and this would then result in the bloody rule of terror.

Gandhi choose the salt movement to break the unjust salt laws by adopting satyagraha and to spread the freedom movement amongst the people of all classes the long March generated a wave of sympathy and support and received much attention in India and abroad. March finally ended it had spanned 385 kilometres through 40 villages in town called DANDI Yatra.

#### **CONCLUSION :-**

Gandhi gave a serious thought to the theory and made it very dynamic, rationale, scientific positive and universally acceptable under all circumstances to solve all kinds of conflicts. Truth, Non violence faith in the ultimate reality God, brotherhood of man, supremacy of moral law and purity of means constitute the important postulates of Satyagraha. The beauty of Satyagraha is that it does not depend upon physical or brute force as it is always based on moral force—the force of truth and justice, the force of self purification and self suffering, love and service, courage and discipline.

Satyagraha teaches us not only the art of living but dying also. If Satyagraha is adopted, there could be no violence against each other because Gandhi believes in that non-violence is always better and superior to violence. Gandhi strongly believed that change should come first to the individual then it should be introduced in the life of society and its institutions.

**Reference :-**

1. Sharma, Shashi Prabha. Gandhian Holistic Economics. No. 6. Concept Publishing Company, 1992.
2. Chacko, K. C. Metaphysical Implications of Gandhian Thought. Mittal Publications, 1986.
3. Chakrabarty, Bidyut. Social and political thought of Mahatma Gandhi. Routledge, 2006.
4. Dalton, Dennis. Mahatma Gandhi: Nonviolent power in action. Columbia University Press, 2012.
5. Ratana. The Global Vision of Mahatma Gandhi. Sarup & Sons, 2005.



# Role and Vision of Mahatma Gandhi in the Development of Higher Education

Dr. Sushil Kumar Daiya

Assistant Professor, Shree Jain Post Graduate College, Bikaner.

## Abstract :-

Mahatma Gandhi, a towering figure in India's struggle for independence, left an indelible mark on the development of higher education in the country. His role in shaping the vision for higher education was characterized by a deep commitment to values, inclusivity, and relevance. Gandhi believed that education should be a tool for individual and societal transformation, grounded in ethics and driven by the needs of the masses.

This abstract explores the multifaceted contributions of Gandhi to higher education. It highlights his emphasis on moral and ethical values as the cornerstone of educational development. Gandhi envisioned higher education institutions as crucibles for nurturing character, fostering truth, and promoting nonviolence, thereby producing responsible citizens who could lead with integrity. Gandhi's vision extended to inclusivity, as he passionately advocated for education to be accessible to all, regardless of caste, creed, or gender. He worked tirelessly to break down social and gender barriers, promoting educational equality as a fundamental right.

Furthermore, Gandhi's vision for higher education emphasized practical learning and vocational training. He believed that education should be closely aligned with the practical needs of individuals and their communities, promoting self-reliance and sustainable development. The enduring legacy of Gandhi's vision can be seen in the educational policies and practices in India today. His philosophy continues to inspire efforts to improve the quality and accessibility of higher education, with a focus on ethical leadership, inclusivity, and relevance to the real-world challenges facing society.

In sum, this abstract sheds light on the pivotal role played by Mahatma Gandhi in shaping the vision and principles that underpin higher education in India, emphasizing its moral, ethical, and inclusive dimensions. His influence continues to resonate, guiding the nation toward a more equitable, socially responsible, and transformative higher education system.

**Keywords :-** Higher Education, Vision, Ethics, Practical Learning, Vocational Training, Social Equality, Gender Equality, Educational Reform, Nonviolence.

### **Gandhian Vision for Higher Education :-**

Mahatma Gandhi had perspectives in every aspect of life like, socio economic, political and educational scenario. With respect to education, his thoughts carry a holistic view in the sense that he wanted that the people of India to develop an overall personality. He believed that every child had unique characteristics; and wanted that the best should be drawn from within every child. As per his vision, literacy is neither the end nor the beginning, it is only a means through which one can achieve education and there are many other means of acquiring education.

According to him, emphasis should be given to teaching art and craft so that the money collected after that craft can be used to make educational institutions self-reliant. For him, the development of mind and soul is of highest importance. He insisted that students be taught about applicability and practical approaches, and that they should know the why and wherefore of every process. His vision was not superfluous; rather it was based on his experience of teaching sandal making and spinning. His ideologies and vision were revolutionary as he emphasized on practical training of children and enable them to learn things in shorter span than if they are only being taught through books. His vision was also focused on education of rural India. He wanted that rural population of India be given the opportunity to exercise their physical, mental and spiritual power.

### **Basic Education Concept given by Mahatma Gandhi :-**

Mahatma Gandhi had a distinct and influential concept of basic education, which he called "NaiTalim" or "Basic Education for All." Gandhi's ideas on basic education were rooted in his vision of holistic and practical learning that would empower individuals and contribute to the betterment of society.

Mahatma Gandhi's wrote about education in his book Hind Swaraj in year 1916 and explained his views on the education system which was introduced by Britishers in India. Although Gandhi himself acquired education from foreign country, he claimed that he unlearned in order to fulfill his dharma. As per the Gandhian vision, "education is important for the development of individuals as well as society".

He believed that, education should be aimed at the development of individual as a whole rather than just mugging up facts and figures. Also he believed that religion should not be taught in schools rather should only be imparted by religious organizations. He believed that education should be applicative so that people can get jobs which will not only promote progress of the individual but of the society as a whole.

### **Here are the key principles of Gandhi's concept of basic education :-**

- **Holistic Education** : Gandhi believed that education should not be limited to bookish knowledge but should encompass the holistic development of an individual's physical, mental, and moral faculties. He emphasized the importance of character building and the cultivation of moral values alongside academic learning.
- **Learning by Doing** : One of the central tenets of Nai Talim was the principle of "learning by doing." Gandhi advocated that education should be practical and experiential. Students should engage in hands-on activities, crafts, and productive work to acquire skills and knowledge relevant to their daily lives.
- **Manual Labor** : Gandhi believed that manual labor was an integral part of education. He encouraged students to engage in productive activities like farming, weaving, and carpentry, which not only taught practical skills but also instilled a sense of self-reliance and dignity of labor.
- **Self-Sufficiency** : Gandhi's concept of basic education aimed to make individuals self-sufficient and self-reliant. He believed that education should empower people to meet their basic needs and reduce dependence on others.
- **Vernacular Languages** : Gandhi emphasized the use of vernacular languages as the medium of instruction in basic education. He believed that learning should be accessible and relatable to the local context and culture.
- **Inclusivity** : Gandhi's vision of basic education was inclusive, regardless of caste, creed, or gender. He advocated for equal educational opportunities for all, including marginalized and underprivileged groups.
- **Community Engagement** : Nai Talim encouraged students to be actively involved in their local communities. Gandhi believed that education should foster a sense of social responsibility, and students should contribute to the betterment of society.
- **Simplicity and Sustainability** : Gandhi promoted simplicity in education and encouraged the use of local resources. He believed that education should not lead to extravagance but should be sustainable and environmentally responsible.

Gandhi's concept of basic education was a reflection of his broader philosophy of nonviolence, self-reliance, and community-centric development. While Nai Talim was not widely adopted as the primary educational system in India, it has had a lasting influence on discussions about education, particularly in terms of emphasizing experiential learning, moral values, and the integration of productive work into the curriculum.

## **Scenario of Higher Education in India before Independence :-**

Before India gained independence in 1947, the higher education system in the country was marked by several notable features and challenges. India established a dense educational network with a Western curriculum based on instruction in English. To further advance their careers several ambitious upper class men with financial, consisting Gandhi, Nehru and Muhammad Ali Jinnah went to England, especially to get a legal education at the Inns of Court. By 1890 some 60,000 Indians had matriculated, chiefly in the liberal arts/ law. About a third entered public administration, and another third became lawyers.

### **Here is an overview of the scenario of higher education in India before independence :**

- **British Influence :** The higher education system in India during the pre-independence period was heavily influenced by British colonial policies. The British established universities such as the University of Calcutta (established in 1857), the University of Bombay (now the University of Mumbai), and the University of Madras (now the University of Chennai) to provide education primarily to serve the colonial administration.
- **Limited Access :** Access to higher education was restricted and primarily available to a select elite, predominantly from the upper castes and affluent families. This exclusionary approach led to a significant underrepresentation of marginalized communities and women in higher education.
- **Classical Curriculum :** The curriculum in higher education institutions was often centered around a classical British model, emphasizing subjects like literature, philosophy, and the classics. This curriculum was criticized for its lack of relevance to India's socio-economic needs.
- **Sanskrit and Oriental Studies :** While British colonial authorities established universities to promote Western education, they also supported the study of classical Indian languages and texts, leading to the growth of departments focused on Sanskrit and Oriental studies in some universities.
- **Role of Religious and Missionary Institutions :** Many higher education institutions were established by religious organizations and missionaries, contributing to the diversity of educational offerings. These institutions often provided education with a strong religious or denominational influence.
- **Lack of Indigenous Research :** There was a limited emphasis on indigenous research and innovation in higher education. Most research conducted at that time was oriented towards serving British imperial interests.
- **Influence of Nationalist Movements :** The pre-independence period also witnessed the influence of nationalist movements on higher education. Leaders like Mahatma Gandhi and Rabindranath Tagore championed the idea of a more Indian-centric education system that focused on

self-reliance and cultural revival.

- **Struggles for Autonomy** : Several Indian leaders and educational institutions sought greater autonomy and control over the education system to make it more relevant to the country's needs and aspirations. The demand for indigenous universities and educational reforms gained momentum in the early 20th century.
- **Limited Female Participation** : Women's access to higher education was particularly limited, and there were few educational institutions exclusively for women. However, efforts by social reformers and activists like Rukhmabai and Pandita Ramabai began to pave the way for greater female participation in higher education.
- **Influence on Post-Independence Education** : The challenges and aspirations of the pre-independence era had a significant impact on the post-independence education system. After gaining independence, India undertook major educational reforms to expand access, promote research, and address the socio-economic disparities in education.

In summary, the higher education system in India before independence was characterized by limited access, colonial influence, a narrow curriculum, and a lack of emphasis on indigenous research. However, it also saw the emergence of nationalist movements advocating for educational reforms that would shape the direction of higher education in independent India.

#### **Role of Mahatma Gandhi in Development of Higher Education :-**

Mahatma Gandhi played a significant role in the development of higher education in India, primarily through his advocacy for education that was rooted in Indian culture, accessible to all, and aimed at fostering moral and ethical development. Here are some key aspects of Gandhi's contributions to higher education :

- **Emphasis on Rural Education** : Gandhi believed that education should not be limited to urban areas but should reach the rural masses. He promoted the idea of basic education in rural communities to empower villagers with practical skills and knowledge that would improve their lives.
- **Promoted Indigenous Learning** : Gandhi advocated for education that was deeply rooted in Indian culture, traditions, and values. He encouraged the study of Indian languages, literature, and history to help students connect with their cultural heritage.
- **Inclusivity and Social Equality** : Gandhi was a strong advocate for education that transcended caste, class, and gender barriers. He worked towards breaking down societal hierarchies and promoting education for all, regardless of their background.
- **Moral and Ethical Education** : Gandhi believed that education should not only focus on academic knowledge but also on character development. He stressed the importance of moral and

ethical values in education, emphasizing the need for students to become responsible and compassionate individuals.

- **Self-Reliance and Skill Development :** Gandhi's philosophy of self-reliance and Swadeshi (self-sufficiency) extended to education as well. He encouraged practical and vocational training that would equip students with skills to support themselves and their communities.
- **Educational Institutions :** Gandhi was associated with several educational institutions, including the National University of Education in Wardha and the Gujarat Vidyapith, which aimed to promote his educational ideals.
- **Nonviolent Resistance and Education :** Gandhi's philosophy of nonviolent resistance, or Satyagraha, also influenced his approach to education. He believed that education should instill the principles of nonviolence and peaceful coexistence, helping to build a more just and harmonious society.
- **Influence on Education Policy :** Gandhi's ideas and vision for education had a lasting impact on the educational policies of independent India. The principles he championed, such as rural education, inclusivity, and moral development, have influenced the direction of education in the country.

As per above mentioned points we can say, Mahatma Gandhi's role in the development of higher education in India was characterized by his emphasis on education that was culturally rooted, inclusive, morally grounded, and focused on practical skills. His ideas continue to shape the educational landscape in India, and his emphasis on education for social justice and personal development remains relevant today.

#### **Conclusion :-**

Gandhian vision is especially relevant today as education today in India is treated as a business, as more and more students are thronging on the gates of colleges, and returning disappointed. Not all applicants can be accommodated and even if all of them are accommodate there aren't enough job opportunities which only promotes unemployment. Also, finding and identity of Indian education system is the need of the hour. Following Gandhian philosophies although iconoclastic can be the answer to all the problems education system of India currently facing.

#### **References :-**

1. Gandhi. M. K. (1937). Harijan, p. 19.
2. Gandhi M. K. (1961). Constructive Programme. Navjigan Publishing House. New Delhi. India p.18.
3. Gandhi, M.K., (1962). The Story of my Experiments with Truth, Navjiwan Publishing House, Ahmedabad.

4. Gandhi M. K. (n.d.). Towards New Education. Navjigan Publishing House. Ahmedabad. India
5. Pareltank, (2006). Hind Swaraj: Gandhi's Thoughts on Education.
6. Prasad R. S. (2012). Mahatma Gandhi and Education. International Journal of Multidisciplinary Educational Research. Vol.1 Issue 1. pp 263-268.
7. Safaya, R.N., Shaida, B.D., and Shukla, C.S., (2007). Modern Theory and Principles of Education, DhanpatRai Publishing Company, New Delhi.
8. Soni R. B. L. (1998). Mahatma Gandhi: Satyagraha and Basic Education. Navjigan Publishing House. New Delhi. India p.100.
9. Murphy S., (1991) Why Gandhi is Relevant in Modern India: A Western Gandhian's Personal Discovery, Gandhi Peace Foundation, New Delhi; Academy of Gandhian Studies, Hyderabad.
10. Sharma L.P. (2019) Medieval India.



# A study on revolutionary management of Mahatma Gandhi

Mrs. Radhika Sharma

Assistant Professor, Shri Jain P.G. College, Bikaner

## Abstract :-

In this research aimed to present "Mahatma Gandhi", globally accepted as a role model with his traits, meaning and view of about lifestyle, beliefs, way of solving the problems social life. His contribution to business management is remarkable and marvelous for history as well as present era. Gandhiji had amazing knowledge of management and he used to this in his work. He is the politician, the philosopher, the socialist and the strong leader. He classified new dimensions of management that shows its importance in the corporate sector and set a strong place in it. No doubt he has magnetic personality which has a set of traits and skill and outstanding knowledge of management. This written report is a brief description of Gandhi's role of revolutionary transformation in management, activities and apparent motion which possess on new dimensions in modern business management concept. Index Terms- Self Management, Time Management, Wealth Management, Resource Management, Stress Management and Communication.

**Key Words :-** Time Management, Resource Management, Wealth Management, Stress management, Emotional Intelligence, Leadership and Communication.

## Introduction :-

Business leaders across the globe have discovered a new Management icon - Mahatma Gandhi, the Father of the Indian Nation. While leading the nation in the struggle for independence, Gandhi held a beacon to some management strategies which are critical in present day corporate world. The Mahatma is now being rediscovered as more than just a political leader who gained independence for the country. He is being looked upon as a master strategists and an exemplary leader whose ideas and strategies have great meaning for the corporate world, particularly in India.

Mahatma Gandhi was an ideal management guru. Gandhi's concept of Non-violence and his high moral standards are what today's leaders must emulate in order for organisations to have the

advantage in the global market. His concept of a self-ruled society can be compared to a project-orientated organization, where individual, teams are self-governed and highly efficient. Gandhian Concept of Management and Philosophy played an essential role in corporate world.

### **Literature Review :-**

Various books, journal articles, blogs, and posts from the newspapers were studied to develop this paper on “A study on revolutionary management of Mahatma Gandhi”. In his book on '14 Principles to Guide and Inspire Modern Leaders' Alan Axelrod seeks to add a novel dimension to Gandhi's personality. He draws a parallel between Gandhi's qualities and the attributes of a Chief Executive Officer. "There is no doubt that Gandhi was a good man and an intensely spiritual man, but he was also a manager and executive, a supremely practical leader for change management.

### **Objectives of the Study :-**

- Understand the role he played as a manager.
- Understand the role played by Mahatma Gandhi as a leader.
- Co-relate Gandhi's techniques with recent management principles.

### **Revolutionary Management :-**

Mahatma Gandhi displayed managerial and leadership quality in the most numerous trying circumstances. Gandhi heightened management quality in his entire life. Self-Management, Stress-Management, Time Management, Resource Management, Wealth Management, Communication and Emotional Intelligence all of the management disciplines are involved in their work and practice. These are the following.

- **Self- Management** - According to Gandhian self-management – First a manager is a man and then a manager. He must have to learned to knowing itself which had helped him to controlling itself. It is important to understand needs of self- management that a man can have managed himself, only then he will able to control, manage and supervise others. It is subjective classification of management. In Indian business firms, institutions and organization should learn insights of self-management and then other management area that can be termsto perceived and practiced.
- **Time Management** - Mahatma Gandhi was very punctual with esteems to the time and used to keep a dollar watch in his pocket. He used to receive abundantly of letters and post-cards from all spheres of society, which was sent by the children, the artisans and the farmers too, he used to respond all those letters, without delayed. It was such as the effective time management practiced by Mahatma Gandhi. Whenever he saw an injured or ill persons he admitted them in the infirmary, and when he visited hospital to meet them he set beside them, he did not waste his single second of the spare time, and used their futile time in reading books or replying to the pending letters. Mahatma Gandhi never

said to anybody that he is too busy. Whenever people came to meet him for some work or problem, he did not refuse them even he was met to all persons. An open book is the best example of his life. All this occurred due to his powerful and effective time management.

- **Wealth management** - Gandhian philosophy of wealth management is based on Theory of Trusteeship. In this theory According to Gandhi, if a single person had an enough amount of wealth, inheritance, trade and industry, he must know that all that prosperity did not belong to him; what belongs to him was the right to a respectable living, nothing better than that delight by millions of others. The excess of his prosperity belonged to the community and must be utilized for the welfare of the society.

Gandhi wanted the rich to grab their assets and properties as Trustee. Money cannot be made without labor. When labor is organized together, it become more powerful than capital. According to this theory, capitalist and workers, both consider themselves as the trustees on behalf of the society in the entire process of production and distribution. This is an attempt to build up a great structure of equality based on industrialism. In today's corporate world, the concept of Corporate Social Responsibility (CSR) is very essential and lies in the principle of Trusteeship which connects the Corporate Sector to the Social Sector :-

- **Resource Management** - When Indian economy was not as good and most of population sit idle, and youth became unemployed, Gandhi realized that it was a planning of the British to demolish the Indian textile market. It was a purely fait accompli that textile of India had gained ground in Britain and the British agencies were at loss severely so they had also banned the use of Indian textiles. Thus, Gandhi emphasized more on khadi industry because he knew that it can be redeveloped as a small-scale industry and people get maximum employment and no one can sit idle. Gandhi initiated the views of non co-operation and he knew that to make the people adhere to it, he needed to bring them under the swadeshi fold. Gandhi focused on full consumption and maximum utilization of resource without exploitation of labor. Gandhi ji knew the importance of producing good and its results even from limited resources that also a thing which made Gandhi as a successful business leader.

- **Stress Management** - Gandhi ji had a good sense of humor which he used to reduce stress. When he felt disconsolate he read Bhagavad Gita. Gandhi was a karma yogi who tried usually various Niyama, He did yoga asanas, simple pranayama, massage, drinking water through the nose etc. to maintain his body fit and free from diseases and fatigue. Gandhi believed in Dhyana (meditation), samadhi (attainment of the super conscious state), and Dharana (concentration of the mind) its avoid depression and mental exhaustion, attain and maintain physical and mental wellness and relax them.

Yoga enables to discover empowering to the individual physically, mentally and spiritually. Gandhi ji used remedies such as positive thinking, meditation, internal peace and skill of nonviolent

to reduce stress. Today's managers should conduct laughing class, yoga class for employees or Gita path as stress busters.

- **Emotional Intelligence** - Emotional Intelligence defined as the mental ability for recognizing our beliefs and others also, and motivating itself, managing emotions for better in relationships. Mahatma Gandhi was a social star and always focused to excel skills to do well in anything that relies on interacting smoothly with others. He was a charismatic person that has a high intelligence quotient (IQ) and high emotion intelligence (EQ) also, and always manage his emotions or understand other emotions as well, he always motivates himself and others too. He possessed a big sense of handling a relationship. Mahatma Gandhi was a heroic team player to able to create coordination in the effort of people and played a role of negotiator to negotiate the problem and give solutions of complex interpersonal problems. he is being good at giving others feedback that did not make them angry. Emotional intelligence is understood in the persuasion with which one stands by his decisions and owns up accountability.

- **Transformational Leadership** - Gandhi is seen as a transformational leader as he single handedly raised the motivation and morality of his followers during the Indian revolution. Transformational leadership has a moral dimension. He maintained humility at all times and sought to satisfy the needs of his followers first, rather than his needs. Moreover, Gandhi focused on empowering and motivating his followers and stimulated their intelligence. In other words, when Gandhi told his followers to boycott foreign made clothes and instead hand-weave their own clothes, they all obliged without any resistance. Further, the followers gained trust with their leader since he was committed, kept his promises, and satisfied the needs of his followers. As a transformational leader, Mahatma Gandhi influenced and motivated his followers;

- **Communication** - Hindi was not the mother tongue of Mahatma Gandhi. Hindi was not as common language to use then as spoken now. In Central Indian states schools except were not taught Hindi subject. Despite all these barriers, Gandhi could connect across India. He knew how to communicate with the crowd and how to a locally prominent leader ensuring his appearance and create effective and attractive speech. It shows his strength to unify a large number of people and leveraging it for communication for the common reason and objective. During life journey of Gandhi has so many instance, where his management accomplishment came in the front and twisted the situation.

### **Conclusion :-**

Though Gandhi lived many years ago, his leadership principles must be considered in order for organisations today to compete in a global market. His high moral standards are what leaders

today should strive to achieve. His belief in Non Violence is a principle that must be understood by all project managers in order for them to lead a diverse and culturally mixed community. Hierarchical organisations, where managers rule and the worker is just a commodity, are a thing of the past. This highly uneven structure of leadership has many principles in common with the 'caste' system. Organisations must restructure themselves toward a more equal and fair workplace where every worker contributes to the corporate vision. A common value system must exist among the organisation and a clear sense of honesty and trust must permeate throughout. As practical case of Gandhi's social and political transformation ideas implementation in 21st century, the explored Armenian peaceful revolution of 2018 has shown that Gandhi's world perception continues to persist and still gives fruitful results in modern changing societies and developing countries that announced democratization as only proper way of modernization.

- If in a large number of industries or business, men should understand the relevance of trusteeship theory that helps to resolve labour conflict in India.
- The corporate sector should accept and follow the ethics of corporate social responsibility (CSR) and establish the working environment heartiest, comfortable, peaceful, undiscriminating, and moralistic.
- A manager should be in discipline and have control of their emotions. Self-management is an essential part of management.
- Leaders should recruit his team based on production capacity and ability of them and the contribution of their work to achieving organizational goals and objectives, rather than who they are and which culture they adopt.

#### **References :-**

1. Alexander, H. (1984), Gandhi Through Western Eyes - New Society Publishers, Philadelphia, PA (1984) 179
2. Suresh Kr Pramar, "Mahatma Gandhi: The Management Guru", August 17, 2008
3. Dr. Nanduri Aparna Rao, "The Story of My Experiments with Truth", Management minus Jargon, Learning Management & Leadership from the Mahatma.



# Research Paper on Mahatma Gandhi and Basic Education

Dr. Sarika Ranga

Assistant Professor Shree Jain PG College, Bikaner.

## Abstract :-

In this research paper given Gandhi's educational ideals, were thus meant to transform backward, illiterate, exploited, desperately poor peasants into self-confident and self-respecting citizens of a new community and nation. Education was one of the several boards of his larger civilization agenda. In which the independence of India was the main thrust. So in this paper discuss on Mahatma Gandhi's thoughts on basic education & new education policy.

**Keywords :-** Mahatma Gandhi, Basic Education, Nail Talim.

## Introduction :-

Education is the body's response to the mind. Education is the process of acquisition of knowledge, skills, beliefs and moral habits. The main aim of education is to make the people better and to let them develop their own skills and confidence which are needed for their life. It reduces the challenges faced by individuals in their life and helps them to learn how to earn. The more knowledge one gains, the more opportunities open for the individuals to achieve better possibilities in career and in personal growth. It opens the mind for different situations, which help to solve problems of life effectively and to think critically about the world. Mahatma Gandhi was a freedom fighter, social reformer and a well known educationist of India. Gandhi said, "An all-round drawing out of the best in the child and man—body, mind and spirit." So, he emphasized the holistic or all round development of a human being. He not only thought for the spiritual change in man but also given importance on social transformation. Gandhiji's main goal was that education should enhance the comprehensive development of the individual's personality along with some vocational training to meet the economic needs of members of society. Gandhiji believed that every man has an equal right to the necessities of life, but he also has a corresponding duty to do some manual work with his body.

In order to cultivate these new values among the members of the society and satisfy their

economic needs and make them self-sufficient, he emphasized crafts. His educational thought is alive in every part of education. Gandhi prescribed an education scheme known as "Nayi Talim" (Basic Education) in which every child should be educated and trained for the realization of his ethical goal in life and also the goal of a just social order. The present system of education has not been able to give right direction to the youths and it does not provide them affluent opportunities for their all round development to make them self-reliant. Now-a-days the students are passing examinations and earning their degrees with first or higher divisions, but most of them are unable to become self-reliant and incapable to face the challenges. Basic education is the most empowering force in the world which creates knowledge, builds confidence and opens the door of opportunity eliminating all obstacles. For children, it is their key to open the door to a better life. A child gets the first education from his own family, learns from the own environment and gather learning experiences from the school. It is a social process which occurs only in social environment and without it no one can acquire experiences.

Gandhiji repeatedly emphasized that education should offer the child an opportunity for the all-round development of her personality. He said that "true education is that which brings out and stimulates the spiritual, intellectual and physical faculties of children." During his lifetime, he severely criticized the current education system as a useless and pointless exercise for children. The role of basic education is to socialize individuals and to keep society smooth and stable. It teaches a child to observe, understand and realize. It teaches to act decently, to be creative, to develop skills and to learn more things about life so that when the child grows up, he/she uses the basic education to build a better quality of life. Gandhiji has given a scientific argument for the educational system. He says that the goal of education is the development of spiritual character strength. Even today, educational psychologists have identified the teacher as a means of integral development of the individual. He spoke of teaching through the mother tongue. He spoke of harmony between the school and home environment and making education unpaid. All of these are currently in force. Now the government is trying to get all children into school through universal education, which was once Gandhiji's goal.

Gandhiji wanted basic education to be free and compulsory for all boys and girls between the ages of seven and fourteen. According to Gandhiji, "I firmly believe in the principle of free and compulsory primary education for India. According to Gandhiji, education should be free and compulsory for all boys and girls between the ages of 7 and 14. At the primary level, education must be provided in the mother tongue of the student. Free universal primary education should be provided for all children in the village. This will strengthen the backbone of a country.

This concept was implemented in Sarva Shiksha Abhiyan in now days. Gandhiji emphasized the

mother tongue both as a subject of study and as a medium of instruction. This is quite natural and academically sound. Expands the ability to understand and express new concepts in the field of education. It also develops clarity of thought. True education is a lifelong process that helps cultivate the spirit of cooperation, tolerance, collaboration, and a sense of responsibility. All these qualities are necessary for the development of the human personality that can create a nice balance between individuals and the social goal of education. Gandhiji always emphasized collaborative learning. Crafting helps a child gain collaborative learning skills and realize the value of honest work.

Gandhiji thought that peace is essential to human life and can be achieved through education. Peace can only be achieved through morality and ethics. According to him, education should be based on ethics and morals. Gandhiji advised all students to regard morality and honesty as essential parts of his education. Students should be sensitized on merits and demerits of cleanliness and the evils of untouchability. Gandhiji had been opposing untouchables and caste system from very beginning and putting relentless efforts to eradicate. He was arguing that Brahmins and untouchables were equal in his eyes. He was publicly rejecting the notion of high and low caste feeling. At the age of twelve, Gandhiji had disagreed his mother's warnings on not to touch an untouchable who used to clean their latrines in their house. He tried his best to break the centuriesold caste system and to remove the mark of untouchability from Hinduism. Gandhiji described (Prabhu) on his conception on Samagra Gramaseva in Harijan (17-3-1946, p.42) that "I will inculcate in them the importance of hygiene and sanitation, and when they come and ask me for a sweeper, I will tell them: "I will be your sweeper and I will train you all in the job." Students must be sensitized to the merits and demerits of cleanliness and the evils of untouchability.

Gandhiji had opposed untouchability and the caste system from the beginning and had worked tirelessly to eradicate it. He was arguing that the Brahmins and the Untouchables were equal in his eyes. He was publicly rejecting the notion of high and low caste sentiment. At the age of twelve, Gandhiji did not agree with his mother's warnings not to touch an untouchable who used to clean the latrines in his house. He went to great lengths to break the centuries-old caste system and remove the mark of untouchability from Hinduism.

Gandhiji believed that discipline should not be imposed from the outside. There must be self-discipline or an inner drive of the individual to obey the laws and regulations prescribed by the group, community or society. He wanted children to have enough freedom so that they could develop and grow. But they accept that discipline and training will be essential if they want to fully develop their powers. No school can function without discipline. He opposed corporal punishment. This concept is also relevant to the modern educational system.

## **Conclusions :-**

Basic education is related to the basic needs and interest of the education for the development of a child. The aim of Gandhiji's basic education was to educate the students on crafts which would enable them to solve the problems of their livelihood and at the same time develop qualities of good citizenship. In Gandhiji's view, sound education must be rooted through the culture and moral value also. If we look at the current scenario, we all feel that there is a need for this type of education because, if we look around us, we will see many unemployed and underemployed youth moving here and there. Therefore, a filling of dissatisfaction and depression grows in youth. For work, youth have to look to other countries.

For example, in the Punjab state of India, there are about 80% of families whose members work abroad and send money to their families residing in India. So, the government has to take care of education so that it is work-oriented. In the national education policy of 2020, more importance was attached to the vocationalization of education, which we can say that we follow the idea of educational thought of Gandhi.

He was of the opinion that through education we should be able to bring out the best in the child's body, mind and spirit. He further said that literacy in itself is not education. According to him, education should be a kind of insurance against unemployment. For that he focused on crafts and education by industry.

At present various educational committees are emphasizing to make education job oriented and productive for self-employment. With the serious problem of educated unemployment situation among young men and women, the present educational system should be reformed on the spirit of Gandhiji's concept of basic education. Gandhiji's idea of basic education is valid and fruitful which may also be used as guiding principles in the present scenario. The modern education system needs to be reformed at elementary stage keeping in view of the moral value and employability features of the Gandhiji's basic education.

## **References :-**

1. Gandhi M.K. The Voice of Truth. Retrieved on June 18, 2020 from <https://www.mkgandhi.org/ebks/the-voice-of-truth.pdf>
2. Harijan : (1933-1956) English weekly journal founded by Gandhiji and published under the auspices of the Harijan Sevak Sangh, Poona, and from 1942, by the Navajivan Trust, Ahmedabad. The weekly suspended publication in 1940 during the "Individual Satyagraha"; resumed in January 1942, but stopped appearing during the Quit India Struggle. It reappeared in 1946.
3. Maheswari V. K. (2014). The Wardha Scheme of Education in India. Retrieved on June 18, 2020 from

<http://www.vkmaheshwari.com/WP/?p=1402>

4. Prabhu R.K., Rao U.R. (1967). The Mind of Mahatma Gandhi Retrieved on June 20, 2020 from <https://www.mkgandhi.org/ebks/mindofmahatmagandhi.pdf>
5. Shah P. K. (2017). Gandhiji's view on basic education and its present relevance. Pune Research, 3(4), 1-6.
6. Wikipedia. Basic Education. Retrieved on June 20, 2020 from [https://en.wikipedia.org/wiki/Basic\\_education](https://en.wikipedia.org/wiki/Basic_education)
7. Young India: (1919-1932) English weekly journal, published from Bombay as a biweekly, under Gandhiji's supervision from May 7, 1919, and as a weekly from Ahmedabad, with Gandhiji as editor from October 8, 1919.
8. Nai Talim. (2020, July 31). Wikipedia, the free encyclopedia. Retrieved February 11, 2021, from [https://en.wikipedia.org/wiki/Nai\\_Talim](https://en.wikipedia.org/wiki/Nai_Talim).

Email : [sarika.ranga80@gmail.com](mailto:sarika.ranga80@gmail.com)



# गांधी : शिक्षा दर्शन व बुनियादी शिक्षा

डॉ. मुकेश हर्ष

सहायक आचार्य, महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर-334001

## सारांश :-

लेख में गांधी जी के शिक्षा दर्शन के बारे में बताया गया है तथा साथ ही साथ गांधी जी द्वारा वर्धा में स्थापित नई तालीम पद्धति का स्वरूप और वहां की वर्तमान स्थिति एवं शैक्षणिक गतिविधियों का वर्णन किया गया है। इसमें गांधी जी के शैक्षिक दर्शन की दूरदर्शिता पद्धति हाथ मस्तिष्क तथा हृदय के द्वारा बालक के सर्वांगीण विकास का वर्णन किया गया है। इस लेख में यह बताने का प्रयास किया गया है कि वर्तमान समय में शैक्षिक समस्याओं, रोजगार समस्याओं, मूल्यों एवं अनुशासन का उल्लेख किया गया है। यहां सीखने-सिखाने की अन्तःक्रिया शिक्षक एवं शिक्षार्थियों के मध्य लगातार होती रहती है। नयी तालीम विद्यालय आनन्द निकेतन समाज और व्यवहारिक जीवन से जुड़ी है, अन्य विद्यालयों की अपेक्षा पुस्तकीय ज्ञान के साथ ही साथ व्यवहारिक तथा रोजगार परक शिक्षा का पाठ पढ़ाता है। नयी तालीम के विद्यालय की संस्कृति, विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक, बोधात्मक तथा अनुप्रयोगात्मक तीनों प्रकार की शिक्षण प्रक्रियाओं पर आधारित है जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होता है। नयी तालीम के पाठ्यक्रम के अंतर्गत आधारभूत शिल्प, स्थानीय एवं भौगोलिक आवश्यकताओं के अनुकूल शिक्षाप्रद हस्तशिल्प के माध्यम से सिखाया जाता है। गांधी जी की नयी तालीम शिक्षा पद्धति को इस नए समाज की जरूरतों के अनुसार उसे नए तरीके से लागू करने की आवश्यकता है। शिक्षण विधि व्यावहारिक है। शिक्षक एवं शिक्षार्थियों का व्यवहार मित्रवत है। आत्म-नियन्त्रण द्वारा अनुशासन का समर्थन करते हैं। आत्म-अनुशासन पर बल दिया जाता है। प्रस्तुत आलेख में गांधी जी की नयी तालीम शिक्षण पद्धति की पूर्व कल्पना के साथ-साथ वर्तमान समय के साथ उसके स्वरूप विस्तार से वर्णन किया गया है।

**प्रमुख शब्दावली** - नयी तालीम एवं नयी तालीम शिक्षण पद्धति।

## प्रस्तावना :-

महात्मा गांधी दार्शनिक से अधिक व्यावहारिक व्यक्ति थे और उनके जीवन का सबसे बड़ा गुण यह था कि जो आदर्श उनके हृदय में घर कर लेता था, उसे वह व्यावहारिक जीवन में उतारते थे और स्वयं अनुभव प्राप्त कर लेने के बाद ही उसे वे दूसरों के सम्मुख रखते थे।

गांधी के शब्दों में "मैं दूसरों को अपना जीवन दर्शन समझाने में सर्वथा अयोग्य हूँ, मैं तो केवल उस दर्शन को, जिसमें विश्वास रखता हूँ, अभ्यास में लाने की योग्यता रखता हूँ।"

मोहनदास करमचंद गांधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 ई. को काठियावाड़ में पोरबंदर नामक स्थान पर

एक धार्मिक विचारधारा वाले परिवार में हुआ। 1888 ई. में उनको कानून की पढ़ाई के लिए इंग्लैण्ड भेज दिया गया। फिर कानून की पढ़ाई करने के बाद एक गुजराती व्यापारी के मुकदमें की पैरवी करने के लिए दक्षिण अफ्रीका गए, जहाँ उन्होंने सबसे पहले सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह नामक हथियारों का प्रयोग किया। फिर भारत आये और देश के स्वाधीनता संग्राम में जुट गए। 1920 असहयोग, आंदोलन, 1930 सविनय अवज्ञा आन्दोलन और 1942 भारत छोड़ो आंदोलन जैसे बड़े आन्दोलनों का नेतृत्व करने के साथ-साथ कई कार्यक्रमों व गतिविधियों से भारतवासियों को प्रेरित किया, इसीलिए भले ही 30 जनवरी, 1948 को नाथूराम गोडसे ने उनको गोली मारकर उनके लौकिक शरीर का अंत कर दिया हो परन्तु उनके विचारों व आध्यात्मिक चिन्तन को समाप्त नहीं कर पाये।<sup>1</sup> गांधी जी की मृत्यु पर डॉ. स्टेनले जोन्स ने लिखा है, “हत्यारे की गोलियाँ महात्मा गांधी और उनके विचारों का अंत करने के लिए चलाई गई थी परन्तु उनका फल यह हुआ कि वे विचार स्वच्छन्द हो गए और मानव जाति की थाती बन गए। हत्यारे ने महात्मा गांधी की हत्या करके उन्हें अमर बना दिया। मृत्यु में वे अपने जीवन की अपेक्षा अधिक बलशाली हो गए।<sup>2</sup>

गांधी जी ने अपने सिद्धांत का प्रतिपादन प्रमुख रूप से दो पुस्तकों ‘हिन्द स्वराज्य’ तथा अपनी आत्मकथा ‘सत्य के साथ मेरे प्रयोग’ में किया।

### **गांधी : हिन्द स्वराज्य : शिक्षा दर्शन :-**

लंदन से दक्षिण अफ्रीका लौटते हुए गांधी जी ने रास्ते में जो संवाद लिखा ‘हिन्द स्वराज्य’ के नाम से छपाया। दक्षिण अफ्रीका के भारतीय लोगों के अधिकारों की रक्षा के लिए सतत लड़ते हुए गांधी जी 1909 में लंदन गये थे। वहां कई क्रांतिकारी स्वराज्य प्रेमी भारतीय नवयुवक उन्हें मिले, उनसे गांधी जी की जो बातचीत हुई उसी का सार गांधी जी ने एक काल्पनिक संवाद में ग्रंथित किया है। गांधी जी का कहना था कि भारत से केवल अंग्रेजों को और उनके राज्य को हटाने से भारत को अपनी सच्ची सभ्यता का स्वराज्य नहीं मिलेगा। हमें संपूर्ण पश्चिमीकरण के आयामों को त्यागना होगा, यही तथ्य निःसंकोच गांधी जी के हिन्द स्वराज्य में वर्णित किया है। हिन्द स्वराज्य मूलतः गुजराती भाषा में लिखी गई है, जिसका अंग्रेजी अनुवाद स्वयं गांधी जी ने किया।

### **शिक्षा दर्शन :-**

सबसे पहले गांधी जी द्वारा भारतीय जीवन को दृष्टिगत रखते हुए वातावरण के अनुसार ऐसी शिक्षा योजना को प्रस्तुत किया गया जिसको कार्यरूप में परिणत करने में भारतीय समाज में एक नया जीवन आने की संभावना है। गांधीजी भारतीय शिक्षा को ‘द ब्यूटीफुल ट्री’ कहा करते थे। कारण यह था कि गांधी ने भारत की शिक्षा के बारे में जो कुछ पढ़ा था, उससे पाया था कि भारत में शिक्षा सरकारों के बजाय समाज के अधीन थी। शोधकर्त्ताओं ने अंग्रेजी कालीन घटनाओं का जो ऐतिहासिक अन्वेषण कर यह साबित किया कि जिस प्रकार उन लोगों ने न केवल हमारे अर्थशास्त्र और कुटीर उद्योग को समाप्त कर हमारे पूरे अर्थतंत्र को डस लिया, बल्कि भारत का सांस्कृतिक, साहित्यिक व आध्यात्मिक विखंडन भी किया। जिससे भारत अपना अस्तित्व व व्यक्तित्व ही भूल गया और अंग्रेजी शिक्षा से प्रभावित यहाँ के कुछ बड़े घरानों के लोग भारत के भाग्य विधात बन गए।<sup>3</sup>

गांधी जी का मूल मंत्र था—शोषण विहीन समाज की स्थापना करना। उसके लिए सभी को शिक्षित होना चाहिए। गांधी जी ने जो शिक्षा के उद्देश्यों व सिद्धांतों की व्याख्या की व प्रारंभिक शिक्षा योजना उनके शिक्षा दर्शन का मूर्त रूप है। शिक्षा के माध्यम से गांधीजी भारतीयों को स्वावलम्बी बनाना चाहते थे। गांधी जी का शिक्षा दर्शन

जीवन शास्त्र, समाज शास्त्र, मनोविज्ञान व दर्शन पर आधारित है। शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि के लिए आर्थिक व्यवस्था आदि सभी उनके दर्शन पर आधारित है।<sup>4</sup>

### शिक्षा का अर्थ व तालीम :-

शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना है। नयी तालीम या शिक्षा राष्ट्रीय सभ्यता-संस्कृति के नजदीक थी। साथ ही सामुदायिक जीवन के आधारभूत व्यवसायों से जुड़ी हुई थी। शिक्षा हमारे जीवन के आधारों से जुड़ी थी इसलिए इसका नाम नयी तालीम या आधारभूत शिक्षा रखा गया। इसे वर्धा योजना, बेसिक शिक्षा आदि नामों से भी जाना जाता है। इसकी योजना गांधी जी ने 1937 में बनायी जिसे राष्ट्रव्यापी रूप दिया जाना था। यद्यपि प्रारम्भ में इनके विचारों का विरोध हुआ लेकिन बाद में लोगों को समझ आया परन्तु आज भारत पुनः पाश्चात्य साम्राज्यवाद की ओर सरकता जा रहा है।<sup>5</sup> गांधी की शिक्षा का उद्देश्य लोगों को रोजगारपरक बनाना है। स्वावलंबी बनाना है व चरित्र का निर्माण करना है। शिक्षा से ही व्यक्ति का सर्वतोन्मुखी विकास होगा, जिसका अर्थ-बुद्धि, हृदय व शरीर का विकास है।

11 सितम्बर, 1937 के हरिजन में गांधी जी ने कहा था “शिक्षा वह है जो बच्चों की आध्यात्मिक, बौद्धिक व शारीरिक योग्यताओं को प्रेरित व सिकसित करती है। गांधी जी शिक्षा को संस्कृति की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण मानते हैं।<sup>6</sup> उनकी शिक्षा पद्धति के मूलभूत सिद्धांत थे – बेसिक शिक्षा पाठ्यक्रम अवधि 7 वर्ष की है अर्थात् 7 से 14 वर्ष बच्चों को निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा दी जाए, शिक्षा का माध्यम मातृभाषा है, स्वावलम्बन प्रदान करने वाली शिक्षा दी जाए, शिक्षा बालकों के जीवन द्वारा ग्राम व ग्रामीण उद्योगों और हस्तशिल्प से घनिष्ठ रूप से संबंधित हो, बालकों द्वारा बनाई गई वस्तुएँ जिनको बेचकर विद्यालय के ऊपर कुछ व्यय कर सकें, पाँचवीं कक्षा के बाद बच्चों के लिए पृथक् विद्यालय की व्यवस्था हों, शिक्षा क्रम में संस्कृत, वाणिज्य व आधुनिक भारतीय भाषाओं आदि की व्यवस्था है।<sup>7</sup>

अपनी योजना में धर्म को स्थान न देने का कारण बताते हुए गांधी जी ने लिखा है, “हमारी वर्धा शिक्षा योजना में से धार्मिक शिक्षा का बहिष्कार कर दिया गया है, क्योंकि हमें भय है कि आज जिन धर्मों की शिक्षा दी जाती है या पालन किया जाता है वे मेल-मिलाप के स्थान पर विवाद उत्पन्न करते हैं साथ ही मेरा विश्वास है कि बच्चों को ऐसी शिक्षा अवश्य दी जानी चाहिए, जिसमें सभी मुख्य धर्मों का सार निहित हो।<sup>8</sup>

नयी तालीम के विद्यालयों में प्रतिदिन 5 घण्टे कार्य व एक वर्ष में 288 दिन कार्य करने की आशा की जाती है :-

आधारभूत शिल्प	—	3:20 घण्टे
मातृभाषा	—	40 मिनट
संगीत, चित्रकला, गणित	—	40 मिनट
सामाजिक अध्ययन व विज्ञान	—	30 मिनट
शारीरिक शिक्षा	—	10 मिनट
अल्पावकाश	—	10 मिनट

### शिक्षा या बेसिक शिक्षा का पाठ्यक्रम :-

गांधी जी की बेसिक शिक्षा क्रिया-केन्द्रित थी, गांधी जी ने अग्रांकित विषयों का सुझाव दिया-कृषि, सूत

कातना, बुनना, लकड़ी का काम, बागवानी, चमड़े का काम आदि है। गांधी जी इस बात पर बल दिया करते थे कि शिक्षा शिल्प केन्द्रित होनी चाहिए। गांधी जी इस बात पर जोर दिया करते थे कि मातृ-भाषा को स्कूलों में शिक्षा का माध्यम बनाना चाहिए। गणित को जीवन स्थितियों के साथ सम्बद्ध करना चाहिए। गांधी जी कहते थे कि व्यक्तिगत एवं सामाजिक गुणों के विकास के लिए बच्चों को इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र आदि का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। बच्चों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित करने के लिए प्रकृति अध्ययन, जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान आदि का अध्ययन करना चाहिए व लड़कियों के लिए कक्षा 4 व 5 में गृहविज्ञान को शामिल करना चाहिए।

गांधी जी आत्म नियंत्रण द्वारा अनुशासन व शिक्षा का समर्थन करते थे। उनकी अनुशासन संबंधी व्यक्ति नहीं थी। वह शिक्षा द्वारा आदर्श नागरिकों के निर्माण पर जोर देते थे ताकि विद्यार्थी देश के सफल उत्तरदायी नागरिक बनें।<sup>9</sup>

### **शिक्षण विधियाँ :-**

नयी शिक्षा के विद्यालय में शिक्षकों द्वारा चार्ट, विज्ञान खिलौने, मॉडल आदि से विद्यार्थियों को सिखाया जाता है। इसके अलावा गतिविधि आधारित शिक्षा दृश्य-श्रव्य संबंधी विधियाँ, पूर्व ज्ञान, प्रोजेक्ट विधि, प्रश्नावली सीखने-सिखाने की समयोचित कार्यशाला का आयोजन व अन्य उपकरणों का प्रयोग करना चाहिए। उनका विचार था कि 'काम द्वारा सिखाना' तथा आत्म अनुभवों द्वारा सीखाना अत्यन्त प्रभावशाली शिक्षण विधियाँ हैं।

गांधीजी ने समवाया विधि का विशेष समर्थन किया है शिक्षण विधि इतनी व्यावहारिक होती है कि बालक विभिन्न विषयों का ज्ञान एक ही समय में प्राप्त करता है। प्राकृतिक परिस्थिति, सामाजिक परिस्थिति व हस्तकला के माध्यम से अनेक विषयों पर परस्पर संबंध स्थापित किया जाता है। गांधीजी ने प्रयोजनवादी, प्रकृतिवादी होने के नाते इन विधियों का प्रयोग किया है।<sup>10</sup>

### **शिक्षक छात्र अंतः क्रिया :-**

नयी तालीम के विद्यालय में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में कोई विषय पढ़ाते समय, पूर्व ज्ञान की अहमियत बहुत अधिक होती है। पूर्व ज्ञान ही आगे की पढ़ाई को निर्धारित करता है। पूर्व ज्ञान अगर अच्छा हो तो विषय को पढ़ाने में रुचि बढ़ती है। कक्षा कक्ष में पढ़ाने अर्थात् सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में इसका बहुत ही योगदान होता है। पूर्व ज्ञान को जागृत करने से विषयों की समझ बढ़ती है। विद्यार्थी आसानी से सीखते हैं और शिक्षक आसानी से सिखाता भी है। शिक्षक स्वानुशासन पर विश्वास रखते हैं और विद्यार्थियों के साथ अंतःक्रिया करता है। नयी तालीम में शिक्षक में हस्तशिल्प कौशल को इसलिए महत्त्व दिया गया है क्योंकि इससे मन, बुद्धि, शरीर के विकास में मदद मिलती है। पाठ्यक्रमों को आगे बढ़ाने और विद्यार्थियों से अंतःक्रिया करने में सहायता मिलती है। जिससे विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास होता है और भविष्य में जीविकोपार्जन के लिए मददगार साबित होता है। विद्यार्थियों को प्रासंगिकता, व्यावहारिक ज्ञान, मूल्य शिक्षा तथा जीविकोपार्जन के लिए दी जाने वाली हस्तकौशल शिक्षा पर जोर दिया जाता है जो कि वर्तमान में एक चुनौती तो है परन्तु अगर विद्यार्थी इन सभी ज्ञान और शिक्षाओं को ग्रहण करता है तो उसके आगे आने वाले भविष्य एक सुगम रूप से व्यतीत कर सकता है। इसीलिए ही नयी तालीम शिक्षा सक्षम है।

### संदर्भ ग्रंथ :-

1. भारतीय राजनीति विचारक—डॉ. पुखराज जैन, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 2000, पृ. 179—81
2. स्टेनले जोन्स, महात्मा गांधी—एन इन्टरपटेशन, पृ. 52, नई दिल्ली, 1998।
3. एस.पी.सिंह, बदलते परिप्रेक्ष्य में नयी तालिम शिक्षा पद्धति का वर्तमान स्वरूप, भारतीय आधुनिक शिक्षा, (N.C.E.R.T.) वर्ष 39, अंक-1, पृ. 14—20, नई दिल्ली।
4. जे.सी. अग्रवाल, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 1994, पृ.—6।
5. एम.के. गांधी, नयी शिक्षा, अहमदाबाद, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, 1953, पृ. 9—11
6. पी.डी.पाठक—भारतीय शिक्षा का इतिहास, अग्रवाल पब्लिकेशंस, 2013, पृ—306
7. सी.बी.एस.सी., जीवन कौशल शिक्षा (कक्षा—8) केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली, 2005, पृ—16
8. गांधीजी, हिन्द स्वराज्य, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 1949, पृ 69—71।
9. ए. यादव—शिक्षा का वर्तमान परिप्रेक्ष्य एवं नयी तालिम, शिक्षा शास्त्र विभाग, मध्यप्रदेश, 2017, पृ. 16—19
10. आर.एन. शर्मा, शिक्षा सिद्धांत एवं आधुनिक भारतीय समाज में शिक्षा, साहित्य चन्द्रिका प्रकाशन, जयपुर, 2007, पृ.—238—247।
11. एल. साहु, नई शिक्षा पद्धति, मार्च—2016, अंक 5, पेज—83, 85।

निवास : हर्षो का चौक, बीकानेर—334001

डण 9928326515

म.उंपस रू कतण्डीती78/हउंपसण्बवउ



# महात्मा गांधी के राजनीतिक विचारों का आध्यात्मिकरण

पिंकी भाली

सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान, श्रीजैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बीकानेर (राजस्थान)

## सारांश :-

महात्मा गांधी का योगदान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अत्यधिक महत्वपूर्ण था। वह अहिंसा और सत्याग्रह के माध्यम से भारतीयों को आजादी प्राप्त करने के लिए प्रेरित करने वाले महान नेता थे। उन्होंने सत्याग्रह, नमक सत्याग्रह खिलाफत आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन जैसे अनेक महत्वपूर्ण आंदोलनों का नेतृत्व किया। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के साथ-साथ अंतरभूति और सामाजिक न्याय के प्रति भी अपनी समीक्षा भाव को दिखाया और वह भारतीय इतिहास में महान नेता के रूप में प्रसिद्ध है। गांधीवादी दर्शन एक ऐसा दर्शन है जो गांधी द्वारा प्रस्तावित किया गया था और जिसमें राजनीति को महात्मा आध्यात्मिक दृष्टिकोण से देखा जाता है। यह दर्शन गांधी जी के विचारों और आदर्शों का महत्वपूर्ण हिस्सा था और सत्य उनके द्वारा आपकी, आपकी स्वयं की आपकी स्वयं की, की गई गांधीवादी विचारधारा के तहत राजनीतिक और सामाजिक आधार पर कार्यवाही की थी।

## मुख्य शब्द :-

अहिंसा, आध्यात्मिक कारण सत्याग्रह, स्वदेश, सर्वोदय, गांधीवादी विचारधारा, आंदोलन, मानवाधिकार।

## प्रस्तावना :-

गांधी जी का मूल आधार, सत्य व अहिंसा के माध्यम से राजनीति को पुनर्निर्माण करने की है। गांधी जी का मानना था कि अहिंसा और सत्य के पालन से ही शासन को जाना जा सकता है। साथ ही समाज को प्रगति और शांति की दिशा में आगे बढ़ने का माध्यम मिल सकता है। महात्मा गांधी ने राजनीति का आध्यात्मिकरण किया। उनका विश्वास था कि यदि राजनीति को मानव समाज हेतु वरदान होना है, तो उसे उच्चतम नैतिक और आध्यात्मिक सिद्धांतों पर आधारित होना चाहिए। उन्होंने राजनीति को उच्च नैतिक और धार्मिक भावनाओं से ओत-प्रोत किया है। वे धर्म और राजनीति को पृथक नहीं मानते।

## जीवन परिचय :-

महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को पोरबंदर गुजरात में हुआ था। उनका पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था। वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नेता थे और अनशन तथा अहिंसा के सिद्धांतों के प्रसारक भी थे। गांधी जी ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा भारत में पूरी की और फिर इंग्लैंड चले गए, जहां से उन्होंने कानून की पढ़ाई की। वहां से वकालत करने के बाद दक्षिण अफ्रीका में जाकर सत्याग्रह आंदोलन का प्रारंभ

किया उन्होंने वहां नस्लवादी शासन (मूल अफ्रीकी तथा भारतीयों के साथ भेदभाव) के खिलाफ आंदोलन किया। गांधी जी ने भारत लौट कर स्वतंत्रता संग्राम का प्रमुख नेतृत्व किया और अहिंसा, सत्याग्रह खिलाफत आंदोलन जैसे कई आंदोलन के माध्यम से ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ संघर्ष किया। उन्होंने दंड विरोधी के सिद्धांत को अपनाया और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को अहिंसा के माध्यम से अग्रसर किया। गांधी जी के राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले थे। सबसे पहले नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने उन्हें राष्ट्रपिता के नाम से संबोधित किया। वे अहिंसा, सत्य, ईमानदारी, करुणा, दलितों के कल्याण आदि के विचारों में विश्वास रखते थे। 1947 में भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद गांधी जी ने हिंदू मुस्लिम एकता को बढ़ावा दिया गांधी जी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान विभिन्न प्रकार के आंदोलन चलाए जैसे चंपारण सत्याग्रह खिलाफत आंदोलन, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन आदि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन आदि।

### **गांधी जी के राजनीतिक विचारों का आध्यात्मिकरण :-**

राजनीति के वर्तमान और प्रचलित अर्थ को नकारते हुए गांधी जी ने इसे नया रूप दिया। वे राजनीतिक विचारक ना होकर जीवन के कलाकार व धर्म के उपासक थे उनके जीवन का उद्देश्य किसी वाद या सिद्धांत का प्रतिपादन करना नहीं था। बल्कि आत्म दर्शन ईश्वर का साक्षात्कार और प्रेम था। इसलिए गांधी जी ने धर्म को मानव जीवन की कड़ी बनाया और उसे राजनीति के साथ एक अटूट रिश्ते के में जोड़ दिया। गांधी जी ने छलकपट पूर्ण राजनीति की निंदा करते हुए, इसे एक सांप की संज्ञा दी है। उनका मानना था कि धर्म के बिना इस राजनीति का कोई प्रयोजन नहीं है। वे एक महान कर्मयोगी थे। उनका राजनीति का आध्यात्मिकरण करने के पीछे मूल कारण नैतिकता के दोहरे मापदंड को समाप्त करना था। गांधी जी की दृष्टि में राजनीति, धर्म और नैतिकता की एक शाखा थी। इसलिए गांधी जी ने राजनीति में प्रवेश का अर्थ, सत्य और न्याय की प्राप्ति की दिशा में अग्रसर होना माना इसी वजह से गांधी जी ने राजनीति और धर्म को स्वीकार किया। उनके अनुसार आज तक भारत के पिछड़ने का कारण राजनीति से धर्म को अलग रखना ही था। उनका मानना यह भी था कि प्रत्येक आर्थिक सामाजिक व राजनीतिक कार्य किसी न किसी रूप से धर्म के साथ जुड़े हुए हैं। इस प्रकार गांधी जी ने राजनीति व धर्म को एक सिक्के के दो पहलू मानकर, राजनीति का आध्यात्मिकरण किया। गांधी जी की नजरों में धर्म और राजनीति के बीच वही संबंध समझा जाता है, जो शरीर और आत्मा में होता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि गांधी जी ने राजनीति के आध्यात्मिकरण सिद्धांत के तौर पर ही नहीं बल्कि व्यावहारिक स्तर पर भी लागू किया उन्होंने अपने धार्मिक विश्वासों, अद्वैत की कल्पना, सत्य, अपरिग्रहण आदि को राजनीतिक क्षेत्र में लागू करके राजनीति का आध्यात्मिकरण किया है।

### **प्रमुख गांधीवादी राजनीतिक विचारधाराएं :-**

#### **1. सत्य, अहिंसा :**

गांधी जी का दृढ़ विश्वास था कि सत्य और अहिंसा यानी सत्य और अनशन सच्चे सामाजिक परिवर्तन के माध्यम होते हैं। वे यह मानते थे कि सत्य की प्रतिष्ठा और सुरक्षा केवल अहिंसा के माध्यम से ही हो सकती है। गांधी जी ने अहिंसा को एक शक्तिशाली साधन के रूप में प्रमोट किया और इसे सशक्ति का स्रोत माना। वे यह भी समझते थे कि सत्य का पालन करने के लिए कभी-कभी आपको अहिंसा का सहारा लेना पड़ता है लेकिन यह बिना सत्य के संकीर्ण हो जाता है। गांधी जी के अनुसार सत्य और अहिंसा केवल व्यक्तिगत मामलों

से बढ़कर, समाज और राष्ट्र के लिए भी महत्वपूर्ण है। इन्हें अपनाएने से हम सशक्त और सफल समाज बना सकते हैं। गांधी जी ने सत्य को अपने जीवन का मूल्यशील तत्व माना था। उनका प्रसिद्ध नारा था, "सत्याग्रह" जिसमें वह सत्य के लिए संघर्ष करते थे। उनका मानना था कि जहां सत्य है वही ईश्वर व नैतिकता का आधार है। साथ ही गांधी जी ने अहिंसा को प्रेम और उदारता की पराकाष्ठा माना है उनका कहना था कि अहिंसक व्यक्ति किसी दूसरे को कभी मानसिक व शारीरिक पीड़ा नहीं पहुंचता है।

## 2. सत्याग्रह :-

इसका अर्थ है सभी प्रकार के अन्य उत्पीड़न और शोषण के खिलाफ शुद्धतम आत्म बल का प्रयोग करना। यह व्यक्तिगत पीड़ा सहन कर अधिकारों को सुरक्षित करने और दूसरों को चोट न पहुंचने की एक विधि है। गांधी जी ने सत्याग्रह का सबसे महत्वपूर्ण प्रयोग किया। "सत्याग्रह" जिसे सत्य और आग्रह के सहयोग से बनाया गया है। यह गांधी जी का एक जी का गांधी जी का अद्वितीय आंदोलन था। इसका प्रमुख उद्देश्य अत्याचार और अन्यायों के खिलाफ लोगों को जागरूक करना था। सत्याग्रह के दौरान गांधी जी ने अपने अपार आत्म श्रद्धा, निष्ठा और अहिंसा के सिद्धांतों का पालन किया और लोगों को विरोधी प्रशासन के खिलाफ खड़े होने के लिए प्रोत्साहित किया। गांधी जी के सत्याग्रह के प्रयोग का परिणाम स्वतंत्रता संग्राम में था, जिसके परिणाम स्वरूप भारत आजाद हुआ।

## 3. स्वराज्य :-

हालांकि स्वराज शब्द का अर्थ स्वशासन है, लेकिन गांधी जी ने इसे एक ऐसी अभिन क्रांति की संज्ञा दी है जो की जीवन के सभी क्षेत्रों को समाहित करती है। गांधी जी के उनके लिए स्वराज का मतलब व्यक्तियों के स्वराज (स्वशासन) से था और इसलिए उन्होंने स्पष्ट किया कि उनके लिए स्वराज का मतलब अपने देशवासियों के लिए स्वतंत्रता हैं और अपने संपूर्ण अर्थों में स्वराज स्वतंत्रता से कहीं अधिक है, यह स्वशासन है, आत्म संयम है इसे मोक्ष के बराबर माना जाता है।

## 4. स्वदेशी :-

स्वदेशी, राजनीतिक और आर्थिक दोनों तरह से अपने समुदाय के भीतर ध्यान केंद्रित करता है। स्वदेशी के माध्यम से गांधी जी ने लोगों को एक नया दृष्टिकोण प्रदान करने का प्रयास किया। जिसमें सर्व संप्रिती (सर्वोदय) के माध्यम से समाज के हर वर्ग के विकास का समर्थन भी किया था। गांधी जी द्वारा स्वदेशी आंदोलन का आयोजन किया गया और लोगों को स्वदेशी के महत्व के प्रति जागरूक किया गया। वह कहते थे कि स्वदेशी उद्योगों का समर्थन करने से भारतीय लोग आर्थिक रूप से स्वावलंबी बन सकते हैं और विदेशी शासन से मुक्ति पा सकते हैं।

## आज के संदर्भ में गांधीवादी विचारधारा की प्रासंगिकता :-

- सत्य और अहिंसा के आदर्श गांधी जी के संपूर्ण दर्शन को रेखंकित करते हैं तथा यह आज भी मानव जाति के लिए अत्यंत प्रासंगिक है।
- महात्मा गांधी की शिक्षाएं आज और अधिक प्रासंगिक हो गई हैं, जबकि लोग अत्यधिक लालच, व्यापक स्तर पर हिंसा और भाग दौड़ भरी जीवन शैली का समाधान खोजने की कोशिश कर रहे हैं।
- अमेरिका में मार्टिन लूथर किंग, दक्षिण अफ्रीका में नेल्सन मंडेला और म्यांमार में आंग सांग सू की

जैसे लोगों के नेतृत्व में कई उत्पीड़ित समाज के लोगों को न्याय दिलाने हेतु गांधीवादी विचारधारा को सफलतापूर्वक लागू किया गया जो उसकी प्रासंगिकता का प्रत्यक्ष उदाहरण है गांधी जी ने राजनीति को सत्य, अहिंसा पर आधारित करके इसमें उच्च नैतिकता और धार्मिकता की भावना संयोजन मयोजा।

गांधी जी का कहना है कि जो लोग कहते हैं कि धर्म का राजनीति से कोई संबंध नहीं है वह धर्म का अर्थ ही नहीं जानते। गांधी जी के अनुसार धर्म से राजनीति को अलग करना मानवता की हत्या करने के समान है। गांधी जी ने राजनीति के विकृत रूप को मिटाने के लिए राजनीति का आध्यात्मिकरण किया।

#### **निष्कर्ष :-**

गांधी जी ने अपनी राजनीतिक विचारधारा के आध्यात्मिक कारण के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम को एक एक आध्यात्मिक और मौलिक संघर्ष बनाया और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक बड़े आध्यात्मिक दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया। सत्य, अहिंसा, सर्वोदय, सत्याग्रह तथा उनके महत्व से गांधीवादी दर्शन बनता है और येही गांधीवादी विचारधारा के चार आधार भी हैं। गांधीवादी विचारधारा ने ऐसे संस्थानों और कार्य प्रणालियों के निर्माण को आधार दिया, जहां सभी की आवाज और परिपेक्ष को स्पष्ट किया जा सकता है।

#### **संदर्भ ग्रंथ :-**

1. गाबा, ओमप्रकाश, भारतीय राजनीतिक विचारक, मयूर पेपर वेक्स, नोएडा 2019
2. कमल, प्रोफेसर के. एल. भारतीय राजनीतिक चिंतन, राजस्थानी हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2015
3. मेहता, वी. आर. भारतीय राजनीतिक चिंतन के आधार एक व्याख्या (मनु से आज तक) मनोहर, नई दिल्ली, 2017.
4. पुरोहित, बी. आर. आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2010.
5. कृष्णकांत, समाजवादी चिंतन का इतिहास, खंड तीन ग्रंथ शिल्पी, दिल्ली, 2011.



# Gandhi's Views on Caste and Social Equality : A Complex Legacy

Pawan Kumar Rankawat

Assistant Professor, Department of History, MGSU

## Abstract :-

This article explores the complex legacy of Mahatma Gandhi and his evolving views on caste, untouchability, and social equality in the context of India. Gandhi, a pivotal figure in India's struggle for independence, transitioned from a passive participant in the caste system to a staunch advocate for social justice. The article delves into Gandhi's transformation during his time in South Africa, where he witnessed racial discrimination, leading to his commitment to nonviolent resistance and civil disobedience. His return to India marked the beginning of a remarkable journey, where he championed the rights of the marginalized, particularly the "Harijans" (Children of God). Gandhi's involvement in the Poona Pact and his role in securing political representation for the Depressed Classes further exemplify his dedication to social equality. However, his legacy is a subject of ongoing debate, especially concerning the reservation system and the intersection of caste, gender, and other dimensions of social justice. While Gandhi's contributions are undeniably significant, contemporary India grapples with the challenges of reconciling his complex legacy with the evolving nature of these issues.

## Introduction :

Mahatma Gandhi, one of the most iconic figures in the history of India's struggle for independence, was not only a champion of political liberation but also a fervent advocate for social justice and equality. Gandhi's thoughts on caste and untouchability, and his evolving stance on these complex social issues, have left a profound impact on India's socio-political landscape. His legacy continues to be a subject of intense debate and discussion in contemporary India, where questions of caste discrimination and social inequality remain central. This article aims to delve into Gandhi's intricate views on caste and social equality, exploring his journey from traditional beliefs to radical activism, and the implications of his legacy for current debates on these issues.

### **Gandhi's Early Views on Caste :**

Gandhi was born in 1869 into a Gujarati Bania family, a community traditionally engaged in trade and commerce. As a young boy, he was influenced by his family's conservative religious beliefs and the caste system. The caste system, deeply rooted in India for centuries, divided society into rigid hierarchical categories, determining one's occupation, social status, and even personal interactions. This system, which perpetuated discrimination and untouchability against certain lower castes, was an integral part of Gandhi's upbringing.

During his early years, Gandhi accepted and internalized these societal norms and beliefs, as was common in many Indian households at the time. He followed the customs of his caste and observed the distinctions it prescribed. However, Gandhi's life took a transformative turn when he went to South Africa in 1893 to work as a lawyer. It was in this foreign land that he was exposed to a different reality – that of racial discrimination and inequality.

### **The Influence of South Africa :**

Gandhi's experiences in South Africa, where he lived for over two decades, played a pivotal role in shaping his views on social inequality and untouchability. He witnessed firsthand the brutal discrimination faced by the Indian community at the hands of the British colonial rulers and the racially prejudiced white population. In this racially charged atmosphere, the young lawyer began to question the principles of discrimination and inequality he had grown up with in India.

The incident that is often cited as the turning point in Gandhi's life was his ejection from a first-class compartment of a train in South Africa, despite holding a valid ticket. This humiliating experience led him to begin his journey of nonviolent resistance and civil disobedience. Gandhi's campaign for the rights of Indians in South Africa marked the beginning of his long and transformative relationship with the idea of social justice.

Influenced by the teachings of Henry David Thoreau and Leo Tolstoy, Gandhi's ideas on nonviolent resistance, or satyagraha, began to take shape. This philosophy became the foundation of his lifelong struggle for civil rights and social justice. As his movement gained momentum, he started to see the universal applicability of these principles, which led to his commitment to eradicating untouchability and promoting social equality.

### **Championing the Outcasts :**

Upon his return to India in 1915, Gandhi's views on caste had significantly evolved. He had gone from being a passive participant in the caste system to a vocal critic of untouchability and social inequality. His growing influence and leadership in the Indian National Congress allowed him to address these issues on a larger scale.

Gandhi's first major initiative in this direction was the Champaran agitation in 1917, where he led a campaign to improve the living conditions of indigo farmers in Bihar. Here, he was exposed to the harsh realities of caste discrimination, as many of the oppressed indigo workers belonged to lower castes. Gandhi's decision to live among them, adopt their way of life, and fight for their rights marked a significant departure from his own background as a member of a higher caste.

As Gandhi's stature grew, he continued to champion the rights of the marginalized and untouchables. He referred to untouchables as "Harijans," meaning "Children of God," and advocated for their upliftment. His campaign for the welfare of Harijans included efforts to eradicate untouchability, promote inter-caste marriages, and secure political representation for the downtrodden.

### **The Poona Pact and Political Representation :**

One of the most significant moments in Gandhi's advocacy for social justice and caste issues was his role in the Poona Pact of 1932. The British government had announced separate electorates for the "Depressed Classes," which would have further segregated them from the rest of the population. Gandhi feared that this would perpetuate division in society, so he engaged in a fast unto death to protest against the separation of the "Depressed Classes."

The Poona Pact, eventually agreed upon, was a compromise that Gandhi brokered. It allowed reserved seats for the Depressed Classes within the general electorate, ensuring that they would not be entirely segregated. While the Poona Pact can be seen as a victory for Gandhi's commitment to unity, it also marked the beginning of a complex debate over the reservation system, which continues to be a contentious issue in contemporary India.

### **Gandhi's Legacy and Contemporary Debates :**

Gandhi's legacy in the realm of social justice and caste issues remains a topic of intense discussion in present-day India. His efforts to eradicate untouchability and promote social equality were undoubtedly groundbreaking and instrumental in reshaping Indian society. However, they also give rise to several complex and sometimes conflicting perspectives.

**1. Reservation System :** One of the enduring legacies of Gandhi's efforts to uplift the oppressed is the reservation system in India, which is enshrined in the Indian Constitution. Reservations are meant to provide affirmative action and ensure representation for historically disadvantaged groups, including Scheduled Castes, Scheduled Tribes, and Other Backward Classes. While many view this system as essential for addressing historical injustices and promoting social equality, it has also become a point of contention. Critics argue that it perpetuates caste-based divisions and can lead to reverse discrimination.

**2. Caste Identity :** Gandhi's advocacy for the term "Harijans" has had a lasting impact on how

lower-caste communities perceive themselves. While the term was intended to be empowering, it has been criticized by some for being paternalistic and reductive. Contemporary debates often revolve around whether using such labels is a form of positive affirmation or an oversimplification of complex identities.

**3. Gandhian Principles and Their Modern Relevance :** Gandhi's principles of nonviolent resistance and civil disobedience continue to be influential in contemporary movements for social justice, both in India and around the world. His commitment to peaceful protest, coupled with his struggle for social justice, serves as an inspiration for activists advocating for various causes, from environmental protection to LGBTQ+ rights.

**4. Intersectionality :** Gandhi's focus was primarily on caste and untouchability, but contemporary discussions on social justice encompass a wider range of issues, including gender, religion, and economic disparities. There is a growing recognition that these aspects intersect, creating complex webs of privilege and disadvantage.

### **Challenges in Reconciling Gandhi's Legacy :**

While Gandhi's contributions to the fight for social justice and caste equality are undeniable, there are challenges in reconciling his legacy with contemporary perspectives and the evolving nature of these issues.

**1. Gender and Caste :** Gandhi's views on women's rights and gender equality were not as progressive as his stance on caste. He believed in traditional gender roles and, at times, made regressive statements about women. This aspect of his legacy is a point of contention for contemporary feminists and activists who advocate for a more intersectional approach to social justice.

**2. Critique of Gandhi :** Some scholars and activists argue that while Gandhi played a pivotal role in highlighting the issues of untouchability and caste-based discrimination, he was not radical enough. They contend that his efforts were more about reform within the caste system rather than its complete dismantling. Gandhi's decision to work within the existing system, rather than advocating for a complete abolition of caste, has been a subject of debate.

**3. Symbolic vs. Substantive Change :** Gandhi's emphasis on nonviolence and his symbolic gestures, like fasting and spinning, are often seen as powerful tools for raising awareness and inspiring social change. However, some argue that they may have limited the actual progress made in dismantling the caste system and improving the lives of the oppressed. The question remains whether his methods were sufficient to bring about substantive change.

Gandhi's legacy is a complex tapestry of ideals and actions, rooted in a specific historical and cultural context. It is subject to multiple interpretations and debates, which reflect the dynamic and

multifaceted nature of caste issues and social justice in India.

### **Conclusion :**

Gandhi's journey from a young man who accepted the caste system to a fearless advocate for social justice and equality is a testament to the power of personal transformation and moral conviction. His legacy continues to shape the discourse on caste and social justice in India. While there are varying opinions on the extent of his impact and the effectiveness of his methods, there is no denying that Gandhi played a crucial role in highlighting the issues of untouchability and caste discrimination. Contemporary India is still grappling with the complexities of caste, untouchability, and social equality. The legacy of Gandhi remains a touchstone in this ongoing struggle, providing both inspiration and a critical lens through which to examine the evolving nature of these issues. As the nation navigates the intricate terrain of social justice, it is imperative to engage in open and informed dialogues about Gandhi's complex legacy and how it intersects with the challenges of the present day. Ultimately, the journey towards true social equality and the eradication of caste-based discrimination remains an ongoing one, and Gandhi's legacy continues to be an important part of that journey.

### **References :-**

1. "The Gandhi Reader: A Sourcebook of His Life and Writings" edited by Homer A. Jack (Grove Press, 2006)
2. "Gandhi and the Dalits" by A. M. Shah (Popular Prakashan, 2000)
3. "Gandhi and Non-Violence" by William Borman (State University of New York Press, 1986)
4. "Gandhi and the Dalits" by A. M. Shah (Popular Prakashan, 2000)
5. "Caste and Outcast" by Dhananjay Keer (Popular Prakashan, 2006)
6. "Gandhi and His Critics" by B. R. Nanda (Oxford University Press, 1994)
7. "Gandhi's Political Philosophy: A Critical Examination" by Bhikhu Parekh (University of Notre Dame Press, 1989)
8. "The Moral and Political Thought of Mahatma Gandhi" by Raghavan Iyer (Oxford University Press, 1983)
9. "Untouchable Freedom: A Social History of a Dalit Community" by Vijay Prashad (Oxford University Press, 1999)
10. "Reimagining Social Justice: The Legacy of Ambedkar" edited by Gopal Guru and S. Sarukkai (Oxford University Press, 2013)
11. "M.K. Gandhi: An Autobiography or The Story of My Experiments with Truth" by Mahatma Gandhi (Beacon Press, 1993)
12. "Gandhi: The Man, His People, and the Empire" by Rajmohan Gandhi (University of California Press, 2008)
13. "Gandhi: An Iconic Legacy" by Ravi Kumar (Foundation Books, 2001)

14. "B.R. Ambedkar: Writings and Speeches" edited by Vasant Moon (Dr. Ambedkar Foundation, 2014)
15. "Gandhi: The Father of Modern India" by Balraj Krishna (Jaico Publishing House, 2009)
16. "Gandhi: A Life" by Yogesh Chadha (Wiley, 2013)
17. "The Oxford India Gandhi: Essential Writings" edited by Gopalkrishna Gandhi (Oxford University Press, 2005)
18. "Gandhi: In the Mirror of Letters and Diaries" edited by Sushila Nayar (National Book Trust, 1993)
19. "Gandhi and Ambedkar: A Study in Leadership" by A. R. Desai (Publisher: Promilla & Co., 1991)
20. "From Untouchable to Dalit: Essays on the Ambedkar Movement" edited by Eleanor Zelliot and Rohini Mokashi-Punekar (Publisher: Manohar Publishers, 1996)
21. "Dalits and the Democratic Revolution: Dr. Ambedkar and the Dalit Movement in Colonial India" by Gail Omvedt (Publisher: Sage Publications, 1994)
22. "Gandhi: In the Mirror of Letters and Diaries" edited by Sushila Nayar (Publisher: National Book Trust, 1993)
23. "B.R. Ambedkar: Writings and Speeches" edited by Vasant Moon (Publisher: Dr. Ambedkar Foundation, 2014)

pawanrankawat1@gmail.com

## PRINTED MATTER/PRINTING BOOK CLAUSE 121 (A) P & T GUIDE



डॉ. सीमा जैन शिक्षण योग्यता समाजशास्त्र विषय में स्नातकोत्तर होकर 'अविवाहित कामकाजी महिलाओं के समक्ष व्यवसायिक चुनौतियां' विषय पर शोध कार्य कर पीएच.डी. की डिग्री हासिल की। 15-20 राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सेमिनारों में शोध पत्रों का प्रस्तुतीकरण किया। 10-12 राष्ट्रीय एवम अंतरराष्ट्रीय जर्नल में शोध पत्रों का प्रकाशन हो चुका। मानवाधिकारों के संरक्षण विषय पर राष्ट्रीय सेमिनार की निर्देशक रही। तथा 8-9 में सेमिनारों में अध्यक्षता करते हुए तकनीकी सत्रों का संचालन किया। पिछले 15 वर्षों से शिक्षण कार्य में संलग्न है। 6 शोधार्थी महत्वपूर्ण विषयों पर पीएच.डी. डिग्री हेतु निर्देशन में संलग्न है। अन्य कई विश्वविद्यालयों में शोध कार्य में बाहरी परीक्षक के तौर पर निरंतर सेवाओं में संलग्न है। सामाजिक सरोकारों के तहत विद्यार्थी जीवन से ही सक्रिय भागीदारी निभाते हुए अब मानवाधिकारों के संरक्षण और महिला अधिकारों के संरक्षण हेतु अखिल भारतीय जनवादी महिला समिति (Aidwa) राजस्थान राज्य महासचिव के पद पर अपनी सक्रिय भूमिका निभा रही है।

डॉ. कप्तान चन्द सह-आचार्य (विधि)

विधि के क्षेत्र में 2003 से जुड़े हुए हैं। एल.एल.बी., एल.एल.एम. (तीन ब्रांच में) की साथ ही पी.जी.डिप्लोमा इन लेबर लॉ, पी.जी.डिप्लोमा इन फॉरेंसिक साइंस व पी.जी.डिप्लोमा इन साइबर लॉ में किया, यूजीसी नेट की योग्यता भी हासिल की और 'सीमित दायित्व साझेदारी एक वैश्विक रूप (एक विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन)' विषय से शोध कार्य पूरा कर डॉक्टरेट की उपाधि धारण की।

विधि विषय संबंधी एक पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है।

19 वर्षों से विभिन्न क्षेत्रों में जरूरतमंद लोगों को विधिक सहायता सलाहकार के रूप में उपलब्ध कराने के साथ 12 वर्षों से विभिन्न विधि महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में अध्यापन कार्य एवं प्रशासनिक कार्य अनुभव होने के साथ 7 वर्षों से विधि विषय में शोध कार्य करने व अपने पर्यवेक्षण में शोध कराने का अनुभव है। अपने पर्यवेक्षण में 4 शोधार्थियों को डॉक्टरेट उपाधि दिला चुके। 6 शोधार्थी पर्यवेक्षण में शोधकार्य कर रहे हैं।

विभिन्न पत्रिकाओं में 8 शोध पत्र प्रकाशित हो चुके हैं।

विभिन्न विषयों पर सेमिनार के आयोजन किये जिसमें से एक में आयोजन सचिव के रूप में, एक में संयोजक के रूप में व एक में तकनीकी सहायक के रूप में सेवाएं दी व एक सेमिनार में चेयरपर्सन के रूप में स्थान ग्रहण किया।

विधि स्नातकोत्तर में 24 विद्यार्थियों को शोध कार्य करा चुके।

एक पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है।

35 सेमिनार एवं कार्य शालाओं में भाग लिया, जिसमें 28 में पत्र वाचन किया है।

विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं इंस्टीट्यूट में बाह्य परीक्षक के रूप में कार्य कर रहे हैं।

Mob. : 982917989, Email : adv.kaptan@gmail.com



Dr. Satpal Mehara born on 15th March 1989 in a small village of churu district. He has completed M.Com. (EAFM), M.Phil., MBA, M.A. (Economics) and Ph.D. degree in the area of MSMEs. During his education he is also a great sportsman and participate in so many national championsip. Dr. Mehara has been appointed as a lecturer in EAFM, Faculty of Commerce at B.J.S. Rampuria Jain P.G. College, Bikaner and Served for 9 years. During his service period in Rampuria College, he has appointed as Rover Scout Leader. Thereafter, He joined the Shree Jain Post Graduate College, Bikaner.

He has 11 years teaching experience of UG and 7 Year experience PG. He is published about 6 research papers in international and national level conferences and seminars. He participated in 2 international conferences and more than 12 national seminars. He is also conducted a National Seminar as Organising Secretary at Shree Jain P.G. College, Bikaner. He is also appointed as Observer from in many examinations conducted by CBSE.

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक गुणराम सोसायटी रजि. के लिए डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट ने मनभावन प्रिन्टर्स, भिवानी से छपवाकर गीना प्रकाशन, 202, पुराना हार्डसिंग बोर्ड भिवानी-127021 (हरि.) से वितरित की।

ISSN 2395:7115

